जापान की लोक कथाऐं

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Japan Ki Lok Kathayen (Folktales of Japan)
Cover Page picture: Kumano Nachi Taisha Shrine and Nachi Falls, Wakayama Prefecture
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Japan

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जापान की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। इन सब महाद्वीपों में एशिया महाद्वीप को सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते हैं उसके दो देश – जनसंख्या में चीन और क्षेत्रफल में रूस। इसी सबसे बड़े महाद्वीप में इसके सुदूर पूर्व में एक छोटा सा द्वीप है जिसका नाम है जापान जिसमें कुल **6852** द्वीप हैं पर केवल पाँच मुख्य द्वीप हैं।

जापान संसार का ग्यारहवाँ सबसे अधिक जनसंख्या वाला और सबसे अधिक जनसंख्या प्रति वर्ग मील वाले देशों में से एक देश है। यह "रिंग औफ फायर" का एक हिस्सा है। इस देश की औसत आयु सबसे अधिक है।
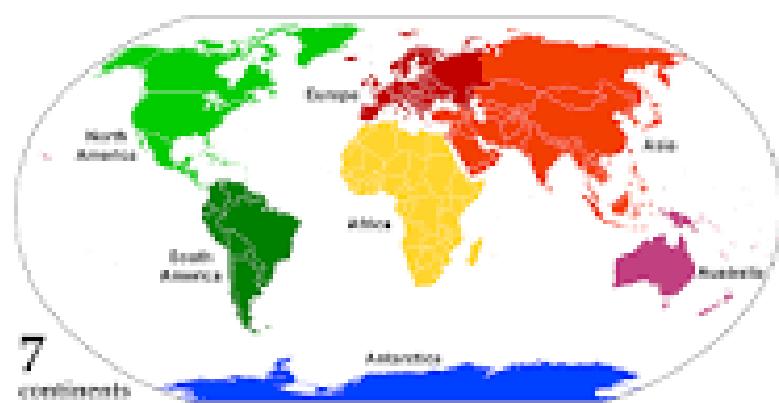
यही वह छोटा सा द्वीप है जिस पर यू ऐस ए ने अगस्त **1945** में ऐटम बम गिराया था। यही वह छोटा सा द्वीप है जहाँ से दुनियाँ का दिन शुरू होता है[1] और यही वह जगह है जहाँ दुनियाँ का दिन समाप्त होता है।

जापान की लोक कथाऐं कुनिओ यानागीटा ने शुरू की थीं। उसका कहना था कि जो कथाऐं उसने एकत्रित की थीं उन्हें लोक कथा की बजाय "पुराने समय की कथाऐं" कहना अधिक उचित होगा। उसने वहाँ की पाँच कथाऐं महत्वपूर्ण बतायी हैं – मोमोटारो, केंकड़ा और बन्दर, जीभ कटी चिड़िया, बूढ़ा जिसने फूल खिलाये और काची काची यामा।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं जापान की। इन कथाओं में कुछ कथाऐं अंग्रेजी में पहले भी प्रकाशित की जा चुकी हैं पर यह इन कथाओं का पहला हिन्दी अनुवाद है जो पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

[1] This country is called "The Land of Rising Sun"

संसार के सात महाद्वीप

1 दो मेंढक[2]

जापान की लोक कथाओं में से ली गयी यह लोक कथा वहॉ की एक बहुत ही प्रसिद्ध लोक कथा है। यह दो मेंढकों की एक बहुत ही मजेदार बेवकूफी की कथा है। तो लो पढ़ो यह कथा हिन्दी में।

एक बार की बात है कि दो मेंढक जापान के दो अलग अलग हिस्सों में रहते थे। एक मेंढक ओसाका शहर के पास समुद्र के किनारे रहता था और दूसरे मेंढक का घर सुन्दर क्योटो शहर के बीच में बहती हुई एक नदी के पास था।

दोनों मेंढकों के घर एक दूसरे के घरों से बहुत दूर थे और वे आपस में कभी मिले भी नहीं थे फिर भी उन दोनों के बीच एक अजीब घटना घटी।

करीब करीब एक ही समय पर दोनों मेंढकों के दिमाग में आया कि उनको दुनियॉ घूमनी चाहिये सो ओसाका वाले मेंढक ने सोचा कि उसको क्योटो देखना चाहिये और क्योटो वाले मेंढक ने सोचा कि उसको ओसाका देखना चाहिये।

सो वसन्त की एक सुहानी सुबह दोनों मेंढकों ने अपना अपना सफर शुरू किया। दोनों मेंढक कूद कूद कर अपना रास्ता पार करने लगे पर दोनों को अपना अपना सफर जितना उन्होंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल लगा।

---

[2] Two Frogs.

उन बेचारों में से किसी को यह भी नहीं मालूम था कि दोनों शहरों के बीच में एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा था। पर दोनों यात्री क्योंकि बहुत ही पक्के इरादे के सफर करने वाले थे सो वे कूद कूद कर चलते रहे, चलते रहे।

ज़रा उनके आश्चर्य के बारे में तो सोचो जब वे दोनों उस पहाड़ की चोटी पर एक साथ पहुँचे और कूदते कूदते एक दूसरे से टकरा गये।

ओसाका वाला मेंढक बोला — "माफ करना भाई, मैं क्योटो जाने की इतनी धुन में था कि मैंने तुमको देखा ही नहीं।"

क्योटो वाला मेंढक बोला — "नहीं नहीं, कोई बात नहीं। गलती मेरी है। मैं भी ओसाका जाने की इतनी धुन में था कि मैंने भी तुमको नहीं देखा और तुमसे टकरा गया।"

जब दोनों मेंढकों ने सुना कि दूसरा मेंढक कहाँ जा रहा था तो दोनों बहुत ज़ोर से हँस पड़े। फिर वे वहाँ थोड़ी देर आराम करने के लिये लेट गये और अपने अपने शहर की बातें करने लगे।

ओसाका वाले मेंढक ने कहा — "यह तो ठीक नहीं है कि तुम बहुत ऊँचे नहीं हो, नहीं तो तुम यहीं से मेरा शहर देख सकते थे।"

क्योटो वाला मेंढक बोला — "तुम्हारे लिये भी यही बात ठीक बैठती है। क्योंकि अगर तुम भी थोड़े और ऊँचे होते तो तुम भी मेरा शहर यहीं से देख सकते थे।"

अचानक फिर दोनों मेंढकों को एक ही विचार आया — "क्यों न हम एक दूसरे को उसके पिछले पैरों पर खड़ा होने में सहायता करें तो फिर हम दोनों खड़े हो कर देख सकते हैं कि हम कहॉ जा रहे हैं।"

सो दोनों मेंढकों ने अपने अपने आगे वाले पैर आगे निकाले और एक दूसरे की टॉगों को छुआ। फिर वे एक दूसरे से कस कर चिपक कर खड़े हो गये ताकि वे गिर न जायें।

ओसाका वाले मेंढक की नाक क्योटो वाले मेंढक की तरफ थी और क्योटो वाले मेंढक की नाक ओसाका वाले मेंढक की तरफ थी।

दोनों ने दूर देखा और एक साथ बोले — "ओह नहीं, तुम्हारा शहर तो बिल्कुल मेरे शहर जैसा ही लगता है।" सो दोनों ने निश्चय किया कि जब दूसरा शहर उनके शहर जैसा ही है तो अब आगे का सफर करना बेकार है।

ओसाका वाला मेंढक बोला — "तो अब क्योटो जाना बेकार है।"

और क्योटो वाला मेंढक बोला — "मेरा भी ओसाका जाना अब बिल्कुल बेकार है।"

वे दोनों एक साथ फिर बोले — "हम दोनों के शहर एक से ही तो हैं फिर हम लोग वहॉ जा कर क्या करेंगे।"

दोनों ने एक दूसरे को गुड बाई की और अपने अपने शहरों की तरफ मुड़ कर चल दिये।

कितनी बुरी बात थी कि दोनों मेंढकों में से किसी भी मेंढक को यह याद नहीं आया कि उनकी ऑखें उनके सिरों के पीछे थीं इसलिये वे अपने सिरों के पीछे ही देख रहे थे।

इस तरह दोनों मेंढक अपने अपने शहर को ही देख रहे थे जहॉ से वे आये थे, जबकि दोनों के शहर आपस में एक दूसरे के शहरों से बहुत दूर थे और बहुत अलग थे। है न मजेदार कथा?

2 मैगा दवा[3]

जापान देश में कही सुनी जाने वाली यह लोक कथा भी इससे पहले वाली लोक कथा की तरह से ही मजेदार और हॅसी की कथा है।

एक बार एक गरीब व्यापारी रात गुजारने के लिये एक सराय में ठहरा। उसने अपना सामान तो एक तरफ रख दिया और सराय के मालिक से खाना बनाने के लिये कहा। सराय के मालिक ने अपनी पत्नी से व्यापारी के लिये खाना बनाने के लिये कहा।

व्यापारी के पास कुछ सामान था और दो सिक्के थे पर सराय के मालिक की लालची पत्नी को यह पता नहीं था कि व्यापारी के पास इससे ज़्यादा और कुछ नहीं था। उसने सोचा कि क्यों न हम इसका यह सारा सामान और सारा पैसा ले लें।

सराय के मालिक की पत्नी उस व्यापारी के लिये रसोई में खाना तो बनाती रही पर उसके दिमाग से यह बात गयी नहीं।

आखिर वह अपने पति से बोली — "यह व्यापारी जो हमारी सराय में ठहरा हुआ है अगर हम उसका सामान ले लें तो कैसा हो?"

पति बोला — यह तो बहुत ही आसान काम है। थोड़ी सी "मैगा" दवा उसके खाने में मिला दो। तुम्हें मालूम ही है कि जो भी वह दवा खा लेता है वह अपना कुछ न कुछ तो यहाँ भूल ही जाता

[3] Mega Herb.

है। और यह व्यापारी अपनी चीज़ें नहीं भूलेगा तो और क्या भूलेगा क्योंकि इसके पास तो और कुछ है ही नहीं भूलने के लिये।”

सराय के मालिक की पत्नी ने यही किया कि उसके खाने में उसने थोड़ी सी मैगा दवा मिला दी। व्यापारी ने खाना खाया, सराय के मालिक को धन्यवाद दिया और सो गया।

अगले दिन वह जल्दी उठा और चला गया। सुबह जब सराय के मालिक की पत्नी की ऑख खुली तो वह सबसे पहले उस व्यापारी के कमरे में यह देखने गयी कि व्यापारी वहॉ पर अपना सामान भूल गया है या नहीं। पर वहॉ तो कमरा खाली पड़ा था।

वह आ कर अपने पति पर झल्लायी — “तुम बहुत ही बेवकूफ हो। तुमने मुझसे क्या बेवकूफी करने के लिये कहा वह तो अपनी एक चीज़ भी भूल कर नहीं गया।”

पति शान्ति से बोला — “क्यों क्या हुआ?”

पत्नी ने उसे बताया कि वह व्यापारी तो सराय छोड़ कर चला गया और उसका कमरा तो खाली पड़ा है।

पति बोला — “अगर वह अपना सामान भूल कर नहीं गया तब यकीनन वह कुछ और भूल कर गया होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि यह दवा काम न करे और वह कुछ भूल कर न जाये।”

पत्नी फिर चिल्लायी — “नहीं वह कुछ भी भूल कर नहीं गया। मुझे तो उसके कमरे में कुछ भी दिखायी नहीं दिया।”

पति बोला — "सोचो तो वह जरूर कुछ न कूछ भूल कर गया होगा, अगर अपना सामान नहीं तो कुछ और।"

अब पत्नी ने सोचना शुरू किया कि अगर वह अपना सामान भूल कर नहीं गया तो फिर वह क्या भूल कर गया है। सोचते सोचते उसे ख्याल आया कि वह सराय का किराया तो दे कर गया ही नहीं।

और एक बार फिर वह अपने पति पर चिल्लायी — "अरे बेवकूफ वह हमारा किराया देना भूल गया।"

3 आलूबुखारे का पेड़[4]

एक बार की बात है कि जापान में मोमोयामा फुशीमी[5] शहर में एक बूढ़ा माली रहता था। उसका नाम था हैम्बी[6]। उसके दयालु स्वभाव और उसकी ईमानदारी के लिये लोग उसकी बहुत इ़ज़्ज़त करते थे।

हालाँकि हैम्बी बहुत गरीब था पर उसके पास रहने और खाने के लिये काफी था। उसको अपने पिता से एक मकान और एक बागीचा विरासत में मिला था सो उससे वह खुश था।

उसके उस बागीचे में एक खास आलूबुखारे का पेड़ था जो उसको बहुत प्यारा था। सो उसका सबसे प्रिय काम था अपने बागीचे में उस खास आलूबुखारे के पेड़ की देखभाल करना। वह पेड़ जापान में फुर्यो[7] के नाम से मशहूर था।

ऐसे पेड़ों की वहाँ बहुत कीमत होती थी खास कर के जब कोई अपना बागीचा सजा रहा होता था।

हालाँकि इस काम के लिये और पहाड़ों और दूसरे टापुओं पर और भी बहुत सारे सुन्दर सुन्दर पेड़ होते थे पर इस पेड़ की अपनी कुछ अलग ही सुन्दरता थी इसलिये लोग ऐसे पेड़ लगाना ज़्यादा

[4] Plum Tree.

[5] Momoyama Fushimi

[6] Hambi – name of the person

[7] Furyo – a special ornamental tree of Japan

पसन्द करते थे। दूसरे वाले पेड़ व्यापारिक इस्तेमाल के लिये ज़्यादा इस्तेमाल होते थे।

जापान के रहने वालों के लिये ऐसे फुर्यो की शक्ल के पेड़ों की बहुत कीमत होती थी चाहे वे आलूबुखारे के पेड़ हों या फिर पाइन के। अगर वे फुर्यो की शक्ल के होते थे तो वे उनको छूते भी नहीं थे।

आलूबुखारे के इस फुर्यो पेड़ के लिये लोगों ने हैम्बी को कई बार बहुत सारे पैसे दे कर खरीदने की कोशिश की पर वह उसको किसी भी तरह बेचने पर राजी नहीं कर सके।

हैम्बी को यह पेड़ उसकी सुन्दरता की वजह से ही प्यारा नहीं था बल्कि वह उसको इसलिये भी प्यारा था क्योंकि वह पेड़ उसके पिता का था, उसके बाबा का था।

और अब जब कि वह और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये थे और उसके बच्चे घर से चले गये थे एक वही उसका साथी था।

नवम्बर दिसम्बर की ठंड में उस पेड़ की सब पत्तियाँ झड़ जातीं। फिर जनवरी में उसमें कलियाँ निकलतीं तो उस समय कुछ ऐसा रिवाज था कि लोग दिन के कुछ घंटे उस पेड़ के नीचे आ कर बैठते और आलूबुखारों की कहानियाँ कहते सुनते।

जब यह सब खत्म हो जाता तो हैम्बी अपने पेड़ की कटायी छँटायी करता और फिर गरमी के दिनों में अपना पाइप पीता हुआ उसी पेड़ के आस पास घूमता रहता।

इस तरह से साल पर साल बीतते गये और राजा का पैसा भी उस पेड़ को न खरीद सका।

पर कभी न कभी कुछ न कुछ तो होना ही था। कोई भी आदमी हमेशा के लिये तो अपनी चीज़ों को लिये हुए बैठा नहीं रहता। एक न एक दिन तो उसको उसे छोड़ना ही पड़ता है।

एक दिन राजा के एक सलाहकार ने हैम्बी के पेड़ के बारे में सुना तो उसको अपने बागीचे में लगाना चाहा। उसने अपने एक नौकर कोटारो नैरूस[8] को उस पेड़ को खरीदने की इच्छा से हैम्बी के पास भेजा।

उसको इस बात का ज़रा भी अन्दाज नहीं था कि वह जितने पैसे हैम्बी को दे रहा था वे उसे कम भी पड़ सकते थे।

कोटारो मोमोयामा फुशीमी आया तो वहाँ उसका रस्मी तौर पर स्वागत हुआ। एक प्याला चाय पीने के बाद कोटारो बोला कि उसको आलूबुखारे का फुर्यो पेड़ राजा के सलाहकार के लिये ले जाने के लिये वहाँ भेजा गया है।

हैम्बी तो यह सुन कर परेशान हो गया। इतने ऊँचे ओहदे वाले आदमी को वह उस पेड़ को न देने का क्या बहाना बनाये यह उस की समझ में ही नहीं आया। सो उसने हकलाते हुए एक बेवकूफी की बात कही जिसका उस अक्लमन्द नौकर ने तुरन्त ही फायदा उठा।

[8] Kotaro Narus

हैम्बी बोला — “नहीं, किसी कीमत पर भी मैं इस पुराने पेड़ को किसी को भी नहीं बेच सकता। मैंने पहले भी कई लोगों को इसको बेचने से मना कर दिया है।”

कोटारो बोला — “मैंने यह नहीं कहा कि मैं पैसे के बदले में इस पेड़ को खरीदने के लिये भेजा गया हूँ। मैं तो यह कह रहा था कि मैं इसलिये भेजा गया हूँ ताकि मैं इस पेड़ को उस सलाहकार के घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचा सकूँ।

वहाँ वह इस पेड़ को रस्मों के साथ लेंगे और इसकी बहुत अच्छे तरीके से देखभाल करेंगे। यह तो ऐसा होगा जैसे कि उनकी पत्नी घर आ रही हो।

और यह तो तुम्हारे लिये और इस आलूबुखारे के पेड़ दोनों के लिये ही बड़े गर्व की बात होगी कि वह शादी के द्वारा इतनी बड़े आदमी से जुड़ेगा। मेरी सलाह मानो तो इस बात के लिये हाँ कर दो।”

अब हैम्बी क्या कहे। वह तो बहुत ही नीचे परिवार में पैदा हुआ था और आज उसको एक बहुत ही ऊँचे परिवार के आदमी को कुछ देने के लिये कहा जा रहा था।

वह बोला — “जनाब आपने मुझसे उन सलाहकार के लिये इतनी नम्रता से कहा है कि मैं उनको ना कर ही नहीं सकता। आप उनसे कह दीजियेगा कि यह पेड़ मेरी तरफ से उनके लिये भेंट है क्योंकि मैं इसको बेच नहीं सकता।”

यह सुन कर कोटारो अपनी कोशिश की सफलता पर बहुत खुश हुआ। उसने अपने कपड़ों में से एक थैली निकाली और हैम्बी को उसे देते हुए बोला — "यह तुम्हारी भेंट के बदले में रस्म के तौर पर एक छोटी सी भेंट है मेहरबानी कर के तुम इसको स्वीकार करो।"

हैम्बी ने देखा तो उस थैली में तो सोना भरा हुआ था। उसने तुरन्त ही वह थैली कोटारो को वापस करते हुए कहा — "यह भेंट मेरे लिये लेना नामुमकिन है।" पर बाद में उस नम्र आदमी के दोबारा कहने पर उसने उस थैली को रख लिया।

पर जैसे ही कोटारो वहाँ से गया हैम्बी पछताने लगा क्योंकि उसको लगा कि जैसे उसने राजा के उस सलाहकार को अपना ही माँस और खून बेच दिया हो या फिर अपनी बेटी ही बेच दी हो। उस शाम वह सो नहीं सका।

आधी रात को उसकी पत्नी उसके कमरे की तरफ दौड़ी गयी और उसकी बाँह खींचते हुए चिल्लायी — "ओ नीच बूढ़े, इस उम्र में भी तुम ऐसे ऐसे काम करते हो?

तुम ज़रा यह तो बताओ तुमको वह लड़की कहाँ से मिली? आज मैंने तुमको पकड़ लिया है। झूठ मत बोलना मुझसे। मुझे कोई आश्चर्य नहीं अगर तुम अपने आपसे इस तरह बदला ले रहे हो तो।"

हैम्बी को लगा कि इस बार तो उसकी पत्नी बिल्कुल ही पागल हो गयी है क्योंकि वह तो किसी लड़की से मिला ही नहीं था। वह बोला — “क्या हो गया है तुमको ओबा सैन? मैं तो किसी लड़की से कभी मिला ही नहीं हूँ। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम कह क्या रही हो?”

वह बोली — “तुम मुझसे झूठ मत बोलो। मैंने उसको देखा है। जब मैं अपने पीने के लिये एक गिलास पानी लेने गयी थी तब मैंने उसको अपनी ऑखों से देखा है।”

हैम्बी बोला — “क्या कहा? देखा है तुमने? तुम कहना क्या चाहती हो? मुझे लगता है कि आज तुम बिल्कुल ही पागल हो गयी हो जो तुमने उस लड़की को देख लिया। किस लड़की को देखा है तुमने?”

उसकी पत्नी बोली — “मैंने उसको घर के बाहर रोते हुए देखा है। बहुत ही सुन्दर लड़की है वह। तुम तो बहुत पुराने पापी हो। वह लड़की तो बस केवल सत्रह अठारह साल की है।”

यह सुन कर हैम्बी अपने बिस्तर से यह देखने के लिये उठा कि उसकी पत्नी सच बोल रही थी या फिर वह वाकई पागल हो गयी है।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसको सिसकने की आवाज आयी और जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो उसने भी एक सुन्दर सी

लड़की को देखा। उसको सन्तोष की साँस आयी कि कम से कम उसकी पत्नी पागल नहीं हुई थी

हैम्बी ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

वह लड़की बोली — "मैं उस आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा हूँ जिसकी तुम बरसों से देखभाल करते चले आ रहे हो, और तुम्हारे पिता भी। मैंने सब सुन लिया है और मुझे दुख भी बहुत है कि मुझे उस सलाहकार के घर के बागीचे में भेजा जा रहा है।

किसी अच्छे परिवार के साथ जुड़ना अच्छा तो लगता है और इज़्ज़त की बात भी है। मैं शिकायत तो नहीं कर सकती पर क्योंकि मैं यहाँ तुम्हारे पास इतने दिनों तक रही हूँ और तुमने मेरी इतने अच्छे से देखभाल की है इसलिये मुझे यहाँ से जाने में अच्छा नहीं लग रहा है।

क्या तुम मुझे यहाँ कुछ और समय के लिये नहीं रख सकते? जितने दिन भी मैं रहूँ।"

हैम्बी बोला — "हालाँकि मैंने तुमको उस सलाहकार के घर क्योटो अगले शनिवार को यहाँ से भेजने का वायदा किया है पर फिर भी मैं तुम्हारी प्रार्थना को ठुकरा नहीं सकता क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ मेरे पास ही रहो। तुम शान्ति से रहो मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा ने अपने ऑसू पोंछे और हैम्बी की तरफ देख कर मुस्कुरायी और फिर उस आलूबुखारे के पेड़ के तने में जा कर गायब हो गयी।

हैम्बी की पत्नी यह सब आश्चर्य से खड़ी खड़ी देख रही थी। उसको यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके पति की यह कोई चाल नहीं थी।

आखिर वह दुखदायी शनिवार भी आ ही पहुँचा जब उस पेड़ को वहॉ से जाना था। कोटारो वहॉ बहुत सारे आदमियों के साथ एक गाड़ी ले कर आया था।

हैम्बी ने कोटारो को बताया कि उसके जाने के बाद क्या हुआ था। कैसे उस पेड़ की आत्मा आयी थी और उससे क्या कह रही थी। फिर उसने उससे प्रार्थना की कि वह सलाहकार के घर जाना नही चाहती थी।

हैम्बी ने उसको उसका पैसा वापस करते हुए कहा — "मेहरबानी कर के यह कहानी जो मैंने तुमसे कही है उस सलाहकार को बता देना। मुझे पूरा विश्वास है कि वह हम पर दया जरूर करेंगे।"

यह सुन कर कोटारो गुस्सा हो गया। उसने पूछा — "पर यह बदलाव आया कैसे? क्या तुमने पी रखी है या फिर तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो? तुमको बात करते समय सावधान रहना

चाहिये। नहीं तो मैं तुमको बता रहा हूँ कि तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।

अगर हम यह मान भी लें कि उस पेड़ की आत्मा तुम्हारे सामने एक लड़की के रूप में प्रगट हुई थी तो क्या उसने यह भी कहा था कि उसको यह जगह छोड़ कर उस सलाहकार के घर जाने में उसे दुख होगा?

तुम बेवकूफ हो, किसी का अपमान करने वाले ओ बेवकूफ। सलाहकार की भेंट वापस करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं उनको इस अपमान की सफाई कैसे दूँगा? और फिर वह मेरे बारे में भी क्या सोचेंगे?

क्योंकि तुम अपना वायदा पूरा नहीं कर रहे हो तो या तो मैं तुम्हारे पेड़ को जबरदस्ती ले जाऊँगा और या फिर उसके बदले में मैं तुमको मार दूँगा।"

कोटारो का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। गुस्से में आ कर उसने हैम्बी को ठोकर मारी तो वह सीढ़ी से नीचे गिर पड़ा।

फिर उसने अपनी तलवार खींचते हुए उसको मारना चाहा कि आलूबुखारे के फूलों की खुशबू का एक झोंका आया और एक बहुत सुन्दर लड़की कोटारो के सामने आ कर खड़ी हो गयी – आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा।

उसको देख कर कोटारो चिल्लाया — "मेरे रास्ते से हट जाओ वरना मैं तुमको मार दूँगा।"

वह लड़की बोली — "नहीं, मैं नहीं हटूँगी। इस बेकुसूर आदमी को मारने की बजाय तो अच्छा है कि तुम मुझे मार दो – उस आत्मा को मार दो जिसकी वजह से तुमको इतनी परेशानी उठानी पड़ रही है।"

कोटारो बोला — "हालाँकि मुझे आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा में कोई विश्वास नहीं है पर फिर भी तुम उसकी आत्मा हो यह तो मुझे साफ नजर आ रहा है।

पर फिर भी क्योंकि तुम उस पुराने पेड़ की आत्मा हो इसलिये मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ और मैं तुमको सबसे पहले मारूँगा।"

उसने यह कहने के साथ ही अपनी तलवार से कुछ काटा और उसको लगा भी कि उसकी तलवार ने सचमुच ही किसी शरीर को काटा। इससे वह लड़की तो गायब हो गयी पर उसकी तलवार आलूबुखारे के पेड़ की एक शाख गिर पड़ी जिस पर फूल खिले हुए थे।

अब कोटारो की समझ में आया कि वह माली जो कुछ कह रहा था वह सच था सो उसने उससे माफी माँगी। इस तरह आलूबुखारे की पेड़ की आत्मा ने उस माली की जान बचायी।

कोटारो बोला — "मैं इस पेड़ की यह कटी शाख लिये जा रहा हूँ और देखता हूँ कि मैं उस सलाहकार को यह कहानी सुना पाता हूँ या नहीं। और वह इस कहानी पर विश्वास कर पाता है कि नहीं।"

कोटारो उस शाख को ले कर चला गया और जा कर उस सलाहकार को वह कहानी सुनायी तो वह सलाहकार भी उसको सुन कर रो पड़ा।

उसने उस माली को एक बहुत ही प्यार भरा सन्देश भिजवाया और उसको वह पेड़ और वह पैसे जो उसने पेड़ लेने के बदले में भिजवाये थे वे भी उसको अपने पास रखने की इजाज़त दे दी।

हालाँकि कोटारो की तलवार के वार से आलूबुखारे का वह पेड़ धीरे धीरे मुरझा गया और हैम्बी की देखभाल के बावजूद फिर मर भी गया पर उसके तने का टुकड़ा अभी भी वहाँ मौजूद है।

4 बेवकूफ बन्दर और केंकड़ा[9]

बहुत समय पुरानी बात है कि जापान की किसी दूर जगह में रेत के एक ढेर के किनारे एक केंकड़ा रहता था।

एक दिन एक बन्दर वहॉ से आलूबुखारे का एक बीज लिये हुए गुजरा। उसने देखा कि एक केंकड़ा अपने घर के पास धूप में बैठा चावल खा रहा है।

बन्दर ने सोचा कि यह कोई ज़्यादा मजेदार खाना होगा सो उसने केंकड़े से खाने के लिये वह चावल मॉगा। बन्दर ने केंकड़े से यह भी कहा कि वह उस चावल के बदले में अपना आलूबुखारे का बीज उसको दे देगा।

केंकड़ा राजी हो गया। उसने अपना चावल बन्दर को दे दिया और उससे उसका आलूबुखारे का बीज ले लिया।

अब केंकड़े ने सोचा कि उस आलूबुखारे के बीज को बो दिया जाये। सो उसने वह बीज बो दिया और कुछ ही दिनों में उस बीज में से एक छोटा सा पौधा ऊपर निकल आया।

केंकड़ा उस पौधे की बड़ी देखभाल करता। उसको रोज पानी देता। उसको जंगली जानवरों से बचाता। जल्दी ही वह पौधा बड़ा हो गया और उसने फल भी देना शुरू कर दिया।

[9] The Foolish Monkey and the Crab.

काफी दिनों बाद बन्दर एक बार फिर केंकड़े से मिलने आया। केंकड़े के आलूबुखारे के पेड़ को देख कर बन्दर बहुत खुश हुआ और उसके फल तो उसे बहुत ही अच्छे लगे। उसके फल देख कर उसके मुँह में पानी भर आया सो उसने केंकड़े से कुछ आलूबुखारे माँगे।

केंकड़ा बोला — "एक शर्त पर। मैं बहुत छोटा हूँ और फल तोड़ने के लिये ऊपर तक नहीं जा सकता। तुम ऊपर चढ़ जाओ तो जितने फल तुम पेड़ पर से तोड़ोगे उनमें से आधे तुम्हारे और आधे मेरे।" बन्दर राजी हो गया।

बन्दर तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उस पर से पके पके फल तोड़ने लगा। नीचे खड़ा केंकड़ा ऊपर की तरफ देखता रहा कि कब बन्दर फल तोड़ कर नीचे फेंकेगा और कब वह उन मीठे फलों को चखेगा।

पर बन्दर बहुत ही चालाक था उसने बहुत सारे फल तोड़ कर अपने कोट की जेब में भर लिये और जो फल बहुत रसीले थे उनको उसने अपने मुँह में ठूँस लिये।

कुछ कच्चे और हरे फल उसने तोड़ कर केंकड़े की तरफ फेंक दिये। और वे फल भी उसने इतने ज़ोर से फेंके कि केंकड़े बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

केंकड़े को यह सब देख कर बहुत ही बुरा लगा कि बन्दर ने उसको इस तरह धोखा दिया। उसने अपने आप तो फल खा लिये

और उसको कच्चे कच्चे फल तोड़ कर फेंक दिये और वे भी इतने ज़ोर से फेंके कि उस बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

वह पहले तो बेचारा लाचार सा देखता रहा फिर उसके दिमाग में एक बात आयी।

वह बन्दर से बोला — "तुम समझते हो कि तुम बहुत होशियार और चालाक हो पर मुझे लगता है कि तुम पेड़ से सिर नीचा कर के नहीं उतर सकते।"

बन्दर ने कभी किसी शर्त को मना नहीं किया था और न ही वह अब यह सब शुरू करना चाहता था सो वह घमंड से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम आज केवल भूखे ही नहीं रहोगे बल्कि अपनी शर्त भी हार जाओगे।"

कह कर बन्दर ने सिर नीचे कर के पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। केंकड़ा तो यह चाहता ही था कि बन्दर इस तरह से पेड़ पर से नीचे उतरे।

क्योंकि जैसे ही बन्दर ने उलटे उतरना शुरू किया तो उसकी कोट की जेबों में से सारे फल नीचे गिर पड़े और जमीन पर बिखर गये। केंकड़े ने सारे फल समेट लिये और अपने घर में घुस गया।

अबकी बार बन्दर की बारी थी। उसने जब यह देखा कि केंकड़े जैसे बेवकूफ जानवर ने उसे बेवकूफ बना दिया तो उसे बहुत गुस्सा आया।

वह उस रेत के ढेर के पास पहुँचा जहाँ केंकड़ा रहता था और उस केंकड़े के घर के सामने इस तरह आग जला दी कि उस आग का सारा धुँआ केंकड़े के घर के अन्दर जाने लगा।

आखिर केंकड़ा खाँसता हुआ अपने घर में से बाहर निकला पर बन्दर अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने केंकड़े को घूँसे मारे, लात मारी और उसको अधमरा सा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

वह केंकड़ा अपनी घायल और अधमरी हालत में बहुत देर तक वहीं पड़ा रहा। कमजोरी की वजह से वह बेचारा हिल डुल भी नहीं सका और न ही किसी को पुकार सका।

थोड़ी ही देर में उसने किसी के पैरों की आवाज सुनी। उसने देखा कि तीन यात्री चले आ रहे थे – एक अंडा, एक मधुमक्खी और एक चावल कूटने वाली ओखली।

वे उस रेत के ढेर के पास से गुजर रहे थे कि उन्होंने केंकड़े को बहुत बुरी हालत में पड़े देखा। उसको देख कर वे सब सकते में आ गये।

उन्होंने दया कर के उसको उठा लिया और उसको उस रेत के ढेर के अन्दर उसके घर में ले गये। वहाँ उन्होंने उसके घावों पर मरहम लगाया और उसको उसके बिस्तर पर लिटा दिया।

बाद में केंकड़े ने उनको सारा हाल बताया। उसका हाल सुन कर तीनों यात्री बहुत गुस्सा हुए। यह सब सुन कर उन सबने मिल

कर यह सोचना शुरू किया कि उस चालाक बन्दर से कैसे बदला लिया जाये।

केंकड़ा अभी ठीक नहीं था सो वह तो आराम कर रहा था तब तक तीनों यात्रियों ने कई प्याले हरी चाय पी। चाय पीते पीते उन्होंने बन्दर से बदला लेने की एक योजना भी सोच ली।

अगले दिन उन्होंने खूब अच्छी तरह आराम किया और फिर उस घायल केंकड़े को उठा कर वे उसे उस किले में ले गये जहॉ वह बन्दर रहता था।

वहॉ जा कर मधुमक्खी खिड़की के ऊपर तक उड़ी और लौट कर आ कर सबको बताया कि उनका दुश्मन घर पर नहीं था। यह उनकी योजना के अनुसार बिल्कुल ठीक था।

वे सब किले के अन्दर घुस गये और छिप कर अपने दुश्मन के आने का इन्तजार करने लगे।

अंडे ने भट्टी की राख में अपना घर बना लिया था और अपने आपको कालिख से पूरी तरह से ढक लिया था जिससे वह बिल्कुल काला हो गया था और किसी को पहचान में नहीं आ सकता था।

मधुमक्खी नहाने वाले कमरे में चली गयी और वहॉ एक अलमारी में छिप कर बन्दर का इन्तजार करने लगी। चावल कूटने वाली ओखली किले के बड़े से लकड़ी के दरवाजे के पीछे छिप गयी। और केंकड़ा बन्दर का स्वागत करने के लिये आग के पास बैठ गया।

जब अँधेरा हो आया तो बन्दर घर वापस लौटा। उसने केटली में पानी भरा और चाय बनाने के लिये भट्टी में आग जलायी।

वह वहीं पास में बैठ गया और केंकड़े से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम सचमुच ही बेवकूफ लगते हो। क्या तुम कोई दूसरी शर्त लगाने यहाँ आये हो? क्या तुम मेरी जीत इतनी जल्दी भूल गये?"

इसी समय आग में बैठा हुआ अंडा फूट गया और उसका सारा पीला हिस्सा बन्दर के मुँह पर फैल गया। वह उसकी आँखों में भी चला गया इससे वह करीब करीब अन्धा सा हो गया।

तुरन्त भाग कर वह नहाने वाले कमरे में अपना मुँह धोने गया तो अलमारी में छिपी मधुमक्खी ने बाहर निकल कर उसकी नाक पर कई बार काट लिया। मधुमक्खी के काटने से बन्दर को बहुत दर्द हुआ और इस सबसे वह बहुत परेशान हुआ।

वह समझ गया कि वह दुश्मनों से घिर गया है सो वह घर से बाहर निकल भागने के लिये किले के बाहर वाले दरवाजे की तरफ भागा। मधुमक्खी उसको फिर से काटने के लिये उसके पीछे भागी।

जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा तो चावल कूटने वाली ओखली दरवाजे के पीछे से निकल आयी और उसके पीछे दौड़ती हुई और उसको पीटती हुई बाहर तक खदेड़ आयी।

बन्दर उसको देख कर डर के मारे वहाँ से दूर भाग गया।

वहाॅ ऐसा कोई और नहीं था जो बन्दर की सहायता करता और अगर होता भी तो भी कोई उसकी सहायता करता नहीं क्योंकि सब जानते कि वह कितना नीच और चालाक था। इस तरह वह बन्दर कई सालों तक अपने घर के बाहर ही घूमता रहा।

केंकड़े ने अपने साथियों के साथ खूब खुशियाॅ मनायीं और उसके बाद वे सब बहुत अच्छे दोस्त बन गये और सब बन्दर वाले किले में एक साथ ही रहने लगे। कुछ समय में केंकड़े के सब घाव भर गये और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

पास की जगह में एक अमीर केंकड़ा रहता था। जब उस अमीर केंकड़े ने इस केंकड़े की बहादुरी की कहानी सुनी तो उसने अपनी बेटी की शादी उस केकड़े से कर दी। केंकड़े की शादी वाले दिन बहुत सारे मीठे मीठे आलूबुखारे मेहमानों को खिलाये गये।

कुछ समय बाद उनके घर एक छोटा केंकड़ा पैदा हुआ जो चावल कूटने वाली ओखली के साथ खूब खेलता था। इस तरह वे सब वहाॅ बहुत दिनों तक बहुत आनन्द से रहे।

5 मोमोटारो या खूबानी का बच्चा[10]

यह लोक कथा जापान देश की शायद सबसे अधिक लोकप्रिय मशहूर और पुरानी लोक कथा है। यहाँ तक कि इसे छोटे बच्चों को स्कूल में भी पढ़ाया जाता है।

बहुत दिनों पुरानी बात है कि जापान देश में एक जगह एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। एक दिन वह बूढ़ा पहाड़ों पर घास काटने गया और वह बुढ़िया नदी पर कपड़े धोने गयी।

जब वह बुढ़िया कपड़े धो रही थी कि नदी में उछलती कूदती एक बहुत बड़ी सी कोई चीज़ आयी। जब बुढ़िया ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई। उसने पास पड़ा एक बाँस का टुकड़ा उठाया और उससे उसे अपने पास खींच लिया।

जब उसने उसे उठाया तो देखा कि वह तो एक बहुत बड़ी खूबानी थी। उसने जल्दी जल्दी अपने कपड़े धोये और वह खूबानी ले कर घर लौटी ताकि वह अपने बूढ़े को उसे खाने के लिये दे सके।

घर आ कर जब उसने वह खूबानी काटी तो उसमें से एक बच्चा निकला। उस बच्चे को देख कर वे दोनों बूढ़े लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने उसका नाम मोमोटारो रख दिया। मोमोटारो मानी छोटी खूबानी क्योंकि वह बड़ी खूबानी में से निकला था।

[10] Momotaro or Little Peachling.

दोनों बूढ़े लोग उसको बहुत प्यार से पालने लगे। बड़ा हो कर वह बहुत ताकतवर, मजबूत और साहसी आदमी बना। उसको देख कर बूढ़े माता पिता को उससे बहुत सी उम्मीदें लग गयीं सो उन्होंने उसकी पढ़ाई पर और ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया।

जब मोमोटारो ने देखा कि वह तो अब बहुत ताकतवर हो गया है तो उसने शैतानों के टापू से उनका बहुत सारा खजाना घर लाने की सोची। उसने अपने बूढ़े माता पिता से सलाह ली तो उन्होंने भी उसकी ताकत को देखते हुए खुशी खुशी उसको वहॉ जाने की इजाज़त दे दी।

मोमोटारो ने अपनी मॉ से अपने लिये कुछ खाना बनाने को कहा तो उसकी मॉ ने उसके लिये बाजरे के पकौड़े बना दिये। वह पकौड़े उसने अपने थैले में रखे और शैतानों के टापू पर जाने के लिये उसने और भी बहुत सारी तैयारियॉ की और चल दिया।

रास्ते में सबसे पहले उसे एक कुत्ता मिला। उसने मोमोटारो से पूछा — "मोमोटारो, यह तुम्हारी कमर की पेटी में क्या बॅधा है?"

मोमोटारो बोला — "इसमें मेरे पास बाजरे के बहुत ही बढ़िया जापानी पकौड़े है।"

कुत्ता बोला — "थोड़ा से मुझे भी दो तो मैं तुम्हारे साथ चलॅूगा।" मोमोटारो ने कुछ पकौड़े अपने थैले में से निकाल कर उस कुत्ते को दिये और वह पकौड़े खा कर कुत्ता मोमोटारो के साथ चल दिया।

आगे चल कर उनको एक बन्दर मिला। मोमोटारो ने उसे भी बाजरे के कुछ पकौड़े दिये और वह भी उन दोनों के साथ चल दिया। इस तरह अब तीनों शैतानों के टापू पर चल दिये।

आगे चल कर उनको एक चिड़िया मिली। उसने भी मोमोटारो से पूछा कि वह अपनी कमर में क्या बॉध कर ले जा रहा था।

जब मोमोटारो ने उसे बताया कि वह बाजरे से बने बहुत ही बढ़िया जापानी पकौड़े ले जा रहा था तो उसने भी मोमोटारो से थोड़े से पकौड़े मॉगे और उसके साथ चलने की प्रार्थना की।

सो मोमोटारो ने उसको भी थोड़ा सा खाना दिया और अपने साथ ले लिया। अब चारों शैतानों के टापू की तरफ बढ़े।

बहुत जल्दी ही चारों शैतानों के टापू पर आ पहुॅचे और सब एक साथ दरवाजा तोड़ते हुए टापू में घुसे। मगर सबसे आगे मोमोटारो था और उसके पीछे उसके तीनों साथी।

शैतानों के टापू पर उन्हें बहुत सारे शैतान मिले और वे सब मोमोटारो से लड़ने के लिये तैयार थे फिर भी मोमोटारो बिना लड़ाई के ही टापू में अन्दर घुसता चला गया।

आखीर में वह शैतानों के सरदार अकान्डोजी[11] के पास आ पहुॅचा। वहॉ मोमोटारो की लड़ाई अकान्डोजी से शुरू हुई। अकान्डोजी ने मोमोटारो को एक लोहे के डंडे से मारा पर मोमोटारो

[11] Akandoji – Chief of Satans

पहले से ही तैयार था। वह कुछ नीचे झुक कर अकान्डोजी का वार बचा गया।

आखीर में दोनों ने एक दूसरे को पकड़ लिया और मोमोटारो ने बड़ी आसानी से उसे नीचे गिरा कर रस्सी से बाँध दिया ताकि वह हिल भी न सके। और यह सब उसने बिना किसी चालबाजी के किया।

इसके बाद तो अकान्डोजी ने मोमोटारो से कह ही दिया कि वह उसको अपना सारा खजाना दे देगा।

"ठीक है।" कह कर उसने उसका सारा खजाना बटोरा, उसको ठीक से लगाया और सबको ले कर घर चल दिया।

उसने अपने तीनों साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्हीं की वजह से वह शैतानों के टापू के सरदार को जीत सका। उसने उन सबको खजाने में से कुछ हिस्सा भी दिया।

मोमोटारो के बूढ़े माता पिता ने मोमोटारो को जब खजाने के साथ आते देखा तो वे खुशी से फूले न समाये। मोमोटारो ने भी उनको अपनी साहसी यात्रा की कहानियाँ सुनायीं। इसके बाद तो वह अपने गाँव में सबसे ज़्यादा अमीर और इज़्ज़तदार आदमी बन गया और वे सब सुख से रहने लगे।

6 किनटारो या जंगली बच्चा[12]

बहुत पुराने समय में जब हकोने पहाड़[13] पर लम्बे लम्बे फ़र के पेड़ चावल के पौधों से भी अधिक लम्बे नहीं होते थे तो वहीं एक शैतान बच्चा आशीगारा[14] रहा करता था। उसकी माँ उसे "किनटारो" या सुनहरी बच्चा कह कर बुलाया करती थी।

वह दूसरे बच्चों जैसा नहीं था। क्योंकि उसके साथ खेलने के लिये कोई दूसरा बच्चा नहीं था तो वह जंगल के जंगली जनवरों के साथ खेला करता था।

वह भालुओं के साथ घूमता। और अक्सर जब भालू की पत्नी शाम को अपने बच्चों को खाना खिलाने और सुलाने के लिये आती तो वह उसकी पीठ पर कूद कर बैठ जाता और उसकी गुफा तक उसकी सवारी करता। वह हिरन की गरदन में अपनी बाँहें डाल देता। हिरन उससे डरते नहीं थे।

इस तरह वह जंगल का राजकुमार था। जंगली सूअर खरगोश गिलहरी बाज़ सब उसके नौकर और संदेश ले जाने वाले थे। हालाँकि वह एक मोटे बच्चे से ज़्यादा कुछ और नहीं था

[12] Kintaro or the Wild Baby. From the Book "Japanese Fairy Tales" By William Elliot Griffis. Trubner. 1887. Taken from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=96&tale=3502

[13] Hakone Mountain

[14] Ashigara

किनटारो के पास एक बड़ी कुल्हाड़ी थी। वह किसी साँप को इससे पहले कि वह लहरा कर भागता उसको छोटे छोटे टुकड़ों में काट सकता था।

हालाँकि किनटारो का पिता क्योटो[15] का एक बहुत ही बहादुर सिपाही था पर फिर भी दरबार में दुश्मनों की वजह से उसका अपमान किया गया था। वह एक बहुत सुन्दर लड़की से प्यार करता था। उसने उससे शादी कर ली थी।

जब उसका पति मर गया तो वह पूर्व में आशीगारा पहाड़ों की तरफ चली गयी। वहाँ जंगल में कुछ लकड़हारों के अलावा और कोई भी नहीं रहता था वहाँ उसने किनटारो को जन्म दिया। वह एक गुफा में रहती थी और पेड़ पौधे खा कर गुजारा करती थी।

जल्दी ही लकड़हारों को पता चल गया कि वहाँ जंगल में एक माँ और उसका जंगली बेटा भी रहते थे। हालाँकि वह उसके शाही वंश के बारे में सोच भी नहीं सकते थे पर वह बच्चा उनमें "छोटा आश्चर्य" के नाम से मशहूर था और वह स्त्री उनमें "पहाड़ों की पुरानी नर्स" के नाम से जानी जाती थी।

इस तरह से वह छोटा बच्चा अकेले ही बड़ा हुआ। वह रोज अपने आप ही अभ्यास करता जिससे वह एक भालू से आसानी से लड़ सकता था।

[15] Kyoto – a capital city of Japan.

उसके नौकरों में कुछ टैन्गूज़[16] भी थे पर वह एक लड़के की आज्ञा मानना नहीं चाहते थे सो वे कुछ जंगली ही थे। एक दिन एक बूढ़ी टेन्गु माँ जो एक छोटे से लड़के का कहा मानने के विचार पर ही हँसती थी अपने घोंसले में भाग गयी जो उसने एक लम्बे से फ़र के पेड़ पर बना रखा था।

किनटारो देख रहा था कि वह कहाँ गयी थी। फिर वह वहीं इन्तजार करता रहा जब तक वह खाना ढूँढने के लिये अपना घोंसला छोड़ कर बाहर नहीं निकली।

उसके जाने के बाद उसने पेड़ पर चढ़ कर उसके घोंसले को अपनी पूरी ताकत लगा कर हिलाया और नीचे गिरा दिया। उसमें उसके दो छोटे छोटे बच्चे भी थे वे भी नीचे गिर पड़े।

अब ऐसा हुआ कि उसी समय बड़ा हीरो रायको[17] पहाड़ों में घूमते हुए क्योटो जा रहा था। उसने देखा कि यह शरारती बच्चा कोई साधारण बच्चा नहीं है तो उसने उसकी माँ को ढूँढा और उसकी कहानी सुनी।

कहानी सुन कर उसने बच्चे की माँ से बच्चे को माँग लिया और उसे अपने बच्चे की तरह से पाला। सो किनटारो फिर रायको के साथ चला गया। वहाँ पहुँच कर वह एक बहुत बड़ा सिपाही बना।

[16] Tengu – a mythical bird of Japan
[17] Raiko

वहॉ उसने अपने पिता का नाम ले लिया – सकाटा किनटोकी।[18] उसकी मॉ वहीं पहाड़ों में ही रही और बहुत उम्र में जा कर मरी और हमेशा पहाड़ों की बूढ़ी नर्स के नाम से ही जानी जाती रही।

आज भी किनटारो जापानी बच्चों का हीरो है। उनकी बड़ी बड़ी पतंगों पर उसकी तस्वीर बनी रहती है – पहाड़ के काली ऑखों वाले शरारती बच्चे की तस्वीर उसकी कुल्हाड़ी और उसके खेल के जंगली जानवरों के साथ। और अपनी लम्बी नाक मलते हुए टैन्गूज़ के बच्चों के साथ जिनकी नाकें गिरते समय टूट गयी थीं।

[18] Sakata Kintoki.

7 जबान कटी चिड़िया[19]

यह बहुत समय पहले की बात है कि जापान में एक बूढ़ा और उसकी पत्नी रहते थे। बूढ़ा एक बहुत ही अच्छा दयालु और मेहनती आदमी था पर उसकी बुढ़िया हमेशा ही लड़ती झगड़ती रहती थी और इसी वजह से अपने घर की शान्ति अपनी खराब जबान से बिगाड़ कर रखती थी।

वह दिन रात हमेशा ही किसी न किसी की शिकायत करती रहती। बूढ़े ने तो उसकी इन शिकायतों पर बहुत दिनों से ध्यान देना ही बन्द कर दिया था। सारा दिन वह अपने खेतों पर काम करता रहता।

अब उसके कोई बच्चा तो था नहीं जिसके साथ उसका दिल बहल जाता तो उसने एक चिड़िया पाली हुई थी। शाम को घर आने के बाद वह उसके साथ खेलता। वह उसे ऐसे ही रखता था जैसे वह उसकी अपनी बच्ची हो।

जब वह खेतों पर से मेहनत कर के घर आता तो बस उसी के साथ बात करता उसी के साथ खेलता। उसको कुछ कुछ सिखाता। वह बहुत जल्दी सीख लेती। बूढ़ा उसका पिंजरा खोल देता और उसे कमरे में उड़ने देता। इस तरह वे एक साथ खेलते।

[19] The Tongue-cut Sparrow. By Yei Theodora Ozaki. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/the-tongue-cut-sparrow-2/

जब रात को खाने का समय होता तो वह हमेशा ही अपने खाने में से बचे हुऐ खाने के कुछ टुकड़े उसे दे देता।

एक दिन बूढ़ा लकड़ी काटने के लिये जंगल गया और बुढ़िया कपड़े धोने के लिये घर में ही रह गयी थी। पहले दिन उसने कुछ कलफ बना कर रखा था तो जब वह उसको इस्तेमाल करने के लिये लेने आयी तो वह तो वहाँ से जा चुका था। जिस कटोरे में उसने वह भर कर रखा था वह खाली था।

वह इस बात पर आश्चर्य कर ही रही थी कि उसे किसने इस्तेमाल कर लिया होगा या किसने चुराया होगा कि ऊपर से उनकी पालतू चिड़िया उड़ती हुई आयी और अपना छोटा सा पंखों वाला सिर झुकाया कर बोली – यह उसके मालिक ने उसे अभी सिखाया था —

"वह मैं हूँ जिसने यह कलफ लिया है। मैंने सोचा कि यह कोई खाना है जिसे कटोरे में मेरे लिये यहाँ रखा गया है सो मैंने उसे सारा खा लिया। अगर मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो मेहरबानी कर के मुझे क्षमा करें। चीं चीं चीं।"

इससे तुम देख सकते हो कि चिड़िया कितनी सच्ची चिड़िया थी और अगर चिड़िया ने इतनी अच्छी तरह से बुढ़िया से क्षमा माँगी थी तो बुढ़िया को उसे तुरन्त ही क्षमा कर देना चाहिये था पर ऐसा नहीं हुआ। बुढ़िया को वह चिड़िया कभी भी पसन्द नहीं थी।

वह अक्सर अपने पति से इस चिड़िया के बारे में लड़ती रहती थी कि उसने घर में इस "गन्दी चिड़िया" को क्यों पाल रखा है। इस चिड़िया को पालने से उसका घर का काम बढ़ जाता है। उसे चिड़िया की शिकायत करने में खास मजा आता था।

उसने उसे उसके बुरे व्यवहार के लिये डॉटा उसे गालियॉ दीं और इतना ही नहीं वह केवल इससे ही सन्तुष्ट नहीं थी उसने उसे पकड़ भी लिया जो यह बताने के लिये कि इस बात का उसे कितना पछतावा था वह इस सारे समय अपना सिर झुकाये रही और अपने पंख फैलाये रही। फिर बुढ़िया कैंची ले कर आयी और उस बेचारी चिड़िया की जबान काट दी।

बुढ़िया बोली — "मुझे लगता है कि तूने अपनी इसी जबान से मेरा कलफ खाया होगा। अब तू देख कि बिना जबान के रहना कैसा लगता है।"

यह कह कर बुढ़िया ने चिड़िया को भगा दिया। उसने सारे समय बड़बड़ाते हुए थोड़े से चावल का और कलफ बनाया कपड़ों में लगाया और फिर उन्हें बजाय इस्तरी करने के जैसे इंगलैंड में करते हैं तख्ते पर धूप में सूखने के लिये फैला दिया।

शाम को बूढ़ा घर आया। तो वह उस समय का इन्तजार कर रहा था जैसे उसके साथ रोज होता था कि जब वह घर के दरवाजे पर पहुँचता था तो उसकी पालतू चिड़िया उसका स्वागत करने

दरवाजे पर आती थी अपने पंख फड़फड़ा कर अपनी खुशी जताती थी और फिर उसके कंधे पर बैठ जाती थी।

पर आज जब वह घर पहुँचा तो वह बहुत निराश हुआ क्योंकि आज वैसा नहीं हुआ। आज तो उसकी प्रिय चिड़िया की छाया भी उसको दिखायी नहीं दी।

उसने जल्दी जल्दी कदम बढ़ाये जल्दी से अपनी सैन्डिल निकालीं और बरामदे में कदम रखा पर तब भी चिड़िया का कोई पता नहीं था। अब उसे यकीन हो गया था कि उसकी पत्नी ने ही अपने गुस्से में चिड़िया को पिंजरे में बन्द कर दिया होगा।

सो उसने उसे बुलाया और कहा — "सुज़ूमे सैन[20] आज कहाँ है?"

पहले तो बुढ़िया ने न जानने का बहाना किया और बोली — "तुम्हारी चिड़िया? मुझे नहीं मालूम। हूँ, अब मुझे याद आया मैंने उसे सारी दोपहर नहीं देखा। मुझे डर है कि वह कृतघ्न चिड़िया तुम्हारे प्यार करते करते भी कहीं तुम्हें छोड़ कर न चली गयी हो।"

पर बूढ़ा भी उसे शान्ति से छोड़ने वाला नहीं था। वह उससे बार बार पूछता ही रहा कि उसे यह मालूम होना ही चाहिये कि उसकी पालतू चिड़िया कहाँ गयी। आखिर उसने मान ही लिया कि किस तरह चिड़िया उसका बनाया कलफ खा गयी जिसे उसने खास कर कपड़ों में लगाने के लिये बनाया था।

[20] Suzume San means "Miss Sparrow"

फिर कैसे चिड़िया ने मान लिया कि उसने वह कलफ खा लिया था उसके बाद भी उसने उसके साथ क्या किया। उसे बहुत गुस्सा आया और उस गुस्से में उसकी जबान काट ली। और फिर कभी घर में घुसने से मना कर के उसने उसे उड़ा दिया।

उसके बाद उसने अपने पति को चिड़िया की कटी हुई जबान दिखायी — "यह उसकी जबान है जो मैंने काटी थी। वह बुरी चिड़िया। उसने मेरा सारा कलफ क्यों खा लिया।"

बूढ़ा बोला — "तुम इतनी बेरहम कैसे हो सकती हो।" बूढ़ा जवाब में बस यही बोल सका।

अपनी पत्नी को इस बात की सजा देने के लिये वह बहुत ही दयालु था पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसकी छोटी सी चिड़िया के साथ ऐसा हुआ। वह यही कहता रहा "मेरी प्यारी सुजूमे के साथ यह कितना बुरा हुआ कि उसने जबान खो दी। अब वह बेचारी कभी चहचहा नहीं सकेगी।

इसके अलावा जिस निर्दयता से उसने उसकी जबान काटी है उससे उसको कितना दर्द हुआ होगा। वह तो इसी दर्द से बीमार हो गयी होगी। क्या अब इसके लिये कुछ नहीं हो सकता।"

जब उसकी लड़ाकू पत्नी सोने चली गयी तो बूढ़ा बहुत देर तक रोता रहा। जब वह अपनी सूती पोशाक की आस्तीन से अपने ऑसू पोंछ रहा था एक अच्छा सा विचार उसे तसल्ली दे गया। कल सुबह वह अपनी चिड़िया को खोजेगा। तब कहीं वह सो सका।

अगली सुबह जैसे ही पौ फटी वह जल्दी ही उठ गया। तुरन्त ही अपना नाश्ता खा कर पहाड़ियों पर जंगलों में हर बॉस के पेड़ों के झुंड को देखते हुए वह रोता चला जा रहा था।

"मेरी जबान कटी चिड़िया तू कहाँ है। तू कहाँ है।"

वह अपने दोपहर के खाने के लिये भी कहीं नहीं रुका। शाम होते होते वह एक बॉस के पेड़ों के झुंड के पास आ कर रुक गया। बॉस के पेड़ चिड़ियों की बहुत प्यारी जगह होती है।

वहीं जंगल के किनारे उसे अपनी चिड़िया मिल गयी। वह अपने मालिक के स्वागत का इन्तजार कर रही थी। उसे तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह दौड़ा दौड़ा उसे प्यार करने पहुँच गया।

चिड़िया ने अपना छोटा सा सिर उसके सामने झुकाया और यह तो बहुत आश्चर्य की बात थी कि वह पहले की तरह बात कर रही थी। बूढ़े ने कहा कि वह इस घटना के लिये कितना दुखी था और फिर उसने उसकी जबान के बारे में पूछा कि उसके न होते हुए भी वह कैसे बोल पा रही थी।

तब चिड़िया ने अपनी चोंच खोल कर उसे दिखाया कि उसे एक नयी जबान मिल गयी थी और अब उसके साथ जो कुछ हुआ उसके बारे में उसे सोचने की कोई जरूरत नहीं थी क्योंकि अब वह बिल्कुल ठीक थी।

तब बूढ़े को पता चला कि उसकी चिड़िया कोई सामान्य चिड़िया नहीं थी वह तो एक परी थी। बूढ़ा तो इतना खुश हुआ कि उसकी खुशी का यहाँ वर्णन करना बहुत कठिन है। वह अपनी सारी कठिनाइयाँ भूल गया। वह तो यह भी भूल गया कि वह कितना थका हुआ था।

क्योंकि पहली बात तो यह कि उसकी चिड़िया उसे मिल गयी थी और दूसरे वह जो सोच रहा था कि उसकी चिड़िया बिना जबान के कितनी दुखी और बीमार सी होगी वह वह भी नहीं थी। वह अपनी नयी जबान के साथ ठीक और खुश थी।

उसे ऐसा भी नहीं लग रहा था कि उसकी पत्नी ने उसके साथ कोई खराब व्यवहार किया है। और सबसे अच्छी बात तो यह थी कि वह एक परी थी।

चिड़िया बूढ़े से बोली "आओ मेरे पीछे पीछे आओ।" कह कर वह आगे आगे उड़ गयी और बूढ़ा उसके पीछे पीछे चल दिया। वह बूढ़े को ले कर एक मकान के पास आयी।

बूढ़े को बड़ा आश्चर्य हुआ जब वह उस मकान के अन्दर घुसा। वह कितनी सुन्दर जगह थी। वह बिल्कुल सफेद लकड़ी का बना हुआ था। उसमें कालीन की जगह हल्के पीले रंग की चटाइयाँ बिछी हुई थीं। बूढ़े ने इतनी बढ़िया चटाइयाँ पहले कभी नहीं देखी थीं।

गद्दियाँ जो चिड़िया उसके बैठने के लिये ले कर आयी थी वे सबसे अच्छे सिल्क और क्रेप की बनी हुई थीं। हर जगह सुन्दर फूलदान और लकड़ी के डिब्बे सजे हुए थे।

बूढ़े की दया के प्रति जो वह उसके प्रति कई साल से दिखा रहा था अपनी नम्रता दिखाते हुए चिड़िया बूढ़े को एक बहुत अच्छी जगह पर बिठाने के लिये ले गयी उसे वहाँ बिठा कर उसने खुद थोड़ी दूरी पर खड़े हो कर उसे कई बार सिर झुकाया।

फिर लेडी चिड़िया ने उसे अपने परिवार से मिलाया। उसके बाद उसकी बेटियाँ जो बहुत सुन्दर क्रेप के कपड़े पहने थीं उसके लिये पारम्परिक थालियों में सुन्दर सुन्दर खाने की चीज़ें ले कर आयीं।

बूढ़े को तो यह सब सपना जैसा लग रहा था। खाने के बीच लेडी चिड़िया के बेटियों ने मेहमान के आनन्द के लिये अपना "सुज़ूमे ओडोरी" यानी चिड़िया का नाच प्रस्तुत किया।

बूढ़े ने इतना आनन्द कभी नहीं किया था। इस आनन्दपूर्ण वातावरण में परी चिड़ियों के साथ घंटे ऐसे ही जल्दी ही व्यतीत हो गये।

जब रात आयी तो उसे ध्यान आया कि उसको तो बहुत दूर जाना है। अब उसे लेडी चिड़िया से विदा ले कर घर वापस लौटना चाहिये। इस सारे मनोरंजन के लिये उसने अपनी दयालु मेजबान को

बहुत बहुत धन्यवाद दिया और विनती कि जो कुछ उसकी लड़ाकू पत्नी ने उसके साथ किया उसे वह भूल जाये।

उसने चिड़िया से कहा कि वह उसे इतने सुन्दर घर में देख कर और यह देख कर कि उसके पास सब कुछ है बहुत खुश हुआ है।

वह तो बस इसी लिये चिन्तित था कि पता नहीं चिड़िया की क्या हालत होगी उसे क्या परेशानी हो रही होगी यही जानने के लिये वह उसे ढूँढने के लिये निकला था। अब जब कि उसे पता चल गया है कि वह बिल्कुल ठीक है वह शान्ति से घर वापस जा सकता है।

उसने उससे यह भी कहा कि जब भी उसे किसी चीज़ की जरूरत हो तो वह बस उसे बुला भेजे वह तुरन्त ही उसकी सहायता के लिये हाजिर हो जायेगा।

लेडी चिड़िया ने बूढ़े से वहाँ रुक कर कई दिन आराम करने के लिये कहा पर बूढ़े ने कहा कि अब उसे घर वापस लौटना ही है। अगर वह अपने समय से नहीं पहुँचा तो उसकी लड़ाकू पत्नी उससे समय पर न आने के लिये लड़ेगी।

और फिर उसे काम पर भी तो जाना है इसलिये वह कितना भी चाहे वह यहाँ नहीं रुक सकता। पर अब क्योंकि उसे मालूम है कि लेडी चिड़िया कहाँ रहती है जब भी उसे समय मिलेगा वह अवश्य ही उससे आ कर मिलेगा।

जब लेडी चिड़िया ने देखा कि वह उसे अपने घर में और अधिक नहीं रोक पा रही है तो उसने अपने नौकरों से कहा कि वे दो बक्से वहाँ ले आयें – एक बड़ा और एक छोटा। उन दोनों बक्सों को बूढ़े के सामने ला कर रख दिया गया।

लेडी चिड़िया ने बूढ़े से कोई सा एक बक्सा चुनने के लिये कहा क्योंकि उनमें से एक बक्सा वह उसे भेंट के रूप में देना चाहती थी। बूढ़ा उसकी इस भेंट को मना नहीं कर सका।

उसने छोटा बक्सा चुनते हुए कहा — "मैं इस बड़े बक्से को उठा कर ले जाने के लिये अब काफी बूढ़ा और कमजोर हूँ। क्योंकि तुमने मुझसे इनमें से कोई सा भी बक्सा चुनने के लिये कहा तो मैं छोटा वाला बक्सा चुनता हूँ जो मुझे ले जाने में आसान रहेगा।"

तब चिड़िया ने उस बक्से को उसकी पीठ पर रखने में उसकी मदद की और उसको विदा करने के लिये फाटक तक गयी। कई बार झुक कर नमस्ते की और उसे जब भी उसे समय हो मिले तो दोबारा आने के लिये कहा। इस तरह बूढ़ा और उसकी प्रिय चिड़िया दोनों खुशी खुशी अलग हो गये।

चिड़िया ने बूढ़े को कभी भी यह नहीं दिखाया कि वह उसकी लड़ाकू पत्नी से किसी तरह भी नाराज थी। वह तो बस इस बात से दुखी थी कि बूढ़े को ही इसे ज़िन्दगी भर लिये हुए जीना था।

जब बूढ़ा घर पहुँचा तो उसकी पत्नी तो बहुत गुस्सा थी क्योंकि काफी रात हो चुकी थी और वह उसका बहुत देर से इन्तजार कर रही थी।

उसने बूढ़े से तेज़ आवाज में पूछा — "इतनी देर तक कहाँ थे। इतनी देर से क्यों आये।"

बूढ़े ने उसे चिड़िया की भेंट वाल बक्सा जो वह अपने साथ लाया था दिखा कर शान्त करने की कोशिश की। उसने उसको यह भी बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ। चिड़िया के घर में उसका कितने अच्छे तरीके से स्वागत सत्कार किया गया।

बूढ़े ने उसकी शिकायतों को रोकने की इच्छा से बोला — "चलो देखते हैं कि इसमें क्या है। इसे खोलने में तुम मेरी सहायता करो न।" और वे दोनों बक्सा खोलने में लग गये।

उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि बक्सा तो सोने और चाँदी के सिक्के और और भी कई कीमती चीज़ों से ऊपर तक भरा हुआ था।

जैसे जैसे वे बक्से में से चीज़ें निकालते जा रहे थे उनका छोटा सा घर उस बक्से में से निकली चीज़ों से चमकने लगा था। वे उन्हें बार बार उलट पलट कर देख रहे थे।

बूढ़ा उन सब चीज़ों को देख कर बहुत खुश था जो अब उसकी थीं। इस चिड़िया की भेंट तो उसकी आशा से कहीं ज़्यादा थी जिसके सहारे वह अपनी सारी ज़िन्दगी निकाल सकता था।

वह कई बार बोला — "मेरी छोटी चिड़िया तुझे बहुत बहुत धन्यवाद।"

सोने चाँदी के सिक्कों और कीमती चीज़ों को देखने के कुछ पलों की खुशी के बाद ही बुढ़िया अपने लालच को नहीं रोक सकी। उसने उससे यह कहना शुरू किया कि वह चिड़िया से बड़ा बक्सा ले कर क्यों नहीं आया उसने छोटा वाला बक्सा ही क्यों चुना।

ऐसा इसलिये हुआ कि उसने अपनी पत्नी को दोनों बक्सों वाली बात बता दी थी और साथ में यह भी कि वह छोटा बक्सा क्यों चुन कर लाया था क्योंकि वह हल्का था और वह उसे ला सकता था।

पत्नी बोली — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो। तुम बड़ा वाला बक्सा ले कर क्यों नहीं आये। सोचो तो ज़रा कि तुमने क्या खोया। अगर तुम बड़ा वाला बक्सा ले आते तो हमारे पास इससे दोगुना सोना चाँदी होता। तुम तो सचमुच में ही बेवकूफ बूढ़े हो।"

इस तरह चिल्ला कर वह गुस्से में भर कर सोने चली गयी। यह देख कर बूढ़े को लगा कि उसे अपनी पत्नी से इस बारे में कुछ भी नहीं बताना था। पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी।

उस लालची बुढ़िया ने अपनी अच्छी किस्मत से जो अचानक से उनको मिल गयी थी जिसकी वह अधिकारिणी भी नहीं थी सन्तुष्ट नहीं थी। उसने और अधिक पाने का इरादा कर लिया था।

अगले दिन सुबह उसने बूढ़े से चिड़िया के घर का रास्ता पूछा। बूढ़े ने उसका इरादा भाँप लिया था सो उसने उसे जाने से रोकने की

कोशिश की पर बेकार। वह नहीं रुकी। उसने उससे जो कुछ कहा वह भी उसने उसका एक शब्द भी नहीं सुना।

यह बड़ी अजीब सी बात थी कि उस चिड़िया के साथ जिसके साथ उसने इतना बुरा व्यवहार किया कि गुस्से में आ कर उसकी जबान काट ली थी उसके पास जाने में उसे कोई शरम नहीं थी। पर बड़े बक्से के अपने लालच की वजह से वह यह सब भूल गयी थी।

वह यह बात सोच ही नहीं सकी कि चिड़िया उससे कितनी नाराज होगी क्योंकि यह सच था कि वह नाराज थी और इस बात के लिये वह उसे सजा भी दे सकती थी।

जब से लेडी चिड़िया अपनी दुखी हालत में रोती हुई और मुँह से खून बहाती हुई अपने घर गयी थी उसके सम्बन्धियों ने कुछ और करने की बजाय बुढ़िया की बेरहमी की ही बातें कर रही थीं।

वे आपस में बात कर रही थीं कि वह बुढ़िया ऐसा कैसे कर सकी। वह भी इतने छोटे से अपराध के लिये कि इसने गलती से उसका कलफ खा लिया था वह इतनी बड़ी सजा कैसे दे सकी।

बूढ़े को वे प्यार करती थीं क्योंकि वह बहुत दयालु और अच्छा आदमी था और परेशानियों में भी धीरज रखने वाला था। पर बुढ़िया से वे घृणा करती थीं। उन्होंने पक्का इरादा कर लिया था कि जब भी उनको मौका मिलेगा वे उसे सजा जरूर देंगे।

मौके के लिये उनको बहुत इन्तजार नहीं करना पड़ा वह उन्हें जल्दी ही मिल गया।

कुछ घंटों तक चलने के बाद उसे वह बॉस के पेड़ों का झुंड मिल गया जो उसके पति ने उसे बताया था और जिसमें वह चिड़िया रहती थी। वहॉ जा कर वह चिल्लायी — "जबान कटी चिड़िया का घर कौन सा है?"

आखिर उसने बहुत सारी चिड़ियॉ अपने अपने घरों में से झॉकती देखीं। वह दरवाजे की तरफ बढ़ी और उसने दरवाजा खटखटाया।

जब नौकरों ने लेडी चिड़िया से कहा कि उसकी पुरानी मालकिन उससे मिलने आयी है तो उसे उसके अपने साथ के व्यवहार के बाद भी उसके इस प्रकार बहादुरी से अचानक आने पर ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ।

लेडी चिड़िया बहुत ही नम्र स्वभाव की चिड़िया थी सो यह सोचते हुए वह खुद बुढ़िया का स्वागत करने बाहर आयी कि वह कभी उसकी मालकिन थी।

बुढ़िया के पास बरबाद करने के लिये समय नहीं था। उसने बिना किसी शरम के सीधे सीधे चिड़िया से कहा — "तुम्हें मेरा वैसा स्वागत सत्कार करने की कोई जरूरत नहीं है जैसा कि तुमने मेरे पति का किया था। मैं वह बक्सा लेने के लिये खुद आयी हूँ जो वह अपनी बेवकूफी से यहॉ छोड़ गया था। मुझे वह बक्सा दे दो मैं यहॉ से चली जाऊॅगी। मुझे बस वही चाहिये।"

लेडी चिड़िया वह बक्सा देने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी।

उसने अपने नौकरों से बड़ा बक्सा लाने के लिये कहा। नौकर बक्सा ले आये तो बुढ़िया ने उनके हाथ से उसे छीन लिया और लेडी चिड़िया को धन्यवाद दिये बिना ही अपने घर की तरफ भाग ली।

बुढ़िया बक्से को ले कर इतनी खुश थी और यह जानने के लिये इतनी उत्सुक थी कि बक्से में क्या रखा है। वह बक्से को ले कर भाग कर अपने घर पहुँचना चाहती थी पर बक्सा इतना भारी था कि वह उसको ले कर भागने की बात तो दूर जल्दी जल्दी भी नहीं चल सकी। अक्सर ही रास्ते में थक कर उसको बैठ जाना पड़ता।

जब वह अकेली जंगल में से हो कर गुजर रही थी तो बक्से को खोल कर देखने की उसकी इच्छा इतनी प्रबल हो गयी कि वह उसे रोक नहीं सकी।

उसको लग रहा था कि वह बक्सा सोने चाँदी और कीमती जवाहरातों से उसी तरह भरा हुआ होगा जैसे कि वह छोटा वाला बक्सा भरा हुआ था जो उसका पति ले कर आया था।

उसके लालच स्वार्थ और उत्सुकता ने बुढ़िया को मजबूर कर दिया कि वह उस बक्से को वहीं रास्ते में रख दे और उसे खोल कर देखे। ऐसा ही उसने किया भी।

रास्ते में बक्से को नीचे रख कर उसने उसे बड़ी सावधानी से खोला। उसे आशा थी कि उसमें जो कुछ भी होगा उसे देख कर उसकी ऑखें तो खुली की खुली रह जायेंगी।

पर जो कुछ भी उसमें उसने देखा वह तो बहुत ही भयानक था। उसे देख कर तो उसकी ऑखें सचमुच ही खुली की खुली रह गयीं। उसके तो होश हवास ही उड़ गये।

जैसे ही उसने उसे खोला तो उसमें से तो बहुत सारे भयानक राक्षस निकल कर बाहर आ गये और उसके चारों तरफ खड़े हो गये जैसे वे उसको मारने वाले हों। उसने तो अपने किसी भयानक सपने में भी इतने भयानक जीव नहीं देखे होंगे जैसे इस बक्से में से निकले थे।

एक भयानक राक्षस जिसके माथे के बीच में एक ही ऑख थी उसके पास आ कर उसे घूरने लगा। दूसरे राक्षस उसको ऐसे देख रहे थे जैसे वे उसे खा ही जायेंगे। एक सॉप उसके चारों तरफ कुंडली मार कर उसकी तरफ फुंकार मारने लगा। एक बड़ा सा मेंढक उसके पास आ कर टर्र टर्र करने लगा।

बुढ़िया अपनी ज़िन्दगी में कभी भी इतनी नहीं डरी थी। वह तुरन्त ही उस सबको वहीं छोड़ कर अपने घर की तरफ जितनी जल्दी उससे भागा जा सकता था भाग ली। वह इसी बात से खुश थी कि वह वहॉ से ज़िन्दा बच कर वापस आ सकी।

घर पहुँच कर रोते हुए उसने अपने पति को वह सब बताया जो उसके साथ हुआ था। उसो उसे बताया कि किस तरह वह राक्षसों से बच कर भाग आयी थी। उसके बाद उसने चिड़िया को इस सबका दोषी ठहराना शुरू कर दिया।

पर आदमी ने उसे तुरन्त ही रोकते हुए कहा — "चिड़िया को दोष मत दो। यह तो तुम्हारी नीचता है जिसका इनाम तुम्हें मिला है। आशा है कि अब तुम्हें अपने किये की सीख मिल गयी होगी।"

इसके बाद बुढ़िया कुछ नहीं बोली। वह चुप खड़ी रह गयी। उस दिन के बाद बुढ़िया ने लड़ना झगड़ना और अपना बेरहमी का व्यवहार छोड़ दिया और धीरे धीरे एक अच्छी स्त्री बन गयी। आदमी को यह पता ही नहीं चला कि वह कब एक अच्छी स्त्री बन गयी।

उसके बाद वे सुखी रहे। चिड़िया के दिये हुए खजाने पर उन्होंने अपनी बाकी की ज़िन्दगी बिना किसी परेशानी के गुजार दी।

8 ईर्ष्यालु पड़ोसी[21]

बहुत पुरानी बात है कि एक गाँव में एक पति पत्नी रहते थे। क्योंकि प्यार और देखभाल करने के लिये उनका कोई बच्चा नहीं था तो उन्होंने एक कुत्ता पाल लिया था।

यह कुत्ता बहुत सुन्दर था और बजाय इसके कि वह जिद्दी या बिगड़ा हुआ बड़ा होता या जो वह चाहता था वह न मिलने पर गुस्सा होता जैसा कि कभी कभी बच्चे करते हैं वह कुत्ता अपने मालिक की दया के लिये उनका बहुत कृतज्ञ था। वह कभी उनका साथ नहीं छोड़ता था चाहे वह घर में हों या बाहर हों।

एक दिन आदमी अपने बागीचे में काम कर रहा था कुत्ता उसके साथ था जैसे कि हमेशा वह रहता था। सुबह सुबह बहुत गरम था सो आखिर उसने अपना फावड़ा रख दिया और अपना गीला माथा पोंछा। इतने में उसने देखा कि उसका कुत्ता पास में ही जमीन खुरच रहा था।

इसमें कोई अजीब बात नहीं थी क्योंकि वह ऐसा करता ही रहता था। सारे कुत्ते ऐसा करते हैं सो वह फिर से खोदने लग गया। कि इतने में उसका कुत्ता भागा हुआ उसके पास आया और

[21] The Envious Neighbor. From Andrew Lang's Fairy Book. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/the-envious-neighbor/

ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगा। फिर उसी जगह वापस भी चला गया जहाँ वह खुरच रहा था।

यह उसने कई बार किया तो आदमी यह सोचने पर मजबूर हो गया कि वह वहाँ जा कर देखे कि वहाँ क्या है। उसने अपना फावड़ा उठाया और उधर की तरफ चल दिया जहाँ उसका कुत्ता उसे बुला रहा था।

कुत्ता अपनी इस सफलता पर इतना खुश था कि वह और ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगा और चारों तरफ नाचने लगा। वह इतना भौंका कि घर में से स्त्री भी यह देखने के लिये बाहर निकल आयी कि देखूँ बाहर हो क्या रहा है।

यह जानने के लिये कि क्या कुत्ते ने सचमुच ही कुछ पा लिया है आदमी ने वहाँ खोदना शुरू किया तो लो उसका फावड़ा ठन्न से किसी चीज़ से टकरा गया। वह नीचे देखने के लिये झुका तो उसे एक बक्सा दिखायी दिया।

उसने वह बक्सा निकाल लिया। उसे खोल कर देखा तो वह तो ऊपर तक चमकते हुए सोने के सिक्कों से भरा हुआ था। वह बक्सा इतना भारी था कि उसकी पत्नी को भी उसे अन्दर ले जाने के लिये सहारा लगाना पड़ा।

अब तुम सोच सकते हो कि उस रात कुत्ते को कितना अच्छा खाना मिला होगा। क्योंकि उस कुत्ते ने उनको अमीर बनाया था तो वे लोग अब उसे वैसा ही खाना देते थे जैसा उसको चाहिये था।

उसका बिस्तर भी उन्होंने एक राजकुमार के बिस्तर की तरह सजा दिया था।

कुत्ते और उसके खोजे गये खजाने की कहानी जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी। उनके पड़ोसी को जिसका बागीचा उस आदमी के बागीचे के बराबर में ही था उससे इतनी ईर्ष्या हो गयी कि उसका तो खाना सोना हराम हो गया।

उसने सोचा कि पड़ोसी के कुत्ते ने जैसे एक बार खजाना खोजा है तो वह बार बार खोज सकेगा सो उसने अपने पड़ोसी से उनका कुत्ता कुछ दिन के लिये उसे देने के लिये कहा ताकि वह उसे भी अमीर बना सके।

आदमी ने कुछ अनमनेपन से उससे कहा कि वह इस तरीके से उसका पालतू कुत्ता कैसे माँग सकता है। उसने कहा — "तुम जानते हो कि हम उसे कितना प्यार करते हैं कि हम उसे पाँच मिनट के लिये भी अपनी आँख से ओझल नहीं होने देते।"

पर वह ईर्ष्यालु पड़ोसी उसकी कोई बात सुनने वाला नहीं था। वह उस आदमी के घर के रोज ही चक्कर काटने लगा। आखिर वे जो बहुत समय तक किसी को ना नहीं कह सकते थे पड़ोसी को अपना कुत्ता देने के लिये राजी हो गये पर केवल एक दो रात के लिये ही।

जैसे ही पड़ोसी को कुत्ता मिला वह उसे अपने बागीचे में ले गया पर कुत्ता तो केवल चारों तरफ दौड़ता ही रहा। इससे अधिक

उसने कुछ और नहीं किया। पड़ोसी को जितना धीरज वह रख सकता था उतना धीरज तो रखना ही पड़ा।

अगले दिन पड़ोसी ने जब अपने घर का दरवाजा खोला तो देखा कि उसका कुत्ता खुश खुश उसके बागीचे में घूम रहा है। वह बार बार एक पेड़ की जड़ की तरफ जा रहा है और वहाँ बहुत ज़ोर ज़ोर से खुरच रहा है।

आदमी ने ज़ोर से चिल्ला कर अपनी पत्नी से एक फावड़ा लाने के लिये कहा और खुद कुत्ते के पीछे पीछे चल दिया क्योंकि उस खजाने की पहली झलक वही देखना चाहता था।

पर खोदने पर उसने वहाँ क्या देखा केवल एक हड्डियों की पोटली जिसमें से इतनी बुरी बदबू आ रही थी कि वह तो वहाँ एक पल भी खड़ा नहीं रह सका। वह उस कुत्ते के प्रति गुस्से से भर गया जिसने उसके साथ यह चाल खेली थी।

इससे पहले कि वह सोचता कि वह क्या करने जा रहा था उसने तुरन्त ही एक छोटी कुल्हाड़ी उठायी और कुत्ते की गरदन पर चला दी। जब उसे याद आया कि जब उसे अपनी यह कहानी ले कर पति पत्नी के पास जाना पड़ेगा तब क्या होगा तो वह तो बहुत डर गया।

पर अब तो कुछ हो नहीं सकता था। बहुत दुखी चेहरा ले कर वह आदमी के पास गया। उसने रोने का बहाना करते हुए आदमी से कहा — "हालाँकि मैंने उसकी बहुत अच्छे से देखभाल की और

जो कुछ उसे चाहिये था वह सब दिया पर फिर भी तुम्हारा कुत्ता अचानक से मर गया है। मैंने सोचा कि मैं यह बात तुमसे सीधे आ कर कह देता हूॅ।"

यह सुन कर आदमी तो बेचारा बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा। फिर वह अपने प्यारे कुत्ते का शरीर लेने के लिये उसके घर गया। उसे वहॉ से ला कर उसे उसी अंजीर के पेड़ के नीचे दफ़ना दिया जिसके नीचे उसे खजाना मिला था।

सुबह से शाम तक पति पत्नी दोनों अपने कुत्ते के बारे में सोच सोच कर दुखी होते रहते। कुछ भी उन्हें तसल्ली नहीं दे सका।

आखिर जब एक दिन आदमी सोया हुआ था उसने सपने में अपने कुत्ते को देखा। सपने में उसने उससे कहा कि वह उस अंजीर के पेड़ को काट दे जिसके नीचे उसने उसे दफ़नाया हुआ है और उसकी लकड़ी की एक ओखली और मूसल बना ले।

पर जब आदमी की ऑख खुली तो उसका बिल्कुल मन नहीं हुआ कि वह उस अंजीर के पेड़ को काटे जिस पर हर साल बहुत अच्छे फल आते थे। उसने इस बारे में अपनी पत्नी की राय ली।

स्त्री एक पल को भी नहीं हिचकिचायी और बोली — "जो कुछ पहले हो चुका है उसको देख कर तो ऐसा लगता है कि हमें कुत्ते की बात माननी ही चाहिये। सो पेड़ कटवा दिया गया और उसकी लकड़ी की एक सुन्दर सी ओखली बनवा दी गयी।

जब चावल की फसल पकने का समय आया तब वह ओखली निकाली गयी और चावल उसमें कूटने के लिये डाला गया तो लो देखो जैसे ही उसमें चावल कूटा गया तो वह तो सोने के टुकड़ों में बदल गया।

इतना सारा सोना देख कर तो पति पत्नी का मन बहुत प्रसन्न हो गया। एक बार फिर उन्होंने अपने कुत्ते के प्रति आभार प्रगट किया और उसे दुआऐं दीं।

जल्दी ही यह कहानी उनके ईर्ष्यालु पड़ोसी के कानों तक पहुँची तो तुरन्त ही पड़ोसी उनके घर उनकी ओखली माँगने के लिये पहुँच गया। आदमी उस ओखली को उसे बिल्कुल नहीं देना चाहता था पर वह तो मना करना जानता ही नहीं था सो पड़ोसी उस ओखली को अपनी बगल में दबा कर अपने घर ले गया।

जैसे ही वह अपने घर पहुँचा तो उसने मुट्ठी भर धान ले कर उस ओखली में डाला और अपनी पत्नी की सहायता से उसे कूटना शुरू कर दिया।

पर यह क्या। वह धान तो कुछ ऐसी बैरीज़ में बदल गया जिनमें से इतनी बुरी बदबू आ रही थी कि उन्होंने उस ओखली को ही तोड़ दिया और उसके टुकड़े भी जला दिये। फिर उन्हें वहाँ से दूर भागना पड़ गया।

पति पत्नी अपनी ओखली के बारे में जान कर बहुत दुखी हुए। पड़ोसी की कोई भी सफाई और क्षमा उनको तसल्ली नहीं दे पायी।

उस रात उनका कुत्ता फिर आदमी के सपने में आया और उससे कहा कि वह जा कर उस ओखली के टुकड़ों की राख समेट ले और उसे घर ले आये।

और जब वह यह सुने कि वहाँ का राजा डैमिओ[22] राजधानी जा रहा है तो वह कुछ राख उस राजमार्ग पर ले जाये जिस पर से हो कर उसका जुलूस जा रहा हो।

फिर जैसे ही वह जुलूस उसे नजर आये तो वह सारे चैरी के पेड़ों पर चढ़ कर वह राखा उन पर बिखेर दे। ऐसा करने से वे सारे चैरी के पेड़ ऐसे खिल जायेंगे जैसे पहले कभी नहीं खिले होंगे।

इस बार पति ने अपनी पत्नी से सलाह लेने का बिल्कुल भी इन्तजार नहीं किया। वह सीधा पड़ोसी के घर गया और जली हुई ओखली की राख बटोर ली। उसने उसे एक चीनी मिट्टी के बरतन में सुरक्षित रूप से रख ली और फिर उसे राजमार्ग पर ले गया।

फिर जब तक डैमिओ वहाँ से गुजरता वह एक जगह बैठ गया। उस समय तक चैरी के पेड़ बिल्कुल नंगे खड़े थे क्योंकि यह वह मौसम था जब छोटे गमले बड़े लोगों को बेचे जाते थे। वे उनको गरम जगह में रख देते थे ताकि उनमें फूल जल्दी आ जायें और उनके कमरे सजाने के काम आ सकें।

जो पेड़ खुली जगहों में लगे हुए थे उन पर तो कोई भी एक महीने तक एक छोटी से कली भी देखने की आशा नहीं कर सकता

[22] Daimio – the in charge of the admistration of that part of that country.

था। आदमी को वहाँ बैठे बहुत देर नहीं हुई थी कि उसने दूर से धूल उड़ती हुई देखी तो जान गया कि वह डैमिओ का जुलूस ही आ रहा होगा।

उस जुलूस में हर आदमी अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने हुए था। और वे लोग जो रास्ते पर लाइन बना कर खड़े हुए थे वे सब अपनी अपनी निगाह नीची कर के खड़े हुए थे। केवल उस आदमी का सिर नीचे नहीं झुका था।

डैमिओ ने यह देख लिया तो उसने गुस्से में आ कर अपने एक दरबारी को बुलाया और उसको उस आदमी से यह जानने के लिये भेजा कि उसने परम्परागत नियमों का उल्लंघन क्यों किया।

पर इससे पहले कि वह दरबारी उसके पास पहुँचता वह आदमी पास वाले एक पेड़ पर चढ़ गया और अपनी ओखली की राख चारों तरफ छिटका दी। तुरन्त ही सारे पेड़ों पर सफेद फूल खिल गये।

यह देख कर डैमिओ का दिल खुश हो गया। उसने आदमी को अपने किले में बुला कर बहुत सारी कीमती भेंटें दीं।

हमको यकीन है कि उस ईर्ष्यालु पड़ोसी ने भी यह खबर जल्दी ही सुन ली होगी और उसका हृदय घृणा से भर भी गया होगा। वह तुरन्त ही अपनी उस जगह गया जहाँ उसने ओखली जलायी थी।

वहाँ से थोड़ी सी राख समेटी जो वह आदमी छोड़ गया था और उसे इस आशा में सड़क पर ले गया कि वह उसके लिये भी अच्छी किस्मत ले कर आयेगी जैसी कि वह उस आदमी के लिये ले कर

आयी थी या फिर हो सकता है कि उससे भी कुछ और ज़्यादा अच्छी किस्मत ले कर आये।

जब उसने पहली बार डैमिओ का जुलूस देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने अपने आपको सही समय के लिये तैयार कर लिया। जैसे ही डैमिओ वहाँ से गुजरा तो उसने वह राख पेड़ों पर छिड़क दी पर उसके इस काम ने किसी तरह का कोई फल नहीं दिखाया।

बल्कि यह राख डैमिओ और उसके दरबारियों की आँखों में जा कर पड़ गयी और वे दर्द के मारे रोने लगे। राजकुमार ने पड़ोसी को बाँध कर जेल में डालने की आज्ञा दे दी। वह वहाँ कई महीने तक पड़ा रहा।

जब तक वह जेल से बाहर निकल कर आया तब तक गाँव के सब लोगों को उसकी नीचता मालूम हो चुकी थी। उन्होंने फिर उसे वहाँ रहने नहीं दिया क्योंकि उसने अपने बुरे तरीके फिर भी नहीं छोड़े थे।

वह और बुरे से बुरा होता गया और उसका अन्त भी बुरा हुआ।

9 बॉसुरी[23]

यह बहुत दिन पुरानी बात है कि येडो[24] में एक कुलीन वंश का आदमी रहता था जो बहुत सच बोलता था। उसकी पत्नी भी बहुत ही प्यारी और कुलीन स्त्री थी। इस आदमी को यह एक बहुत बड़ा दुख था कि उसकी पत्नी ने उसे कोई बेटा नहीं दिया था।

बेटी तो उनके एक थी जिसे वे ओयोने[25] कह कर बुलाते थे जिसका शब्दिक अर्थ था "कान में चावल"[26]। दोनों ही उस बच्ची को अपनी जान से ज़्यादा प्यार करते थे और अपने ऑख के तारे की तरह से रखते थे।

बच्ची लम्बी ऑखें बॉस की तरह से लम्बी और पतली और लाल और सफेद रंग की बड़ी होती गयी।

जब ओयोने बारह साल की हो गयी तो उसकी मॉ उस साल के पतझड़ में बीमार हो गयी। वह मैपिल के पेड़ों की पत्तियों की तरह से लाल पड़ गयी मर गयी और जमीन में दफ़ना दी गयी।

पति उसके दुख में पागल सा हो गया। वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया छाती पीट पीट कर रोया धरती पर लोट गया सब आरामों से

---

[23] The Flute. From the Book : "Green Willow and Other Japanese Fairy Tales". By Grace James. 38 Tales.

[24] Yedo – name of a place in Japan.

[25] O'Yone – name of the girl

[26] Rice in the Ear

मुँह मोड़ लिया। कई दिनों तक उसने न खाया और न वह सोया। बच्ची बिल्कुल चुप थी।

समय गुजरता गया। पति ने अपना बिज़नस सँभालना शुरू कर दिया। जाड़ों की बर्फ गिरी तो उसकी पत्नी की कब्र बर्फ से ढक गयी। उसके घर से उसकी मरी हुई पत्नी के घर तक का रास्ता भी बर्फ से ढका हुआ था।

उस रास्ते पर सिवाय एक बच्चे की सैन्डिल के निशानों के अलावा और किसी का निशान नहीं था।

जाड़ा गया तो वसन्त आ गया। वसन्त में वह चैरी के फूलों का त्यौहार देखने गया। वहाँ उसने आनन्द भी किया और एक कागज पर एक कविता भी लिखी जिसको उसने चैरी के एक पेड़ की एक टहनी से हवा में फड़फड़ाने के लिये टाँग दिया।

यह कविता वसन्त की प्रशंसा में लिखी गयी थी। बाद में उसने एक झूलने वाली नारंगी लिली का पौधा भी लगा दिया। इसके बाद वह अपनी पत्नी को भूल गया पर बच्ची अपनी माँ को नहीं भूली।

एक साल पूरा होने से पहले ही वह बच्ची के लिये दूसरी माँ ले आया – वह रंग में तो गोरी थी पर उसका दिल काला था। बेवकूफ आदमी खुश था। उसने अपनी पत्नी से बच्ची की बहुत तारीफ की। उसको लगा कि सब कुछ ठीक चल रहा था।

ओयोने का पिता ओयोने को बहुत प्यार करता था पर उसकी सौतेली माँ उसे बिल्कुल प्यार नहीं करती थी। वह रोज बच्ची के

साथ बेरहमी का व्यवहार करती थी। बच्ची की नम्रता और धैर्य से उसका गुस्सा और बढ़ जाता था।

पर क्योंकि ओयोने का पिता आस पास रहता था इसलिये वह ओयोने के साथ ज़्यादा बुरा व्यवहार नहीं कर सकती थी। इसलिये वह ठीक समय का इन्तजार कर रही थी।

उधर बच्ची बेचारी अपनी सुबह शाम बड़े दर्द से गुजार रही थी। इस बारे में वह अपने पिता से एक शब्द भी नहीं कहती थी। ऐसा था उस बच्ची का व्यवहार।

कुछ दिन बाद कुछ ऐसा हुआ कि पिता को अपने बिज़नस के सिलसिले में दूर शहर जाना पड़ा। वह क्योटो जा रहा था और वह शहर येडो शहर से जहाँ यह आदमी रहता था कई दिनों की दूरी पर था। अब चाहे वहाँ पैदल जाओ या फिर घोड़े पर सवार हो कर जाओ।

पर जब उसे जाना था तो जाना ही था और वहाँ उसे तीन महीने रहना भी था। सो उसने जरूरी तैयारियाँ कीं। उसके नौकरों को भी उसके साथ जाना था उसका जरूरी सामान भी जाना था।

इस तरह तैयारी करते करते जाने के दिन की पहली रात आ गयी। अगले दिन सुबह सवेरे ही उसे जाना था तो उसने ओयोने को अपने पास बुलाया और उससे कहा — "यहाँ आओ मेरी प्यारी बच्ची।"

सो ओयोने उसके पास गयी और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गयी। उसने पूछा — "मैं तुम्हारे लिये क्योटो से क्या ले कर आऊँ।"

उसने अपना सिर झुका लिया पर बोली कुछ नहीं।

"अरे कुछ तो जवाब दे बेटी। सुनहरा पंखा या फिर सिल्क का कपड़ा या फिर लाल ब्रोकेड का ओबी या फिर हल्के पंखों वाली शटलकौक।"

यह सुन कर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। पिता ने उसे तसल्ली देने के लिये अपने घुटनों पर बिठा लिया। पर उसने अपना चेहरा अपनी पोशाक की आस्तीन से छिपा लिया और कुछ ऐसे बोली जैसे पिता के जाने से उसका दिल टूट रहा हो। वह बोली — "पिता जी आप मत जाइये। पिता जी आप मत जाइये।"

पिता बोला — "पर बेटी मुझे तो जाना ही पड़ेगा। मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगा। और तुम देखना कि मैं इतनी जल्दी वापस आऊँगा कि तुम्हें लगेगा भी नहीं कि मैं चला गया हूँ। फिर मैं तुम्हारे लिये बहुत सारी चीज़ें ले कर वापस आऊँगा।"

बच्ची बोली — "तो फिर आप मुझे भी अपने साथ ले चलिये।"

पिता बोला — "अफसोस बेटी तुम जैसी छोटी बच्ची के लिये यह बहुत लम्बा रास्ता है। मेरी छोटी यात्री क्या तुम पैदल चल सकोगी या फिर किसी घोड़े पर भी। और फिर तुम क्योटो की

सरायों में कैसे रहोगी। नहीं मेरी बच्ची नहीं। अब समय बहुत कम रह गया है। और फिर तुम्हारी दयालु माँ तो तुम्हारे साथ है ही।"

वह उसकी बाँहों में काँप गयी। वह बोली — "पिता जी अगर आप मुझे अपने साथ नहीं ले जायेंगे तो फिर आप मुझे कभी नहीं देख पायेंगे।"

यह सुन कर पिता के शरीर में एक ठंडी लहर दौड़ गयी और उसको एक झटका लगा पर वह सब उसे जाने से रोक नहीं सका। वह तो एक मजबूत आदमी की तरह से बड़ा हुआ था तो क्या वह एक बच्चे के डर से डर जाये।

उसने प्यार से ओयोने को अपने से दूर हटाया और ओयोने भी एक साये की तरह से चुपचाप उससे दूर चली गयी।

अगले दिन सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले वह एक बाँसुरी ले कर अपने पिता के पास गयी। यह बाँसुरी बाँस की बनी हुई थी और पौलिश की गयी थी। आ कर वह बोली — "यह बाँसुरी मैंने अपने बागीचे के पीछे जो बाँस के पेड़ लगे हैं उनसे आपके लिये खुद बनायी है।

अब आप मुझे तो अपने साथ ले कर जा नहीं सकते तो आप यह छोटी सी बाँसुरी ही ले जाइये। जब आपको मेरी याद आये तो इसे बजा लीजियेगा।"

फिर उसने उसे सफेद रेशम के एक रूमाल में बाँधा जिसमें लाल रंग का अस्तर लगा हुआ था और उसे अपने पिता को दे दिया

जिसे उसके पिता ने अपनी आस्तीन में रख लिया। इसके बाद वह क्योटो की सड़क ले कर क्योटो चला गया।

जब वह जा रहा था तो उसने तीन बार पीछे मुड़ कर देखा और तीनों बार अपनी बच्ची को वहीं खड़ा पाया जहाँ वह उसे छोड़ कर गया था। उसके बाद सड़क मुड़ गयी सो उसके बाद वह उसे नहीं देख सका।

ओयोने के पिता ने देखा कि क्योटो शहर एक बहुत सुन्दर और बड़ा शहर था। दिन में उसका बिजनस बहुत अच्छी तरह से हो गया। शाम को मनोरंजन भी अच्छा था और रात को वह बहुत अच्छी तरह से सोया भी।

उसका समय बहुत अच्छा गुजर रहा था। उसे येडो और अपनी बच्ची की याद ही नहीं आयी। दो महीने गुजर गये फिर तीसरा भी गुजर गया पर अभी उसका लौटने का कोई प्लान ही नहीं था।

एक शाम वह अपने दोस्तों के साथ खाने के लिये जाने वाला था तो वह अपनी आलमारी में कोई खास रेशमी हकामा[27] ढूँढ रहा था जिसे वह उस दिन पहनना चाहता था तो उसे वह छोटी सी बाँसुरी दिखायी दे गयी जो उसकी बेटी ने उसे दी थी और जो इस सारे समय उसकी यात्रा वाली पोशाक की आस्तीन में पड़ी थी।

[27] Hakama – certain kind of dress

उसने उसे उसके लाल और सफेद रूमाल में से निकाल ली। जैसे ही उसने उसे बाहर निकाला तो उसके दिल में एक बरफीली ठंडी लहर दौड़ गयी।

उसने उसे जलते कोयलों के ऊपर रख कर गरम किया और फिर अपने होठों से लगा लिया तो उसमें से एक लम्बी रोने की आवाज निकली।

उसे सुन कर उसने उसे तुरन्त ही चटाई पर फेंक दिया और ताली बजा कर अपने नौकर को बुलाया और उससे कहा कि वह उस रात खाने के लिये नहीं जा पायेगा। उसकी तबियत ठीक नहीं है और वह अकेला रहना ही पसन्द करेगा।

काफी देर के बाद उसने हाथ बढ़ा कर बाँसुरी उठायी तो फिर से उसे उसमें से दर्द भरी आवाज आयी। वह सिर से पैर तक काँप गया। उसने उसे बजाने की कोशिश की तो "येडो वापस आ जाइये पिता जी येडो वापस आ जाइये।"

बच्ची की काँपती हुई आवाज पहले तो चीख में बदली फिर टूट गयी। पिता को एक भयानकता का आभास हुआ और वह अपने होश खो बैठा।

वह अपने घर से और शहर से भाग निकला और बिना खाना खाये और बिना सोये दिन रात यात्रा करता रहा। वह पीला पड़ गया था। वह पागल सा हो गया था कि लोगों ने उसे पागल समझा

और उससे दूर भागने लगे। उनको उस पर दया आने लगी जैसे वह किसी देवता का सताया हुआ हो।

आखिर उसकी यात्रा समाप्त हुई। सिर से पॉव तक वह यात्रा की धूल धक्कड़ से परेशान था। पॉवों से उसके खून बह रहा था। थकान से अधमरा सा था। जब वह घर पहुँचा तो दरवाजे पर उसकी पत्नी ने उसका स्वागत किया।

उसने पूछा — "बच्ची कहॉ है?"

वह बोली — "बच्ची... ?"

उसने गुस्से में आ कर फिर पूछा — "हॉ हॉ बच्ची।"

पत्नी बोली — "मुझे नहीं मालूम। वह या तो किताब पढ़ रही होगी या फिर बागीचे में होगी या सो रही होगी और या फिर अपनी सहेलियों के साथ खेलने गयी होगी।"

वह बोला — "बस बस। बहुत हो गया। मुझे बताओ कि मेरी बच्ची कहॉ है।"

अब वह कुछ डर गयी। घबरा कर बोली — "वह बॉसों के झुंड में है।"

वह तुरन्त ही बॉसों के झुंड की तरफ भागा गया और अपनी बेटी को ढूँढा। उसने उसे पुकारा — "योने योने। योने योने।" पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। केवल बॉस की पत्तियों में से हवा सॉय सॉय करती सुनायी दी।

तब उसने अपनी आस्तीन में हाथ डाल कर अपनी बेटी की बनायी हुई बॉसुरी निकाली और उसे अपने होठों पर रखा तो उसमें से बहुत हल्की सी आह की आवाज निकली और फिर वह बड़ी दर्द भरी आवाज में बोली "पिता जी। मुझे मेरी नीच सौतेली मॉ ने मार डाला है। तीन महीने पहले उसने मुझे मारा था।

मार कर उसने मुझे इसी बॉस के पेड़ों के झुंड में गाड़ दिया। आपको मेरी हड्डियॉ यहीं मिल जायेंगी। जहॉ तक मेरा सवाल है अब आप मुझे कभी नहीं देख पायेंगे। कभी नहीं देख पायेंगे।"

यह सुन कर आदमी ने अपनी दोधारी तलवार निकाली और उससे नीच सौतेली मॉ को मार कर अपनी बेटी के साथ न्याय किया और अपनी भोलीभाली बच्ची की हत्या का बदला लिया।

इसके बाद उसने सफेद मोटे कपड़े पहने एक बड़ा सा चावल के भूसे का टोप लगाया जिससे उसका चेहरा ढक गया। फिर उसने एक डंडा लिया भूसे का एक बारिश में पहनने वाला कोट लिया अपने सैन्डिल बॉधे और जापान की पवित्र जगहों की तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़ा।

साथ में वह अपने कपड़ों में छिपा कर अपनी बॉसुरी भी लेता गया।

10 हरी विलो[28]

एक नौजवान सिपाही टोमोडाटा[29] नोटो के लौर्ड का वफादार था। वह एक सिपाही था एक दरबारी था और एक कवि था। टोमोडाटा सुन्दर था और उसकी आवाज बहुत मीठी थी। वह देखने में कुलीन लगता था और उसका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा था।

वह बहुत शानदार नाच नाचता था और आदमियों वाले सारे खेल बहुत अच्छे खेलता था। वह बहुत अमीर था पर दयालु था। उसे अमीर और गरीब दोनों ही एक जैसा प्यार करते थे।

उसका मालिक नोटो के लौर्ड डैम्यो[30] को एक आदमी चाहिये था जो उसके विश्वास का हो। सो उसने टोमोडाटा को चुना और अपने सामने बुलवाया।

डैम्यो ने पूछा — "क्या तुम वफादार हो?"

टोमोडाटा बोला — "सरकार आप जानते हैं।"

डैम्यो ने फिर पूछा — "क्या तुम मुझे प्यार करते हो?"

टोमोडाटा घुटनों के बल बैठता हुआ बोला — "जी जनाब।"

डैम्यो बोला — "तब तुम मेरा एक संदेश ले कर जाओ। तुम सवार हो जाओ और कहीं भी अपना समय बरबाद नहीं करना। तुम सीधे चले जाओ और किसी भी पहाड़ या दुश्मन के देश से मत

---

[28] Green Willow. From the Book "Green Willow and Other Japanese Tales." By Grace James. 1912.

[29] Tomodata – name of the Samurai in Japan

[30] Daimyo

डरना। तूफान या किसी और चीज़ के लिये भी मत रुकना। चाहे अपनी जान दे देना पर मेरा विश्वास मत खोना। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि किसी लड़की की तरफ मत देखना। अब जाओ और इसका जवाब ले कर आओ।"

नोटो के लौर्ड ने टोमोडाटा से ऐसा कहा। सो टोमोडाटा ने एक घोड़ा लिया और अपने काम पर चल दिया। टोमोडाटा ने अपने मालिक की बात मानी उसने अपने अच्छे जानवर की भी चिन्ता नहीं की। वह न तो खड़ी पहाड़ी के दर्रे से डरा और न ही दुश्मनों के देश से।

जब वह सड़क पर तीन दिन तक चल लिया तो एक भयानक पतझड़ का तूफान आ गया क्योंकि वह नवाँ महीना था। भारी बारिश पड़ने लगी। टोमोडाटो सिर झुकाये चलता ही रहा। हवा पाइन के पेड़ों में से हो कर बहती रही। फिर वह एक तूफान ले आयी।

उसका अच्छा घोड़ा काँप रहा था क्योंकि उसके पैर जमीन पर नहीं टिक पा रहे थे पर टोमोडाटा ने उससे विनती की और वह चलता ही रहा। अपना शाल भी उसने अपने चारों तरफ अच्छी तरह से लपेट लिया ताकि वह उड़ न जाये।

और इस तरीके से वह चलता ही चला गया।

इस भयानक तूफान ने उसकी बहुत सारी पहचान की जगहें मिटा दी थीं इससे राजा तो बस बेहोश होते होते बचा। दोपहर को

इतना अँधेरा हो गया था जैसे सुबह का धुँधलका होता है। और धुँधलका ऐसा हो गया था जैसे रात। और जब रात होती थी तो वह इतनी काली होती थी जैसे योमी की रात[31] जिसमें खोयी हुई आत्माऐं इधर उधर घूमती रहती हैं और चिल्लाती रहती हैं।

इस समय तक टोमोडाटा अपना रास्ता भूल गया था। वह एक सुनसान जगह में था जहाँ उसे ऐसा लग रहा था कि वहाँ शायद कभी भी कोई भी नहीं रहा।

उसका घोड़ा भी अब आगे नहीं चल पा रहा था। जब तक वह गहरी निराशा में नहीं पड़ गया वह खुद भी पैदल ही इधर उधर घूमता रहा, कभी दलदल में से हो कर तो कभी पथरीले रास्ते से हो कर तो कभी काँटों वाले रास्ते से हो कर।

वह चिल्लाया — "क्या मैं इसी सुनसान जंगली जगह में मर जाऊँगा और नोटो के लौर्ड की खोज पूरी नहीं होगी।"

तभी बहुत तेज़ हवा ने आसमान में से बादल उड़ा दिये और चाँद बहुत ज़ोर से चमक उठा और उस थोड़ी सी रोशनी में उसने अपनी दाँयी तरफ एक पहाड़ी देखी। पहाड़ी पर खपरैल की छत वाला एक मकान था और मकान के आगे हरे विलो के तीन पेड़ थे।

उस देख कर टोमोडाटा खुश हो गया। वह बोला "इसके लिये तो मुझे देवताओं को धन्यवाद देना चाहिये।

---

[31] Night of Yomi

बहुत जल्दी ही वह उस पहाड़ी पर चढ़ गया। मकान के दरवाजे से रोशनी बाहर आ रही थी और उसकी छत के एक छेद से धुँआ बाहर निकल रहा था। तीनों विलो के पेड़ हवा से इधर उधर हिल रहे थे।

टोमोडाटा ने अपना घोड़ा उनमें से एक पेड़ से बाँध दिया और शरण के लिये उसमें आवाज लगायी। तुरन्त ही एक बुढ़िया ने मकान का दरवाजा खोला। वह अपने कपड़ों से गरीब लग रही थी पर वे साफ सुथरे थे।

उसने पूछा — "ऐसी रात में बाहर कौन निकला है और उसे यहाँ से क्या चाहिये।"

टोमोडाटा बोला — "मैं एक थका हुआ यात्री हूँ और यहाँ इस सुनसान दलदल में रास्ता खो गया हूँ। मेरा नाम टोमोडाटा है। मैं नोटो के लौर्ड का सिपाही हूँ और उन्हीं के काम से बाहर निकला हूँ। देवताओं के नाम पर मुझ पर दया कीजिये। मुझे और मेरे घोड़े को खाना और शरण चाहिये।"

जब वह नौजवान यह सब कह रहा था तो उसके कपड़ों से बहुत सारा पानी बह निकला। वह थोड़ा सा घूमा और उसने दरवाजे के एक तरफ के खम्भे को पकड़ लिया।

बुढ़िया उस पर दया करते हुए बोली — "अन्दर आ जाइये जनाब अन्दर आ जाइये। अन्दर आ कर आग के पास बैठिये। आपका स्वागत है पर हमारे पास आपको देने के लिये कुछ मोटा

झोटा ही है। हम उसे मित्रता के नाते आपके सामने पेश करेंगे। जहॉ तक आपके घोड़े का सवाल है उसे आप मेरी बेटी को दे दें वहॉ वह सुरक्षित हाथों में रहेगा।"

यह सुन कर टोमोडाटा तेज़ी से पलटा तो उसने देखा कि उसके पीछे धुॅधली रोशनी में एक नौजवान लड़की खड़ी है और उसके घोड़े की रास उसकी बॉह पर पड़ी है। उसके कपड़े उसके चारों तरफ उड़ रहे थे और उसके लम्बे खुले हुए बाल हवा में उड़ रहे थे।

सिपाही को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह वहॉ आयी कैसे। तभी बुढ़िया ने उसे मकान के अन्दर खींच लिया और दरवाजा बन्द कर लिया।

आग के सामने घर का मालिक बैठा हुआ था। दोनों बूढ़ों ने सिपाही के लिये अपनी तरफ से जितना भी अच्छा हो सकता था किया। उन्होंने उसे सूखे कपड़े दिये चावल की गरम शराब दी और जल्दी से अच्छा खाना भी तैयार कर दिया।

उसी समय उनकी बेटी अन्दर आयी और एक परदे के पीछे जा कर अपने बालों में कंघी करने लगी और अपने कपड़े बदलने लगी। फिर वह उसके पास आ कर उसके लिये इन्तजार करने लगी।

उसने घर के कते हुए सूत की नीले रंग की पोशाक पहन रखी थी। उसके पॉव नंगे थे। उसके बाल न तो बॅधे हुए ही थे और न किसी ढंग से व्यवस्थित ही थे। वे उसके चिकने गालों पर पड़े हुए

थे सीधे, लम्बे, काले, उसके घुटनों तक। वह पतली दुबली और शानदार दिखायी दे रही थी।

टोमोडाटा को लगा कि वह पन्द्रह साल की रही होगी और जितनी भी लड़कियाँ उसने अब तक देखी थीं उन सबमें सुन्दर थी।

काफी देर बाद वह उसके प्याले में शराब पलटने के लिये उसकी तरफ को झुकी। जब उसने अपना सिर झुकाया तो उसने अपने दोनों हाथों से वाइन की बोतल पकड़ी हुई थी।

टोमोडाटा उसकी तरफ देखने के लिये घूमा। जब उसने उसके प्याले में शराब डाल दी और वाइन की बोतल रख दी तब उससे उसकी नजरें मिलीं। टोमोडाटा सीधे उसकी आँखों के बीच में देखता रहा क्योंकि उस समय वह अपने लौर्ड की चेतावनी भूल गया था।

उसने पूछा — "लड़की तुम्हारा नाम क्या है।"

लड़की ने कहा — "वे मुझे हरी विलो कहते हैं।"

वह बोला — "अरे यह तो दुनियाँ का सबसे सुन्दर नाम है।" कह कर वह फिर उसकी आँखों के बीच में देखने लगा और क्योंकि वह इस तरह से उसे बहुत देर तक घूरता रहा तो उसका चेहरा ठोड़ी से माथे तक गुलाब जैसा गुलाबी पड़ गया। हालाँकि वह हँस रही थी पर उसकी आँखों में आँसू थे।

"ओह मैं तो नोटो के लौर्ड के लिये खोज में निकला हूँ।"

फिर उसने एक छोटा सा गीत बनाया और गाया—

"ओ लम्बे बालों वाली लड़की
क्या तुम जानती हो कि लाल सुबह होने पर मुझे जाना होगा
क्या तुम मेरे दूर जाने की इच्छा करोगी
ओ निर्दयी लम्बे बालों वाली लड़की कहो
ओ निर्दयी लम्बे बालों वाली लड़की
अगर तुम चाहती हो कि लाल सुबह होने पर मैं चला जाऊँ
तो तुम इतना क्यों शरमा रही हो

और हरी विलो लड़की ने जवाब दिया —
सुबह तो आयेगी चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ
मुझे यहाँ अकेला न छोड़ो कभी मत जाओ
मेरी आस्तीन मेरी शरम को छिपा लेगी
सुबह तो आयेगी चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ
मुझे अकेला मत छोड़ो मत जाओ
मैं अपनी लम्बी आस्तीनें ऊपर उठाती हूँ

टोमोडाटा बोला "ओह हरी विलो ओह हरी विलो।"

उस रात टोमोडाटा आग के सामने लेटा रहा बिल्कुल शान्त पर आँखें खोले हुए। हालाँकि वह बहुत थका हुआ था फिर भी वह बिल्कुल भी नहीं सो सका।

पर अपनी नौकरी के नियमों के अनुसार उसे ऐसा सोचना भी नहीं चाहिये था जो उसके दिल के ऊपर बहुत बोझ डाले हुआ था। उसने सोचा कि उसे नोटो के लौर्ड के प्रति वफादारी बरतनी ही चाहिये।

अगले दिन जैसे ही दिन निकला वह उठा। उसने अपने बूढ़े मेजबान पर निगाह डाली और उसके पास सोने से भरा हुआ एक बटुआ रख दिया। लड़की और उसकी माँ परदे के पीछे लेटी थीं।

टोमोडाटा ने अपने घोड़े पर जीन कसी लगाम लगायी चढ़ा और धीरे धीरे वहाँ से चल दिया। तूफान छँट गया था और इस समय बिल्कुल शान्ति थी स्वर्ग की तरह। हरी घास और पत्ते गीले थे और चमक रहे थे। आसमान साफ था और रास्ता भी पतझड़ के फूलों से चमक रहा था पर टोमोडाटा दुखी था।

जब धूप निकल आयी तो वह बोला "ओह हरी विलो" दोपहर हुई तो वह बोला "ओह हरी विलो" और जब शाम हो गयी तब भी वह बोला "हरी विलो"।

वह रात उसने एक सुनसान मन्दिर में गुजारी। वह जगह इतनी पवित्र थी कि सब कुछ भूल कर वह रात उसने वहाँ बड़ी शान्ति में गुजारी। वह रात भर सोता रहा।

सुबह को उठ कर वह हाथ मुँह धोने के इरादे से एक ठंडे पानी की नदी तक जाने लगा जो पास में ही बह रही थी तो मन्दिर की देहरी पर ही रुक गया।

वहाँ तो हरी विलो लेटी हुई थी – एक पतली सी चीज़ की तरह। उसका मुँह नीचे की तरफ था। उसके काले बाल उसके इधर उधर थे। उसने अपना एक हाथ उठाया और टोमोडाटा की

आस्तीन पकड़ ली और बड़ी दयनीय आवाज में बोली "मेरे मालिक मेरे मालिक।"[32]

बिना एक शब्द कहे उसने हरी विलो को अपनी बॉहों में उठा लिया और अपने सामने अपने घोड़े पर बिठा लिया। फिर वे दोनों सारा दिन चलते रहे।

ऐसा बहुत कम हुआ कि उन्होंने सड़क की तरफ देखा क्योंकि सारे रास्ते वे एक दूसरे की ऑखों में देखते रहे। उन्हें गरमी या सरदी की कोई चिन्ता नहीं थी। न उनको धूप लगी न उन्हें बारिश की चिन्ता लगी। न उन्हें सच का पता था न झूठ का।

वे कुछ भी नहीं सोच रहे थे। न पवित्रता के बारे में न नोटो के काम के बारे में न किसी इज़्ज़त के बारे में न दुनियॉ की परेशानियों के बारे में। उनको बस केवल एक ही चीज़ का पता था और वह था प्यार कैसे किया जाये।

आखिर वे एक अनजान शहर में आ पहुॅचे जहॉ आ कर वे ठहर गये। टोमोडाटा की कमर की पेटी में बहुत सारा सोना और जवाहरात रखे हुए थे सो उन्होंने एक मकान ढूॅढा जो सफेद लकड़ी का बना हुआ था।

उस मकान में बहुत सुन्दर सुन्दर चटाइयॉ बिछी हुई थीं। उसके हर कमरे में बागीचे के झरने की आवाज सुनी जा सकती थी। और चिड़ियें इधर उधर फड़फड़ा रही थीं।

[32] My Lord, My Lord.

यहाँ उन्होंने तीन साल हँसी खुशी बिताये। ये तीन साल टोमोडाटा और हरी विलो के लिये सुगंधित फूलों के हार की तरह थे।

तीसरे साल के पतझड़ में एक दिन दोनों बागीचे में घूमने गये क्योंकि वे पूर्णमासी का चाँद निकलते देखना चाहते थे। जब वे उसे देख रहे थे तो अचानक ही हरी विलो ने काँपना शुरू कर दिया।

टोमोडाटा बोला — "प्रिये तुम तो काँप रही हो। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। रात की हवा ठंडी है। तुम मेरे पास आ जाओ।" कह कर उसने हरी विलो को अपने पास खींच लिया।

यह देख कर हरी विलो दयनीय आवाज में बहुत ज़ोर से चिल्लायी। चिल्लाने के बाद वह फिर रोना चाहती थी पर रो नहीं सकी। उसने अपना सिर टोमोडाटा की छाती पर रख दिया और बोली — "टोमोडाटा मेरे लिये प्रार्थना करो मैं मर रही हूँ।"

"प्रिये तुम ऐसा मत कहो। तुम बस थक गयी हो इसलिये बेहोश हो रही हो।"

कह कर वह उसे नदी के पास ले गया जहाँ आइरिस के फूल तलवार की तरह से खिल रहे थे और कमल की पत्तियाँ ढाल जैसी लग रही थीं।

वहाँ पहुँच कर उसने हरी विलो का माथा पानी से धोया और उससे कहा — "प्रिये ऊपर देखो और मुझे बताओ कि क्या बात है।"

वह दुखी हो कर बोली — “उन्होंने मेरा पेड़ काट दिया है। तुम्हें याद है न वह हरा विलो का पेड़।”

और यह कह कर वह उसके हाथों से फिसल कर उसके पैरों में गिर पड़ी। टोमोडाटा भी जमीन पर गिर पड़ा पर उसके हाथ केवल उसके रेशमी कपड़े ही हाथ लगे – चमकीले रंग के गरम और खुशबू वाले और लाल रंग की सैन्डिलें।

बाद के सालों में टोमोडाटा एक धार्मिक आदमी बन गया और मन्दिर मन्दिर घूमता फिरा। उसके पैर दर्द करने लगे थे पर वह एक संत बन गया था।

एक बार आधी रात को उसने अपने आपको एक दलदल में पाया। उसके दॉये हाथ को एक पहाड़ी थी और उस पहाड़ी पर थे एक दुखी मकान के अवशेष।

उसके दरवाजे का ताला टूट गया था तो हवा से उसका दरवाजा बार बार खुल भिड़ रहा था। उसके कब्जे में से आवाज हो रही थी। उस मकान के आगे तीन पुराने कटे हुए विलो के पेड़ के तने खड़े थे।

टोमोडाटा वहॉ बहुत देर तक शान्त चुपचाप खड़ा रहा फिर उसने अपने आप ही गाया —

ओ लम्बे बालों वाली लड़की
क्या तुम जानती हो कि लाल सुबह होने पर मुझे जाना होगा
क्या तुम मेरे दूर जाने की इच्छा करोगी
ओ निर्दयी लम्बे बालों वाली लड़की कहो

ओ निर्दयी लम्बे बालों वाली लड़की
अगर तुम चाहती हो कि लाल सुबह होने पर मैं चला जाऊँ
तो तुम इतना क्यों शरमा रही हो

फिर वह अपने आप ही बोला — "उफ़ कितनी बेवकूफी का गाना था यह। देवता लोग मुझे माफ करें। मुझे तो इसके ऊपर "मरे हुओं का पवित्र सूत्र"[33] पढ़ना चाहिये था।

[33] Holy Sutra For the Dead.

11 जादू की केटली[34]

जापान के ठीक बीच में पहाड़ों में एक बूढ़ा एक छोटे से मकान में रहता था। उसको अपने घर पर बड़ा गर्व था। वह अपनी सफेद चटाइयों की और सुन्दर कागज लगी दीवारों की प्रशंसा करते नहीं थकता था जो गरमी के मौसम में पीछे खिसक जाती थीं ताकि पेड़ों और फूलों की खुशबू अन्दर आ सके।

एक दिन वह खड़ा खड़ा पहाड़ों के दूसरी तरफ देख रहा था कि उसने अपने पीछे कमरे में खनखनाहट की आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसने एक कोने में एक लोहे की केटली देखी जिसने शायद कई सालों से दिन की रोशनी नहीं देखी थी।

बूढ़े की समझ में नहीं आया कि वह केटली वहॉ आयी कहॉ से पर उसने उसे उठाया और उसे ध्यान से देखा। जब उसने यह निश्चय कर लिया कि वह साबुत थी तो उसने उसे साफ किया और उसे अपनी रसोई में ले गया।

उसने मुस्कुराते हुए अपने मन में कहा “यह तो अच्छी किस्मत की बात है। एक अच्छी केटली की कीमत भी बहुत होती है पर जरूरत पड़ने पर कम से कम यह एक दूसरी केटली तो है ही।

[34] The Magic Kettle. Taken from Andrew Lang’s Fairy Books. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/the-magc-kettle/

मेरी अपनी केटली तो अब काफी पुरानी हो गयी है। उसकी तली में से अब तो पानी भी रिसने लगा है।" कह कर उसने आग पर से अपनी पुरानी केटली उतारी और उसकी जगह पर पानी भर कर नयी केटली चढ़ा दी।

जैसे ही केटली का पानी गरम हुआ कि एक अजीब घटना घटी। बूढ़ा जो उसके पास ही खड़ा हुआ था उसे लगा कि वह सपना देख रहा है।

पहले तो केटली के हैन्डिल की शक्ल ने बदलना शुरू किया वह एक सिर बन गयी। फिर उसकी टोंटी एक पूँछ बन गयी। उसके बाद उसके शरीर में से चार पंजे निकल आये।

इस तरह कुछ ही देर में बूढ़े ने देखा कि वहॉ तो कोई केटली नहीं थी वह तो एक टुनूकी[35] बन गया था और वह टुनूकी आग पर से कूद कर एक बिल्ली के बच्चे की तरह दीवार पर छत पर कूद रहा था।

बूढ़ा बहुत गुस्से में भर कर उसे देख रहा था कि वह कहीं उसके सुन्दर घर की दीवारों को खराब न कर दे। उसने सहायता के लिये पड़ोसी को पुकारा। किसी तरह दोनों ने मिल कर उसे पकड़ लिया और एक लकड़ी के बक्से में बन्द कर दिया।

[35] Tanuki (pronounced as Tu-noo-kee) is a small badger-like animal like a raccoon-dog. It's an actual animal in Japan, but it has also taken on mythological qualities as a shapeshifter trickster. See its picture above.

उसे पकड़ने में वे थक गये थे सो वे एक चटाई पर बैठ गये और सोचने लगे कि इस शरारती जानवर से कैसे छुटकारा मिले। काफी सोच विचार के बाद उन्होंने निश्चय किया कि उन्हें उसे बेच देना चाहिये।

उन्होंने पास में से गुजरते हुए एक लड़के को बुलाया और उससे एक व्यापारी जिसका नाम जिम्मू[36] था बुला लाने के लिये कहा।

जिम्मू वहाँ आया तो बूढ़े ने उससे कहा कि वह एक चीज़ से छुटकारा पाना चाहता है कह कर उसने उस लकड़ी के बक्से का ढक्कन खोल दिया जिसमें उसने टुनूकी को बन्द कर रखा था।

पर उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें तो कोई टुनूकी नहीं था। उसमें तो केवल वह केटली रखी हुई थी जो उसने अपने कमरे के कोने में पायी थी।

यह बड़ी अजीब सी बात थी पर बूढ़े को मालूम था कि जब उसने केटली आग पर रखी थी तब क्या हुआ था इसलिये वह अब उस केटली को अपने पास बिल्कुल भी रखना नहीं चाहता था। सो थोड़ा बहुत सौदा कर के बूढ़े ने उस केटली को जिम्मू को दे दिया।

जिम्मू उस केटली को ले कर अभी बहुत दूर नहीं गया था कि उसे लगा कि केटली उसके लिये भारी और और भारी होती जा रही थी। जब तक वह उसे ले कर घर पहुँचा वह बहुत थक चुका था

[36] Jimmu

सो उसने वह केटली अपने कमरे में एक कोने में रख दी और उसको वहाँ रख कर भूल गया।

आधी रात को उस कोने में से जहाँ उसने केटली रखी थी एक बहुत ज़ोर के शोर से उसकी आँख खुल गयी। वह यह देखने के लिये बिस्तर से उठा कि क्या हो रहा है पर वहाँ तो कुछ भी नहीं था सिवाय केटली के और वह भी चुपचाप बैठी हुई थी।

उसने सोचा कि शायद वह सपना देख रहा होगा सो वह फिर से सो गया पर वैसे ही शोर से फिर दोबारा जाग गया। वह कूदा और एक लैम्प की रोशनी के सहारे जिसे वह हमेशा जलता हुआ रखता था फिर से उसी कोने में पहुँच गया जिसमें उसने वह केटली रखी थी।

उसने देखा कि वह केटली फिर से टुनूकी बन गयी है और वह टुनूकी अपनी पूँछ के पीछे गोल गोल भाग रहा है। जब वह उससे थक गया तो वह अपने छज्जे पर पहुँचा और वहाँ पहुँच कर वह अपने दिमाग की शान्ति के लिये कई बार लुढ़का।

व्यापारी बेचारा बहुत परेशान था कि वह इस जानवर का क्या करे। वह केवल सुबह के समय ही कुछ देर के लिये सो सका। पर जब वह सुबह उठा तो वहाँ कोई टुनूकी नहीं था। वहाँ तो केवल वही पुरानी केटली थी जिसे उसने रात को वहाँ रखी थी।

सुबह को अपने घर की सफाई करने के बाद वह यह कहानी बताने के लिये अपने पड़ोसी के पास गया। पड़ोसी ने उसकी बात

शान्तिपूर्वक सुनी और उसे सुन कर वह उतना आश्चर्यचकित नहीं हुआ जितना कि जिम्मू ने सोचा था।

क्योंकि पड़ोसी को याद आया कि उसने अपनी जवानी के दिनों में ऐसी आश्चर्यजनक केटली के बारे में सुना था। उसने जिम्मू को राय दी कि वह उसे ले कर चारों तरफ घूमे और उसे लोगों को तमाशे की तरह दिखाये तो वह जरूर ही एक अमीर आदमी बन जायेगा।

पर ध्यान रहे कि वह पहले टुनूकी से इस बात की इजाज़त ले ले और साथ में कुछ जादुई रस्में भी कर ले ताकि वह लोगों को देख कर डर कर भागे नहीं।

जिम्मू ने अपने पड़ोसी को उसकी सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसको शब्द ब शब्द माना भी। टुनूकी की मरजी माँगी गयी एक जगह तैयार की गयी और उसके सामने एक नोटिस लगाया गया जिसमें लोगों को वहाँ आने और एक केटली को एक जानवर में बदलने की घटना को देखने के लिये बुलाया गया था।

बहुत सारे लोग उसे देखने के लिये वहाँ आये। केटली को बहुत सारे लोगों के हाथ में दिया गया जिसे उन्होंने अन्दर बाहर दोनों तरफ से अच्छी तरह से देखा भाला।

उसके बाद जिम्मू ने उसे एक ऊँची जगह रख दिया और उससे कहा कि वह एक टुनूकी में बदल जाये। उसके यह कहते ही उसका

हैन्डिल एक सिर में बदलने लगा और उसकी पूँछ एक टोंटी में और फिर उसके चार पंजे भी निकल आये।

जिम्मू बोला — "नाचो।"

और टुनूकी ने नाचना शुरू कर दिया।

वह पहले एक तरफ नाचा फिर दूसरी तरफ नाचा। कुछ ही देर में देखने वाले भी अपने आपको रोक न सके और वे सब खुद भी नाचने लगे।

उसने बड़ी सुन्दरता से पंखा नाच नाचा फिर उसने "छाया नाच" नाचा और फिर उसने छतरी नाच नाचा।[37] ऐसा लग रहा था जैसे वह हमेशा के लिये ऐसे ही नाचता ही रहेगा। और वह ऐसा करता भी अगर जिम्मी ने उसे और नाचने से न रोक दिया होता कि अब यह शो बन्द होता है।

दिनों दिन उसकी शो करने की जगह पूरी भरी रहती कि उसमें घुसना तक मुश्किल था। जो उसके पड़ोसी ने कहा था वही हुआ। जिम्मू अब एक अमीर आदमी हो गया था।

फिर भी वह खुश नहीं था क्योंकि वह एक ईमानदार आदमी था। उसको लग रहा था कि जितना धन उसने केटली से कमाया था उसमें से उसका कुछ हिस्सा उसे अपने उस दोस्त को भी देना चाहिये जिससे उसने केटली खरीदी थी।

[37] Fan Dance, Shadow Dance and Umbrella Dance

सो एक दिन उसने सौ सोने के सिक्के उस केटली में रखे और एक बार फिर से उसे अपनी बाँह पर लटका कर उसके बेचने वाले के पास गया।

उसने उस केटली को उसे देते हुए और अपनी कहानी सुनाते हुए उससे कहा कि वह उसे अब और नहीं रख सकता इसलिये वह अब उसे उसके पास वापस ले आया है। उसके अन्दर उसने उसके किराये की कीमत के तौर पर सौ सोने के सिक्के रख दिये हैं।

बूढ़े ने जिम्मू को धन्यवाद दिया और कहा कि इस दुनियाँ में बहुत कम लोग इतने ईमानदार होते हैं जितना कि वह था।

इस तरह से वह केटली दोनों के लिये अच्छी किस्मत ले कर आयी। जब तक वे दोनों मरे तब तक उनके साथ सब कुछ अच्छा रहा। सभी लोग उनका आदर करते रहे।

12 नीच टुनूकी को सजा कैसे मिली[38]

शिकारियों ने जंगल में बहुत दिनों तक शिकार किया और इतना शिकार किया कि अब उस जंगल में कोई जंगली जानवर रह ही नहीं गया था।

तुम जंगले के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बिना किसी हिरन सूअर या खरगोश को देखे या फाख्ताओं की आवाज सुने आराम से जा सकते थे। अगर वहाँ ये सब मरे नहीं थे तो कहीं और चले गये थे।

अब वहाँ केवल तीन प्राणी ही ज़िन्दा थे और वे पहाड़ों के ऊपर जंगल के घने से घने हिस्से में छिपे हुए थे। इनमें से एक भूरे फ़र और लम्बी पूँछ वाला टुनूकी उसकी पत्नी लोमड़ी जो उसके अपने परिवार की ही थी और उनका छोटा सा बेटा।

लोमड़ी और टुनूकी बहुत ही चालाक थे और जादू में बहुत ही होशियार थे और इसी तरह से वे अपने दूसरे दोस्तों की बदकिस्मती से बच कर निकल आये थे।

अगर वे धनुष की टंकार सुनते या फिर भाले की चमक देखते चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न होती वे बिल्कुल बिना हिले पड़ जाते और अपनी छिपने वाली जगह से बिल्कुल भी नहीं निकलते

---

[38] How Tanuki Was Punished. Taken from Andrew Lang's Fairy Books. Taken from the web Site : https://fairytalez.com/wicked-tanuki-punished/

जब तक कि उन्हें भूख बहुत ज़्यादा नहीं लगती या फिर उनका शिकार कोई बहुत ही स्वाददार नहीं होता।

वे आपस में कहते "हम इतने भी बेवकूफ नहीं हैं जो अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डालें।"

पर एक दिन ऐसा भी आया जब उनकी सारी सावधानियॉ बरतने के बावजूद वे भूख से मरने वाले हो गये क्योंकि अब उनके पास कोई खाना नहीं था। खाने के लिये अब उन्हें कुछ तो करना था पर उन्हें नहीं मालूम था कि वे क्या करें।

अचानक टुनूकी के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया विचार आया। उसने अपनी पत्नी से कहा — "मेरे दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया विचार आया है। मैं मरने का बहाना कर के पड़ जाऊॅगा और तू आदमी का रूप धारण कर ले।

फिर तू मुझे गॉव बेचने के लिये ले जाना। मेरे लिये एक खरीदार ढूँढने में तुझे कोई परेशानी नहीं होगी। टनूकियों की खाल की तो हमेशा ही लोगों को चाहिये। उस पैसे से तू कुछ खाना खरीद लाना और वापस घर आ जाना। मैं किसी तरह से उससे बच कर निकल आऊॅगा। तू मेरी चिन्ता मत करना।"

लोमड़ी यह सुन कर बहुत खुश हो गयी और उसने अपने पंजे आपस में कई बार रगड़े। वह बोली — "अगली बार मैं मर जाऊॅगी और तू मुझे बेच आना।"

उसके बाद उसने अपने आपको एक आदमी में बदला और टुनूकी के अकड़े हुए शरीर को ले कर गाँव चल दी। उसको टुनूकी का शरीर कुछ भारी लगा पर वह उसे जंगल में चल कर कभी नहीं जाने दे सकती थी और उसके पहचाने जाने का खतरा भी कभी मोल नहीं ले सकती थी।

जैसा कि टुनूकी ने पहले ही कह दिया था उसके खरीदार तो बहुत थे सो लोमड़ी ने उसे उस आदमी को बेच दिया जिसने उसे उसकी सबसे ज़्यादा कीमत दी। पति को बेच कर उससे आये पैसे ले कर जल्दी से कुछ खाना खरीदने के इरादे से वह बाजार पहुँची।

उधर टुनूकी का खरीदार टुनूकी को ले कर घर पहुँचा। उसने उसे तो घर के एक कोने में फेंका और बाहर चला गया। जब टुनूकी ने देखा कि वह घर में अकेला है वह बड़ी सावधानी से खिड़की के पास तक पहुँचा।

वह सोच रहा था कि यह कितनी खुशकिस्मती की बात थी कि वह लोमड़ी नहीं था वरना लोमड़ी तो उस पर चढ़ ही नहीं पाती। वह खिड़की पर चढ़ कर बाहर निकल गया और बाहर जा कर एक गड्ढे में छिप गया।

वह अँधेरा होने तक वहीं छिपा रहा और फिर अँधेरा होते ही वहाँ से कूदता हुआ जंगल भाग गया।

जब तक खाना चला तब तक तीनों किसी बादशाह की तरह बहुत खुश रहे। पर फिर एक दिन ऐसा भी आया जब रसोईघर का भंडारघर बिल्कुल खाली हो गया।

लोमड़ी बोली — "इस बार मरने की मेरी बारी है।"

सो इस बार टुनूकी एक किसान बन गया उसने अपनी पत्नी का मरा हुआ शरीर अपने कन्धे पर लटकाया और गॉव की तरफ चल दिया। वहॉ टुनूकी को लोमड़ी को खरीदने वाला कोई नहीं मिल रहा था।

पर जब वे सौदा कर रहे थे तो टुनूकी को एक बहुत ही नीच विचार आया कि अगर लोमड़ी वाकई मर जाये तो उसके और उसके बेटे के लिये बहुत दिनों तक घर में खाना रहेगा।

सो उसने उसे बेचने के बाद पैसे तो अपनी जेब में रखे और फिर खरीदार से फुसफुसा कर कहा — "यह लोमड़ी सचमुच में मरी हुई नहीं है सो अगर तुमने इसकी ठीक से परवाह नहीं की तो यह भाग जायेगी।"

खरीदार से इस बात को दोबारा कहने की जरूरत नहीं थी। उसने बेचारी लोमड़ी के सिर में एक घूॅसा मारा और लोमड़ी वहीं की वहीं मर गयी। नीच टुनूकी वहॉ से पास की एक दूकान पर चला गया।

पहले की बात है कि वह अपने बेटे को बहुत प्यार करता था पर अपनी पत्नी को धोखा देने के बाद से ही वह बिल्कुल बदल गया। अब उसने उसे एक कौर भी देना बन्द कर दिया था।

और अगर उसे गिरियॉ और बैरीज़ खाने के लिये नहीं मिलतीं तो वह बेचारा छोटा बच्चा अब भूखा रहता। साथ में वह इस इन्तजार में भी था कि उसकी मॉ वापस आयेगी।

कुछ समय बाद अब उसे सच का पता चलने लगा था कि उसकी मॉ अब कभी वापस नहीं आयेगी पर वह इस बात में बहुत सावधान था कि टुनूकी को यह बात पता न चल जाये कि वह अपनी मॉ के बारे में सचाई जान गया है।

हालॉकि अपने दिमाग में सुबह से शाम तक वह प्लान बनाता रहता कि किस तरह से वह अपनी मॉ का बदला ले।

एक सुबह जब छोटा टुनूकी अपने पिता के साथ बैठा हुआ था तो एकदम से उसे याद आया कि उसकी मॉ ने उसे अपना सारा जादू उसे सिखाया था। वह अपने पिता जैसा ही जादू कर सकता था या फिर शायद उससे भी अच्छा कर सकता था।

सो अचानक वह टुनूकी से बोला — "पिता जी मैं भी उतना ही अच्छा जादूगर हूॅ जितने आप।"

यह सुनते ही टुनूकी की रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी लहर दौड़ गयी और वह कॉप गया। हालॉकि उसने यह दिखाया नहीं और उसे हॅसी में टाल दिया पर छोटा टुनूकी अपनी बात पर अड़ा रहा।

आखिर पिता को कहना ही पड़ा कि "ठीक है। अगर ऐसा है तो मुकाबला हो जाये।"

छोटा टुनूकी बोला — "ठीक है आप कोई भी शक्ल बदल लें और मैं आपको पहचान जाऊँगा। मैं उस पुल पर चला जाऊँगा जिस पर से हो कर गाँव की तरफ जाते हैं और आप अपने आपको किसी भी चीज़ में बदल लें जिसमें भी आप चाहें। और मैं आपको किसी भी रूप में पहचान जाऊँगा।"

कह कर छोटा टुनूकी उस ओर चला गया जिस तरफ उसके पिता ने इशारा किया था। पर अपनी शक्ल बदलने की बजाय वह पुल के एक कोने में छिप गया जहाँ से वह तो सबको देख सकता था पर उसे कोई नहीं देख सकता था।

उसे वहाँ इन्तजार करते हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि उसने अपने पिता को आते देखा। वह आ कर पुल के बीच में खड़ा हो गया था। जल्दी ही वहाँ का राजा अपने दरबारियों और सिपाहियों के साथ आया।

पिता ने सोचा कि "ओह। अब उसने अपने आपको राजा के रूप में बदल लिया है और वह समझता है कि मैं उसे पहचान नहीं पाऊँगा कि उसने राजा का रूप रख लिया है।"

यह कहते हुए पिता टुनूकी तुरन्त ही उसके ऊपर कूद पड़ा — "मैं अपनी शर्त जीत गया। तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते।"

पर असल में तो उसने खुद ने अपने बेटे को धोखा दिया था। सिपाहियों ने यह सोचते हुए कि राजा के ऊपर हमला हुआ है टुनूकी को उसकी टॉगों से पकड़ लिया और उसे नदी में फेंक दिया।

छोटे टुनूकी ने यह सब अपनी ऑखों से देखा और इस बात पर खुशी मनायी कि उसने अपनी मॉ की हत्या का बदला ले लिया है। उसके बाद वह जंगल चला गया और अगर वह वहॉ अकेला महसूस न कर रहा होगा तो वह अभी भी वहीं रह रहा होगा।

13 टुनूकी का कत्ल[39]

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बड़ी नदी के पास और दो पहाड़ों के बीच एक बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके मकान के चारों तरफ बहुत घना जंगल था। पर उस जंगल का कोई भी रास्ता या कोई भी पेड़ उस बूढ़े से अनजाना नहीं था। वह उन सबको बचपन से जानता था।

एक बार घूमते हुए उसने एक बड़े खरगोश[40] को अपना दोस्त बना लिया था। एक बार वे एक साथ घूम रहे थे कि दोनों को भूख लगी तो दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ कर आराम करने लगे और खाना खाने लगे।

टुनूकी ने यह अजीब दोस्ती देखी। वह एक नीच झगड़ालू जानवर था जो किसानों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता था और कभी भी उन्हें नुकसान पहुँचाने से बाज़ नहीं आता था।

अब बार बार वह किसान के मकान में जाता और वहाँ उसने जो सबसे अच्छा खाना बड़े खरगोश के लिये रखा होता वह उसे अगर अच्छा लगता तो वह खुद खा लेता और नहीं तो उसके टुकड़े टुकड़े कर के बिखेर देता ताकि उसे कोई और न खा सके।

---

[39] The Slaying of Tanuki. Taken from Andrew Lang's Fairy Books. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/the-slaying-of-the-tanuki/

[40] Translated for the word "Hare". Hare is a big size rabbit. See its picture above.

आखिर किसान का धीरज छूट गया। उसने सोच लिया कि वह टुनूकी का खून कर के ही रहेगा। सो कई दिनों तक किसान छिपा हुआ रहा और टुनूकी के आने का इन्तजार करता रहा।

एक दिन जब टुनूकी किसान के घर केवल यह सोचता हुआ जा रहा था कि वह उसके घर से खाना चुरायेगा और वहाँ से भाग लेगा पर ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही वह किसान के घर में घुसा कि किसान उसके ऊपर टूट पड़ा और उसने उसके चारों पैर कस कर बाँध दिये ताकि वह हिल भी न सके।

उसके बाद वह अपने दुश्मन को खुशी खुशी अपने घर खींच कर ले चला। वह सोचता जा रहा था कि आखिर उसने इस सबसे ज़्यादा परेशान करने वाले जानवर को पकड़ ही लिया।

घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी से कहा — "आज अपनी शरारतों की कीमत इसे अपनी जान दे कर चुकानी पड़ेगी। हम पहले इसे मारेंगे फिर इसे खायेंगे।"

इतना कह कर उसने टुनूकी को उसका सिर नीचे कर के उलटा टाँग दिया और आग जलाने के लिये लकड़ी लाने चला गया। इस बीच पत्नी ओखली के पास मूसल से चावल कूटती खड़ी रही। मूसल भारी था सो कूटते कूटते उसके हाथ दर्द करने लगे थे।

अचानक उसने कोने में से कराहने की आवाज सुनी। यह आवाज सुन कर उसने अपना काम रोक दिया और चारों तरफ

देखने लगी कि वह आवाज कहाँ से आ रही है। और बस यही तो वह शैतान चाहता था।

उसने तुरन्त ही बहुत नम्रता की चादर ओढ़ी और किसान की पत्नी से अपने बन्धन खोलने की विनती की जो उसे बहुत अधिक तकलीफ दे रहे थे।

किसान की पत्नी को उस पर दया तो आयी पर वह उसे आजाद करने के लिये तैयार नहीं थी क्योंकि वह जानती थी कि अगर उसने टुनूकी के बन्धन खोल दिये तो उसका पति उससे बहुत नाराज होगा।

फिर भी टुनूकी निराश नहीं हुआ और यह देख कर कि पत्नी का दिल कुछ मुलायम हो गया था उसने उससे नये तरीके से विनती करनी शुरू कर दी।

उसने कहा — "मैंने आपसे केवल अपने बंधन खोलने के लिये कहा है। मैं यहाँ से बच कर भागूँगा नहीं। और अगर एक बार मेरे बंधन खोल दिये गये तो मैं आपकी आपके चावल कूटने में भी सहायता कर सकता हूँ।"

वह कहता ही गया — "फिर आप कुछ देर आराम कर सकती हैं क्योंकि चावल कूटने का काम तो काफी थकाने वाला काम है। और यह काम कमजोर स्त्रियों के लिये तो बिल्कुल भी नहीं है।"

टुनूकी के ये आखिरी शब्द किसान की पत्नी के दिल को छू गये और उसने उसके बंधन खोल दिये। बेचारी बेवकूफ स्त्री। जैसे ही

टुनूकी के बंधन खुले कि उसने तो स्त्री को पकड़ लिया। उसके सारे कपड़े फाड़ डाले और उसे ओखली में डाल दिया।

कुछ मिनटों में ही टुनूकी ने उसको ऐसे कूट दिया जैसे कि बढ़िया चावल। पर अभी भी टुनूकी सन्तुष्ट नहीं था। उसने चूल्हे पर एक बरतन रखा और किसान के लिये उसी की पत्नी के मॉस का खाना बनाने का निश्चय किया।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो टुनूकी ने दरवाजे के बाहर झॉका तो उसने देखा कि बूढ़ा जंगल से लकड़ियॉ ले कर आ रहा है। यह देख कर टुनूकी ने उसकी पत्नी के कपड़े पहन लिये और क्योंकि वह एक जादूगर भी था तो उसने उसकी पत्नी की शक्ल भी बना ली।

उसने किसान से लकड़ी का गट्ठर लिया और चूल्हे में आग जला दी और बहुत जल्दी ही खाने में बहुत सारी चीज़ें पका कर रख दीं। किसान बहुत भूखा था सो वह अपने दुश्मन के बारे में सब कुछ भूल गया।

पर टुनूकी ने जब देखा कि खा पी कर उसका पेट भर गया है और अब वह अपने बन्दी के बारे में सोच रहा है उसने जल्दी से एक दरवाजे के पीछे जा कर अपने कपड़े हिलाये और अपनी असली शक्ल में आ गया।

तब उसने किसान से कहा — "तुम तो किसी जानवर को पकड़ने के लिये और फिर उसको मारने के बारे में बात करने के

लिये बहुत ही अच्छे किस्म के आदमी हो। अब तुम अपने ही जाल में पकड़े गये हो।

अभी अभी जो तुमने खाया वह तुम्हारी अपनी पत्नी का मॉस था। और अगर तुम उसकी हड्डियॉ देखना चाहते हो तो वे फर्श के नीचे हैं।" यह कह कर वह जंगल की तरफ चला गया।

बूढ़ा किसान बेचारा तो डर के मारे ठंडा पड़ गया और कॉपने लगा। वह तो जहॉ खड़ा था वहीं का वहीं जमा खड़ा रह गया। जब वह कुछ होश में आया तो उसने अपनी मरी हुई पत्नी की हड्डियॉ समेटी और उन्हें बागीचे में गाड़ दिया।

फिर उसने अपनी पत्नी की कब्र पर यह कसम खायी कि वह टुनूकी से अपनी पत्नी को मारने का बदला जरूर लेगा।

जब सब कुछ खत्म हो गया तो वह अपने मकान में अकेला बैठ गया और बहुत देर तक रोता रहा और सोचता रहा कि वह अपनी ज़िन्दगी में यह कभी नहीं भूल सकता कि उसने अपनी पत्नी को खाया है।

जब वह इस तरह रो रहा था और विलाप कर रहा था उसका दोस्त बड़ा खरगोश उधर से गुजर रहा था। उसने यह शोर सुना तो उसके कान खड़े हो गये। उसने जल्दी ही अपने बूढ़े दोस्त किसान की आवाज पहचान ली।

उसने सोचा कि पता नहीं उसे क्या हुआ है तो उसने उसके दरवाजे में से अन्दर झॉका और उससे पूछा कि क्या मामला था वह

क्यों रो रहा था। ऑखों में ऑसू भर कर रुँधे गले से उसने अपनी सारी कहानी उसे सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर बड़ा खरगोश उसके लिये सहानुभूति से भर उठा और टुनूकी पर बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को भरपूर तसल्ली दी और उसका बदला लेने में उसकी सहायता करने का वायदा किया।

उसने कहा — “वह झूठा दुष्ट बिना सजा के नहीं रहेगा।”

सो पहला काम तो उसने यह किया कि मरहम बनाने के लिये घर में जरूरी सामान ढूँढना शुरू किया। मरहम बना कर उसने उसके ऊपर बहुत सारी लाल मिर्च छिड़क दी। उसने उसे फिर अपनी जेब में रख लिया।

फिर उसने एक छोटी कुल्हाड़ी ली बूढ़े को विदा कहा और जंगल की तरफ चल दिया। वह टुनूकी के घर की तरफ जा रहा था। वहॉ जा कर उसने टुनूकी के घर का दरवाजा ठकठकाया।

टुनूकी के पास बड़े खरगोश के ऊपर किसी तरह का कोई शक करने का कारण नहीं था सो वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। क्योंकि उसने बड़े खरगोश के हाथ में उसने कुल्हाड़ी देखी तो वह तुरन्त ही सोचने लगा कि उसे उससे कैसे लिया जाये।

उसने सोचा कि इससे अच्छा तो यह है कि बड़े खरगोश के साथ घूमता रहे और ठीक यही बड़े खरगोश ने भी सोचा था क्योंकि वह टुनूकी की बहुत सारी हरकतों को और छोटी छोटी चालाकियों

को जानता था सो उसने उस गधे के साथ को खुशी से स्वीकार कर लिया और उसके साथ घूमने चला गया।

घूमने में वह उसके साथ सारे रास्ते नम्र ही रहा। जब वे इस तरह जंगल में घूम रहे थे बड़े खरगोश ने अचानक अपनी कुल्हाड़ी उठायी और पेड़ों की कुछ शाखाओं को काट लिया जो रास्ते के ऊपर आ रही थीं।

एक बार उसने एक बड़ा पेड़ ही काट डाला हालाँकि उसे उस पेड़ को काटने में कुल्हाड़ी को कई बार और बहुत ज़ोर से मारना पड़ा। फिर उसने कहा कि यह पेड़ उसको घर ले जाने के लिये बहुत भारी था सो वह उसे वह वहीं छोड़ जायेगा जहाँ वह था।

लालची टुनूकी को यह बात बहुत अच्छी लगी तो वह बोला कि यह बोझा तो उसके लिये कोई खास नहीं था। सो उन दोनों ने बड़ी बड़ी शाखाऐं इकट्ठी कीं और टुनूकी की पीठ पर लाद दीं।

टुनूकी उन्हें अपनी पीठ पर लाद कर शान से चल दिया। और बड़ा खरगोश उसके पीछे पीछे हल्का सा गट्ठर ले कर चल दिया।

इस समय तक बड़े खरगोश ने निश्चय कर लिया था कि उसे क्या करना था। जैसे ही वे घर आये तो बड़े खरगोश ने उस लकड़ी के गट्ठर में आग लगा दी जो टुनूकी की पीठ पर रखा था। टुनूकी इस समय कुछ और सोच रहा था सो इस तरफ उसका ध्यान ही नहीं गया।

बस उसने बड़े खरगोश से यही पूछा कि उस कड़क कड़क का क्या मतलब था जो उसने अभी सुनी। बड़ा खरगोश बोला — "कुछ नहीं यह तो पत्थरों के लुढ़कने की आवाज थी जो पहाड़ से लुढ़क रहे हैं।" टुनूकी यह सुन कर सन्तुष्ट हो गया और फिर उसने कुछ और नहीं पूछा।

उसे पता ही नहीं चला कि वह कड़क कड़क की आवाज तो उसके ऊपर रखे लकड़ी के गट्ठर के जलने से आ रही थी जब तक कि उसके बाल नहीं जलने लगे। और तब तक तो उसे बुझाने के लिये बहुत देर हो चुकी थी।

वह दर्द से चीख उठा और उसने लकड़ी का गट्ठर अपने ऊपर से उतार फेंका और दर्द के मारे चीखने और कूदने लगा।

पर बड़े खरगोश ने उसे तसल्ली दी कि वह जरूरत के समय के लिये हमेशा एक मरहम अपने पास रखता था। यह मरहम वह उसके शरीर पर लगा देगा तो उसे तुरन्त ही इस जलने से आराम मिल जायेगा।

उसने तुरन्त ही वह मरहम निकाला और बॉस के एक पत्ते पर रखा और उसे उसके घाव पर रख दिया। जैसे ही उसके मरहम ने टुनूकी के घाव को छुआ कि वह तो और ज़ोर ज़ोर से चीखने लगा।

बड़ा खरगोश हँस पड़ा और अपने किसान दोस्त को अपनी इस चाल के बारे में बताने के लिये चला गया और जा कर उसे बताया कि उसने उनके दुश्मन के साथ कैसी चाल खेली थी।

पर यह सुन कर बूढ़े ने दुख से अपना सिर हिलाया क्योंकि वह जानता था कि उसका दुश्मन केवल एक पल के लिये ही कुचला गया था थोड़ी ही देर में वह खुद उससे इस बात का बदला लेने के लिये आता ही होगा।

हमेशा शान्ति बनाये रखने के लिये तो यही सबसे अच्छी बात होगी कि टुनूकी को हमेशा के लिये बिना कोई नुकसान पहुँचाये छोड़ दिया जाये।

बड़ा खरगोश और किसान दोनों ही बहुत देर तक यह सोचते रहे कि ऐसा कैसे किया जाये। आखीर में दोनों ने यह निश्चय किया कि वे दो नाव बनायेंगे – एक छोटी नाव लकड़ी की और एक बड़ी वाली मिट्टी की। और वे तुरन्त ही यह काम करने में जुट गये।

जब नावें बन गयीं और ठीक से रंग दी गयीं तो बड़ा खरगोश टुनूकी के पास गया। टुनूकी अभी तक ठीक नहीं था। बड़े खरगोश ने उसे मछली पकड़ने चलने के लिये कहा।

टुनूकी बड़े खरगोश की चाल से अभी भी बहुत नाराज था पर वह बहुत कमजोर और बहुत भूखा था इसलिये उसने उसका प्रस्ताव तुरन्त ही स्वीकार कर लिया और बड़े खरगोश के साथ नदी के किनारे चला गया।

वहॉ दो नावें पानी में खड़ी थीं और नदी की लहरें उन्हें हिला रही थीं। वे दोनों नावें देखने में एक सी लगती थीं पर टुनूकी ने देख लिया कि एक नाव उनमें कुछ बड़ी थी और दूसरी कुछ छोटी।

स्वाभाविक था कि बड़ी नाव में मछलियॉ ज़्यादा आतीं सो वह कूद कर बड़ी नाव में बैठ गया।

बड़ा खरगोश छोटी वाली नाव में बैठ गया। छोटी वाली नाव लकड़ी की बनी हुई थी। नावें खोल दी गयीं और वे बीच धार की तरफ चल दीं।

जब वे नदी के किनारे से कुछ दूरी पर पहुॅचीं तो बड़े खरगोश ने अपनी पतवार उठायी और टुनूकी की नाव में इतनी ज़ोर से मारी कि उसकी नाव के दो टुकड़े हो गये।

टुनूकी सीधा पानी में गिर पड़ा और बड़े खरगोश ने भी उसे तब तक पानी में डुबोये रखा जब तक वह मर नहीं गया। उसके बाद उसने उसके मरे हुए शरीर को अपनी नाव में रखा और जमीन की तरफ खे लाया।

बड़े खरगोश ने बूढ़े को बताया कि आखिर दुश्मन मर ही गया। बूढ़ा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी के खून का बदला ले लिया गया था।

वह बड़े खरगोश को अपने घर में ले गया और फिर वे दोनों पहाड़ पर ज़िन्दगी भर आराम से रहे।

14 ईसुन बोशी या एक इंच लम्बा सैमुराय[41]

ईसुन बोशी जापानी भाषा में या एक इंच लम्बा सैमुराय हिन्दी में। जापान की यह लोक कथा टौम थम्ब जैसी है।

बहुत बहुत समय पहले बहुत दूर एक गाँव में एक शादीशुदा जोड़ा रहता था जिसके कोई बच्चा नहीं था। वे लोग रोज ईश्वर से एक बच्चे के लिये प्रार्थना करते थे।

आखिर एक उनके घर में एक बच्चा पैदा हुआ जो केवल एक इंच लम्बा था इसलिये उन्होंने उसका नाम ईसुन बोशी रख दिया जिसका अर्थ होता था "एक इंच लम्बा साधु"[42]। उसको पा कर वे दोनों बहुत खुश हुए और उसकी बहुत अच्छे से देखभाल करने लगे।

ईसुन बोशी कभी भी एक इंच से ज़्यादा लम्बा नहीं हुआ। कई साल गुजरने के बाद भी वह एक आदमी के अँगूठे के साइज़ से ज़्यादा बड़ा नहीं हुआ। पर फिर भी वह सामान्य बच्चों जैसा शक्तिवान था

एक दिन ईसुन बोशी ने अपने माता पिता से कहा — "मुझे पाल कर बड़ा करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। पर अब मुझे

[41] Issun Boshi. Taken from the Web Site : https://www.forestpub.co.jp/amazon/romaji/2_IssunBoshi.pdf

[42] One Inch Monk

राजधानी जाना चाहिये ताकि मैं दुनियाँ देख सकूँ। मैं एक मजबूत सैमुराय योद्धा बनना चाहता हूँ।"

उसके माता पिता ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की कि वह अपना दिमाग बदल ले पर वह अपने इरादे का पक्का था सो उन्हें उसको राजधानी जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

अगले दिन वे सब नदी पर गये। ईसुन बोशी अपने चावल खाने के छोटे से कटोरे की नाव में बैठा और अपने माता पिता को विदा कह कर चल दिया।

वह अपनी नाव एक छोटी सी चौप स्टिक[43] से खे रहा था। उसकी कमर में एक सुई बँधी थी जो उसकी तलवार की तरह से काम आती।

रास्ते में उसकी नाव पत्थरों से टकरा गयी फिर एक झरने से नीचे गिर पड़ी और पानी में डूबने उतराने लगी। पर ईसुन बोशी बहुत बहादुर था। उसने अपनी यात्रा नहीं छोड़ी। वह लगातार चलता ही रहा।

जैसे जैसे उसके रास्ते में कठिनाइयाँ आती गयीं उसका इरादा और पक्का होता गया और उसकी महत्वाकांक्षाऐं और बढ़ती गयीं।

काफी दिन अपनी नाव खेने के बाद उसको अपने पहुँचने की जगह दिखायी दी। इस छोटे से बहादुर बच्चे के सामने राजधानी की

[43] Chop Stick – these are the two thin laong sticks with which Japanese eat their food. See their picture above.

चमकती हुई रोशनी चमक रही थी। जब ईसुन बोशी सड़क पर जा रहा था तो उसको एक बहुत ही शानदार मकान दिखायी दिया जो किसी लौर्ड का लगता था।

वह उसके दरवाजे तक गया और वहाँ जा कर आवाज लगायी। एक नौकर दरवाजे पर आया पर उसको तो कोई दिखायी नहीं दिया। सो लौर्ड को खुद को वहाँ यह देखने के लिये आना पड़ा कि वहाँ कौन है।

ईसुन बोशी ज़ोर से चिल्लाया — "इधर देखो मैं यहाँ हूँ नीचे।"

लौर्ड ने नीचे देखा तो उसने देखा कि एक बहुत छोटा सा लड़का उसके लकड़ी के जूतों के पास खड़ा हुआ था। लड़का जूतों से भी बहुत ज़्यादा छोटा था।

ईसुन बोशी ने लौर्ड से कहा — "मैं यहाँ इतनी दूर दुनियाँ देखने आया हूँ। मेहरबानी कर के मुझे अपने चौकीदारों में रख लीजिये। मैं देखने में छोटा जरूर हूँ पर मैं बहुत मजबूत और बहादुर हूँ।"

लौर्ड इस छोटे से लड़के से आनन्दित होते हुए बोले — ठीक है तुम मेरी बेटी के साथ खेलने के लिये मेरे पास रह सकते हो।"

जल्दी ही ईसुन बोशी और राजकुमारी बहुत अच्छे दोस्त हो गये। वे अपना समय पढ़ने लिखने और गाने के लिये साथ साथ ही

बिताते। जब वह इस तरह अपना समय बिता रहा था तो वह एक योद्धा बनना भी नहीं भूला।

वसन्त के एक दिन राजकुमारी और ईसुन बोशी दोनों एक मन्दिर जाने के लिये निकले। जब वे वहाँ से वापस आ रहे थे तो रास्ते में अचानक उनको एक बहुत ही भयानक राक्षस मिल गया। उसके पास एक जादुई हथौड़ा था और उसने राजकुमारी को पकड़ने की कोशिश की।

ईसुन बोशी ने अपनी तलवार निकालते हुए राक्षस से ज़ोर से कहा — "मैं तुम्हें राजकुमारी को छूने भी नहीं दूँगा।"

राक्षस ज़ोर से हँसते हुए बोला — "हा हा हा हा। ओ छोटे जीव। मैं तो तुझे भी खा जाऊँगा।" कह कर राक्षस ने ईसुन बोशी को उठा कर उछाल कर अपने मुँह में लपक लिया और सटक गया।

ईसुन बोशी जब राक्षस के पेट में पहुँच गया तो वहाँ पहुँच कर उसने अपनी सुई की तलवार से उसका पेट कोंचना और काटना शुरू कर दिया।

राक्षस को तकलीफ हुई तो वह अपना पेट पकड़ कर चिल्ला कर नीचे गिर पड़ा — "रुक जाओ ओ छोटे जीव। अब आगे से मैं कोई बुरा काम नहीं करूँगा। रुक जाओ"

ईसुन बोशी उसके पेट के अन्दर से चिल्लाया — "मुझे अपने पेट से बाहर निकालो।"

राक्षस ने ईसुन बोशी को अपने मुँह से बाहर निकाला और वहॉ से रोता हुआ भाग गया।

जब राजकुमारी ने ईसुन बोशी को धन्यवाद दिया तो उसने देखा कि राक्षस जाते समय अपने पीछे कुछ छोड़ गया है। वह तो उसका जादू का हथौड़ा था।"

उसने ईसुन बोशी से कहा — "चलो हम इससे कुछ मॉगते हैं।

कह कर उसने हथौड़े को हिलाया और कहा — "ईसुन बोशी को लम्बा कर दो।"

हर बार जब भी राजकुमारी ने हथौड़े को हिलाती ईसुन बोशी एक इंच बढ़ जाता। कुछ साल बाद राजकुमारी और ईसुन बोशी की शादी हो गयी।

शादी के बाद ईसुन बोशी ने अपने माता पिता को अपने पास बुला लिया फिर वे सब खुश खुश रहे।

15 पत्थर तोड़ने वाला[44]

एक बार की बात है कि एक पत्थर तोड़ने वाला रहता था। यह आदमी रोज एक बड़े पहाड़ के पास वाली पहाड़ी के पास जाता था और वहाँ से कब्रिस्तान और घरों के लिये पत्थरों के टुकड़े काटता था और उन्हें बेच देता था।

वह यह बहुत अच्छी तरह जानता था कि किस चीज़ के लिये कौन सा पत्थर चाहिये। और वह एक बहुत कुशल कारीगर भी था सो उसके पत्थरों के खरीदार भी बहुत थे। काफी समय तक वह अपने काम से बहुत सन्तुष्ट और खुश रहा। और कभी कुछ और नहीं माँगा। उसके पास जो था वह काफी था।

अब हुआ यह कि जिस पहाड़ से यह पत्थर काटता था उसमें एक आत्मा रहती थी जो लोगों के सामने कभी कभी प्रगट होती रहती थी। वह लोगों को अलग अलग तरीकों से अमीर बनने में सहायता करती रहती थी।

इस पत्थर तोड़ने वाले ने पहले कभी भी आत्मा नहीं देखी थी। जब भी कभी कोई आत्मा की बात करता तो वह अविश्वास में अपना सिर हिला देता। पर एक समय आया जब उसे अपनी राय बदलनी पड़ी।

[44] The Stone-cutter. By Laure Claire Foucher. Taken from : https://fairytalez.com/the-stone-cutter/

एक दिन पत्थर तोड़ने वाला कब्र के लिये एक पत्थर तोड़ कर किसी अमीर आदमी के घर ले जा रहा था तो वहाँ उसने बहुत सारी सुन्दर सुन्दर चीज़ें देखीं जिनको उसने कभी सपने में भी नहीं देखा था।

अचानक उसे अपना काम बहुत मुश्किल और भारी लगने लगा और उसके दिमाग में आया कि "काश मैं भी एक अमीर आदमी होता। मैं भी एक ऐसे पलंग पर सो सकता जिसके रेशमी परदे होते और उन परदों में सुनहरे फुँदने लगे होते। ऐसे पलंग पर सो कर मैं कितना खुश होता।

तभी उसको एक आवाज सुनायी दी "तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी है अबसे तुम एक अमीर आदमी बन जाओगे।"

यह आवाज सुन कर आदमी ने इधर उधर देखा पर उसे वहाँ उसे कोई दिखायी नहीं दिया। उसने सोचा कि शायद वह कोई सपना देख रहा होगा। उस दिन वह और काम करने के मूड में नहीं था सो उसने अपने औजार उठाये और घर चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो वह तो अपना घर देख कर आश्चर्यचकित रह गया। क्योंकि वहाँ उसके लकड़ी के मकान की जगह तो अब एक शाही महल खड़ा था।

उसमें बहुत अच्छा फर्नीचर रखा हुआ था। और सबसे अच्छा तो उसमें पड़ा हुआ पलंग था। वह सब तरीके से वैसा ही था जैसा वह चाहता था।

उस सबको देख कर वह खुशी से आपे से बाहर हो गया और इस नयी ज़िन्दगी में वह अपनी पुरानी ज़िन्दगी भूल गया।

अब गरमियॉ शुरू हो चुकी थीं। सूरज अपनी पूरी चमक से गरम होता था। एक दिन इतना अधिक गरम था कि पत्थर तोड़ने वाले को सॉस लेना भी कठिन हो गया। उस दिन उसने निश्चय किया कि वह काम पर नहीं जायेगा और घर में ही रहेगा।

वह बहुत उदास था क्योंकि उसने कभी अपने आप मनोरंजन करना सीखा ही नहीं था। तभी उसके घर के सामने से एक गाड़ी गुजरी जिसे नीली और सुनहरी पोशाक में कुछ नौकर खींच रहे थे।

गाड़ी में एक राजकुमार बैठा हुआ था जिसके ऊपर उसके नौकरों ने छत्र लगाया हुआ था ताकि सूरज की किरनें उसे परेशान न कर सकें। वह गाड़ी उसके घर के कोने से हो कर गायब हो गयी।

तभी पत्थर तोड़ने वाला बोला "मुझे कितनी खुशी होती अगर मैं भी एक राजकुमार होता और मेरे सिर पर भी एक छत्र लगा हुआ होता।"

तभी पहाड़ की आत्मा बोली "तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी है अब तुम एक राजकुमार हो जाओगे।"

और लो वह तो एक राजकुमार बन गया। कुछ लोग उसकी गाड़ी के आगे जा रहे थे और कुछ लोग उसकी गाड़ी के पीछे जा रहे थे। वे लाल और सुनहरी रंग की पोशाक पहने थे। एक छत्र उसके ऊपर था।

अब वह सब उसके पास था जिसकी उसने इच्छा की थी। पर फिर भी अभी काफी नहीं था। उसने चारों तरफ देखा ताकि वह किसी और चीज़ की इच्छा कर सके।

जब उसने देखा कि उसके घास को पानी देते हुए भी सूरज की गरमी ने उसे सुखा दिया और हालाँकि छत्र उसके सिर पर था रोज उसका चेहरा साँवले पर साँवला पड़ता जा रहा था तो उसे बहुत गुस्सा आया।

वह चिल्लाया "यह सूरज तो मुझसे भी ज़्यादा ताकतवर निकला। काश मैं सूरज होता।"

तभी पहाड़ की आत्मा ने जवाब दिया "तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी है अब तुम सूरज हो जाओगे।"

अब जब वह सूरज बन गया तो उसे अपनी ताकत का घमंड हो गया। उसने अपनी किरनें ऊपर स्वर्ग में भी फेंकनी शुरू कर दीं और नीचे धरती पर भी डालनी शुरू कर दीं।

उसने मैदानों की घास को भी ज्लाना शुरू कर दिया और राजकुमारों के चेहरों को भी जलाना शुरू कर दिया। कुछ ही दिन बाद वह अपनी इस ताकता से थक गया। क्योंकि अब उसके पास करने के लिये कुछ और नहीं रह गया था।

सो उस असन्तुष्ट आदमी की असन्तुष्टि ऐसे ही बढ़ गयी जब एक बादल के टुकड़े ने उसका चेहरा ढक लिया और धरती उससे छिपा ली।

वह बहुत ज़ोर से गुस्सा हुआ कि “बादल की यह हिम्मत कि उसने मुझसे धरती को छिपा लिया। क्या वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर है। ओह क्या ही अच्छा होता अगर मैं एक बादल होता।”

पहाड़ की आत्मा ने जवाब दिया “तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी है अब तुम बादल बन जाओगे।”

अब वह एक बादल बन गया था और सूरज और धरती के बीच में लटका हुआ था। अब वह सूरज की किरनों को धरती पर जाने से पहले ही बीच में ही पकड़ लेता।

अब वह खुश था कि अब उसकी धरती पहले से अधिक हरी भरी दिखायी देती । फूल खिलने लगे थे। पर अभी भी वह सन्तुष्ट नहीं था क्योंकि यह उसके लिये काफी नहीं था।

वह वहुत दिनों तक पानी बरसाता रहा जब तक कि नदियों का पानी अपने किनारे तोड़ कर मैदान में नहीं बिखर गया। चावल की फसल अब पानी में खड़ी थी। बारिश की वजह से शहर बरबाद हो गये थे। केवल वह पहाड़ी ही आसमान में अपना सिर उठाये खड़ी थी।

बादल को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह आश्चर्य से बोला “तब क्या यह चट्टान मुझसे ज़्यादा ताकतवर है। काश मैं एक चट्टान होता।”

और तभी पहाड़ की आत्मा ने कहा “तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी है अब तुम पहाड़ बन जाओगे।”

अब वह चट्टान बन गया था। उसमें बहुत ताकत आ गयी थी। अब वह गर्व के साथ खड़ा था। अब न तो सूरज की गरम किरनें उसे सता रही थी और न उसे बारिश का ही कोई डर था। अब वह उसे हिला भी नहीं सकती थी।

उसने सोचा "अब यह बिल्कुल ठीक है।"

पर एक दिन उसने पैरों के पास एक शोर सुना और जब उसने देखने के लिये नीचे देखा कि वह क्या था तो उसने देखा कि एक पत्थर काटने वाला अपने औजार ले कर उसमें से पत्थर काट रहा रहा था।

जब उसने यह देखा तो वह तो कॉप गया। कुछ ही पल में एक बड़ा सा टुकड़ा उसमें से टूट कर जमीन पर गिर पड़ा। इसे देखते ही वह गुस्से से चिल्लाया "क्या केवल धरती का छोटा सा बच्चा पहाड़ से ज़्यादा ताकतवर है। ओह काश मैं एक आदमी होता।"

और पहाड़ की आत्मा ने कहा "तुम्हारी इच्छा सुन ली गयी ही। तुम एक बार फिर आदमी बन जाओगे।"

बस उसे पसीना आया और वह एक बार फिर पत्थर काटने वाल बन गया था। उसका बिस्तर सख्त हो गया था और उसके पास खाना बहुत कम हो गया था। अब वह कोई चीज़ मॉगता नहीं था जो उसके पास नहीं थी।

अब उसकी ज़्यादा बड़े होने की या ताकतवर होने की भी कोई मॉग नहीं थी। वह अब सन्तुष्ट था सो उसके बाद उसने पहाड़ की आत्मा को फिर कभी नहीं सुना।

16 उराशिमा[45]

उराशिमा एक मछियारा था जो जमीन के अन्दर आ जाने वाले समुद्र से मछलियॉ पकड़ा करता था। वह हर रात अपने व्यापार का काम करता था। वह रोज रात को अॅधेरे में बड़ी और छोटी दोनों किस्म की मछलियॉ पकड़ा करता था और इस तरह अपनी ज़िन्दगी गुजारता था।

एक पूर्णमासी की रात को जब चॉद बहुत ज़ोर से चमक रहा था तो समुद्र का पानी अन्दर तक आ गया तब उराशिमा ने अपनी नाव उठायी अपने दॉये हाथ में पतवार ले कर हरे पानी में चला गया।

पतवार चलाते समय वह इतना नीचे झुक गया कि उसके लम्बे बाल समुद्र की लहरों पर तैर गये। उसने अपनी नाव पर ध्यान नहीं दिया जिसके पीछे पीछे उसकी मछली पकड़ने वाला जाल घिसट रहा था।

वह अपने रास्ते से भटक कर एक डरावनी जगह आ गया। उस समय वह न ही जाग रहा था और न ही सो रहा था क्योंकि चॉद ने उसे पागल सा कर दिया था।

[45] Urashima. From the Book "Green Willow and Other Japanese Fairy Tales". By Grace James. Macmillan. 1912.

इसी समय गहरे समुद्र की बेटी उठी और उसने उराशिमा को अपनी बॉहों में ले लिया और समुद में नीचे और नीचे चलती चली गयी ठंडे समुद्र की गुफा में। वहॉ ले जा कर उसने उसे ठंडी रेत पर लिटा दिया और उसे प्यार से देखती रही।

उसने उस पर जादू डाल दिया। उसके लिये उसने समुद्र के गीत गाये और उसकी ऑखों में अपनी ऑखें डाल कर देखती रही।

उसने पूछा — "ओ लड़की तुम कौन हो?"

उसने कहा — "गहरे समुद्र की बेटी।"

उराशिमा ने कहा — "मुझे घर जाने दो। मेरे बच्चे मेरा इन्तजार कर रहे हैं और थके हुए हैं।"

वह बोली — "नहीं। अभी तुम मेरे साथ रहो। उराशिमा ओ उराशिमा। ओ जमीन के अन्दर तक आने वाले समुद्र में मछलियॉ पकड़ने वाले उराशिमा तुम बहुत सुन्दर हो।

तुम्हारे लम्बे बाल मेरे दिल के चारों तरफ लिपट गये हैं। तुम मुझसे दूर मत जाओ। अपने घर को भूल जाओ।"

उराशिमा बोला — "भगवान के लिये अभी मुझे जाने दो। मुझे अपने घर जाना है।"

पर गहरे समुद्र की बेटी ने फिर कहा — "उराशिमा। ओ जमीन के अन्दर तक आने वाले समुद्र में मछलियॉ पकड़ने वाले उराशिमा। मैं तुम्हारे लिये मोतियों का पलंग बिछाऊॅगी। मैं उस

पलंग पर समुद्र की घास और फूलों का बिछौना बिछाऊँगी। तुम गहरे समुद्र के राजा बनोगे और फिर हम लोग राज करेंगे।"

उराशिमा ने कहा — "मुझे घर जाने दो। मेरे बच्चे मेरा इन्तजार कर रहे हैं और थके हुए हैं।"

गहरे समुद्र की बेटी ने कहा — "उराशिमा। ओ जमीन के अन्दर तक आने वाले समुद्र में मछलियाँ पकड़ने वाले उराशिमा। गहरे समुद्र के तूफान से तुम कभी मत डरना। हम अपनी गुफा के दरवाजे के आगे बहुत सारे पत्थर लगा देंगे। और न तुम समुद्र में डूबने से डरना क्योंकि तुम उसमें मरोगे नहीं।"

मछियारा बोला — "पर अभी तो तुम मुझे जाने दो। भगवान के लिये। अभी मुझे अपने घर जाना है।"

"तुम मेरे साथ एक रात रुक जाओ।"

"नहीं। एक रात भी नहीं।"

यह सुन कर गहरे समुद्र की बेटी रो पड़ी। मछियारे ने उसके आँसू देखे तो वह बोला — "ठीक है। मैं केवल एक रात तुम्हारे साथ रहूँगा।"

अगले दिन रात खत्म होने के बाद वह उसे ऊपर रेत पर ले आयी। उसने पूच — "क्या हम तुम्हारे घर के पास हैं?"

उराशिमा बोला — "हाँ हम उसके बहुत पास हैं।"

गहरे समुद्र की बेटी ने कहा — "मेरी याद में तुम यह रखो।" कह कर उसने उसे एक सीपी भरी सन्दूकची दी। उसका रंग इन्द्र

धनुष के रंगों जैसा था और उसमें लगा कुंडा मूँगे और जेड का बना हुआ था।

वह बोली — "ओ मछियारे। इसे अभी मत खोलो।" कह कर वह गहरे समुद्र की बेटी समुद्र में नीचे डुबकी मार गयी फिर कभी न दिखायी देने के लिये।

उराशिमा पाइन के पेड़ों के नीचे से होता हुआ लौट कर घर आ गया। घर आते समय वह बहुत खुश था और खुशी से हँस रहा था। उसने वह सन्दूकची सूरज को पकड़ने के लिये उछाल दी।

"आह पाइन के पेड़ों की सुगन्ध कितनी मीठी थी।"

फिर वह अपने घर वालों को उसी संगीत की धुन से बुलाने लगा जो धुन समुद्री चिड़िया ने उसे सिखायी थी।

कोई जवाब न मिलने पर वह बोला — "क्या वे अभी से सो गये? यह बड़ी अजीब सी बात है कि वे मुझे जवाब नहीं दे रहे।"

पर जब वह अपने घर के पास आया तो उसने देखा कि वहाँ तो काई लगी केवल चार दीवारें खड़ी हुई हैं। घर की देहरी पर रात में खिलने वाले फूल खिल रहे हैं। चूल्हे के पास मृत्यु लिली और फर्न के पेड़ थे। वहाँ कोई ज़िन्दा आदमी नहीं था।

उराशिमा चिल्ला पड़ा — "यह क्या? क्या मेरा दिमाग खराब हो गया है? क्या मैं अपनी आँखें गहरे समुद्र में छोड़ आया हूँ?"

वह नीचे घास पर बैठ गया और बहुत देर तक सोचता रहा।

वह बोला — "हे भगवान मेरी सहायता करो। मेरी पत्नी और मेरे बच्चे कहाँ हैं।"

वहाँ से फिर वह गाँव चला गया जहाँ की सड़क का वह पत्थर पत्थर जानता था और जहाँ का वह हर घर बहुत अच्छी तरह जानता था। वहाँ लोग अपना काम करने के लिये इधर उधर घूम रहे थे। पर वह उनमें से किसी को नहीं जानता था।

उन्होंने मछियारे से कहा — "गुड मौर्निंग यात्री। क्या तुम इसी गाँव में रहते हो?"

उसने वहाँ बच्चे खेलते हुए देखे। उसने उनकी ठोड़ी के नीचे हाथ रख कर उनके चेहरे उठा कर देखे पर बेकार। उनमें उसका कोई बच्चा नहीं था। वह बोला — "मेरे बच्चे कहाँ हैं। ओ दयालु क्वानौन[46]। देवता ही जानते हैं कि इस सबका क्या मतलब है। मैं इसे अब और नहीं सह सकता।"

जब शाम हुई तो उसका दिल पत्थर की तरह से भारी हो गया। वह गाँव के बाहर जा कर जहाँ से रास्ता दो तरफ जाता था खड़ा हो गया। जब वहाँ से लोग जा रहे थे तो उसने उनकी आस्तीन पकड़ ली।

वह बोला — "दोस्त मुझे माफ करना। क्या तुम उराशिमा नाम के उस मछियारे को जानते हो जो यहाँ रहता था?"

[46] Kwanon

वहाँ से गुजरते हर आदमी ने उसे एक ही जवाब दिया कि वे ऐसे किसी मछियारे को नहीं जानते।

वहाँ से पहाड़ों पर रहने वाले किसान भी गुजरे। उनमें से कुछ पैदल जा रहे थे कुछ घोड़ों पर सवार थे। वे अपने देहाती गाने गाते चले जा रहे थे। वे अपने कन्धों पर जंगली स्ट्रौबैरीज़ और लिली के गट्ठर के गट्ठर ले जा रहे थे। वे लिली ऊपर नीचे हिलती जा रही थीं।

कुछ यात्री जा रहे थे जिन्होंने सबने सफेद कपड़े पहन रखे थे जिनके सबके पास लकड़ी का डंडा था और वे घास के जूते पहने थे जो उनके पैरों से कस कर बँधे हुए थे। वे लोग पानी के घड़े ले जा रहे थे। वे लोग बड़ी तेजी से मगर बहुत ही हल्के कदमों से पवित्र विचारों पर सोच विचार करते चले जा रहे थे।

लौर्ड और उनकी पत्नियाँ भी जा रही थीं। वे सब अपने अपने ओहदे के अनुसार कपड़े पहने थे।

रात हुई तो उराशिमा ने अपनी सारी आशाऐं छोड़ दीं। पर तभी वहाँ से एक बहुत ही बूढ़ा आदमी गुजरा।

मछियारा चिल्लाया — "ओ बूढ़े। तुम बहुत पुराने लगते हो। क्या तुम उराशिमा को जानते हो। वह यहीं जन्मा था और यहीं बड़ा हुआ था।"

बूढ़ा बोला — "इस नाम का एक आदमी यहाँ था तो सही। पर वह तो बहुत साल पहले समुद्र में डूब गया था। मेरे बाबा को

भी यह नाम मुश्किल से याद होगा और मैं तो तब बच्चा ही था। ओ भले अजनबी। पर यह तो बहुत साल पुरानी बात है।"

उराशिमा ने पूछा — "तो क्या वह मर गया?"

बूढ़ा बोला — "उससे ज़्यादा मरा हुआ तो और कोई आदमी है ही नहीं। उसके अपने बच्चे मर गये उनके भी बच्चे मर गये। यह तो तुम्हारे लिये भी अच्छा है ओ अजनबी।"

यह सुन कर उराशिमा डर गया। वह बोला तब तो मुझे हरी घाटी की ओर जाना चाहिये जहाँ मरे हुए लोग सोते हैं। और वह उस घाटी की ओर चल दिया।

रास्ते में वह कहता जा रहा था "घास में से हो कर कितनी ठंडी हवा बह रही है। पेड़ काँप रहे हैं और पत्ते पीले पड़े जा रहे हैं। ओ उदास चाँद जो मुझे सारी शान्त कब्रें दिखाता है तू पुराने चाँद से ज़रा सा भी अलग नहीं है।

वह फिर बोला — "यहाँ मेरे बच्चों की कबें हैं मेरे बच्चों के बच्चों की कब्रें हैं। बेचारा उराशिमा उससे ज़्यादा मरा हुआ तो कोई भी आदमी नहीं है। फिर भी भूतों में मैं अकेला हूँ। मुझे कौन तसल्ली देगा।"

कह कर उराशिमा रो पड़ा पर आसमान के ऊपर कोई असर नहीं पड़ा। बस पहाड़ सी ऊँची लहरें उठ उठ कर गिरती रहीं। रात की हवा सॉय सॉय कर के बहती रही और कुछ भी नहीं।

यहाँ से वह फिर समुद्र के किनारे गया और बोला — "मुझे कौन तसल्ली देगा।" आसमान के ऊपर कोई असर नहीं पड़ा। बस पहाड़ सी ऊँची लहरें उठ उठ कर गिरती रहीं।

उराशिमा बोला — "हाँ यहाँ यह सन्दूकची तो है।"

उसने उसे अपनी आस्तीन में से बाहर निकाला और खोला। खोलते ही उसमें से एक सफेद धुँआ निकला और दूर क्षितिज की ओर उड़ता चला गया।

उराशिमा बोला — "मैं बहुत थक गया हूँ।"

कहते ही उसके सारे बाल बरफ की तरह से सफेद हो गये। उसका शरीर सिकुड़ने लगा तो वह काँपने लगा। उसकी नजर कमजोर हो गयी। वह जो कभी जवान और उमंग भरा हुआ करता था अब जहाँ खड़ा था वहीं बिखर गया।

वह बोला — "अरे मैं तो बूढ़ा हो गया।" उसने किसी तरह सन्दूकची का ढक्कन लगाना चाहा पर वह उससे गिर गयी।

वह बोला — "नहीं, सन्दूकची की भाप तो हमेशा के लिये उड़ गयी। यह क्या मामला है।"

कह कर वह रेत पर गिर पड़ा और मर गया

17 मछियारे लड़के उराशिमा टारो की कहानी[47]

बहुत समय पहले टैंगो प्रान्त में जापान के समुद्र के किनारे एक छोटा सा गॉव था मिज़ूनोये।[48] वहॉ एक मछियारा लड़का रहता था जिसका नाम था उराशिमा टारो। उससे पहले उसका पिता भी एक मछियारा था। पर उसका बेटा मछली पकड़ने में उससे दोगुनी चतुराई ले कर पैदा हुआ था।

क्योंकि केवल उराशिमा ही उस क्षेत्र में एक ऐसा चतुर मछियारा था जो इतनी बोनिटो और टाई एक दिन में पकड़ सकता था जितनी कि उसके साथी लोग एक हफ्ते में पकड़ पाते थे।

पर उस छोटे से मछली पकड़ने वाले गॉव में समुद्र के मछियारे की तरह से मशहूर होने के साथ साथ वह अपने दयालु होने के लिये भी मशहूर था।

अपनी सारी ज़िन्दगी में उसने किसी को कोई नुकसान नहीं पहॅुचाया था चाहे वह छोटी हो चाहे बड़ी। जब वह लड़का ही था तो उसके साथी उस पर हॅसा करते थे क्योंकि वह उनके साथ कभी भी जानवरों को चिढ़ाने में शामिल नहीं होता था बल्कि उनको भी उस काम से बचने की सलाह देता था।

---

[47] The Story of Urashimaa Taro, the Fisher Lad. By Yei Theodora Ozaki.

[48] There was a Mizu-no-ye named village in Tango Province.

एक दिन गरमियों की सुबह में वह अपने साथियों के साथ मछली पकड़ कर घर जा रहा था कि उसे रास्ते में खेलते हुए कुछ बच्चे मिल गये।

वे अपनी पूरी आवाज में चिल्ला रहे थे और बात कर रहे थे जिससे लगता था कि वे किसी चीज़ को ले कर बहुत उत्तेजित थे।

वह उनके साथ यह देखने के लिये गया कि वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से वे इतनी ज़ोर ज़ोर से चीख चिल्ला रहे थे और बात कर रहे थे। तो उसने देखा कि वे लोग एक कछुए को परेशान कर रहे थे।

एक लड़का उसका एक पॉव इस तरफ खींचता फिर दूसरा उसे दूसरी तरफ खींचता। तीसरा उसे डंडी से मारता तो चौथा उसके खोल पर पत्थर से हथौड़े की तरह मारता।

उराशिमा को उस कछुए पर बहुत दया आयी। उसने निश्चय कर लिया कि वह उसको उन बच्चों से जरूर बचायेगा।

उसने बच्चों से कहा — "देखो बच्चों तुम लोग उस कछुए को इतनी बेरहमी से सता रहे हो कि यह बहुत जल्दी ही मर जायेगा।"

वे सारे लड़के उसी उम्र के थे जब बच्चों को जानवरों को सताने में आनन्द आता है सो उन्होंने उराशिमा की सलाह पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसे सताते ही रहे।

कुछ बड़े लड़कों में से एक ने जवाब दिया — "किसको परवाह है कि यह जीता है या मरता है। कम से कम हम तो नहीं करते।

चलो बच्चों चलो उसे सताते हैं।" और उन्होंने मिल कर उसे फिर से सताना शुरू कर दिया।

उराशिमा ने कुछ देर तक तो इन्तजार किया। वह सोचता रहा कि ऐसा कौन सा सबसे अच्छा तरीका हो सकता है जिससे इन बच्चों से निपटा जाये।

उसने कोशिश की कि वे बच्चे उस कछुए को उसे दे दें सो वह मुस्कुराया और बोला — "मुझे विश्वास है कि तुम सब लोग बहुत अच्छे बच्चे हो। तुम इस कछुए को मुझे दे दो। मुझे इसे अपने पास रखने में बहुत अच्छा लगेगा।"

एक लड़का बोला — "नहीं हम तुम्हें यह कछुआ नहीं देंगे। इसे हम तुम्हें क्यों दे दें। इसे हमने पकड़ा है।"

उराशिमा बोला — "यह तो तुम सही कह रहे हो पर मैं तुम्हें इसे मुझे ऐसे ही देने के लिये नहीं कह रहा मैं इसके लिये तुम्हें कुछ पैसे दूँगा। दूसरे शब्दों में ओजीसन यानी चाचा तुम्हें इसके लिये पैसे देंगे। बच्चों क्या यह तुम्हारे लिये ठीक रहेगा।"

इतना कह कर उसने कुछ पैसे निकाल कर उनके सामने रखे जो एक धागे में बँधे हुए थे। उन सब सिक्कों के बीच में एक छेद था और वह धागा उसके बीच से हो कर जा रहा था।

वह आगे बोला — "देखो बच्चों तुम लोग इस पैसे जो कुछ तुम चाहो वह खरीद सकते हो। तुम इस पैसे और भी बहुत सारे काम

कर सकते हो बजाय इसके कि तुम इस बेचारे कछुए को सताओ। सो अच्छे बच्चों क्या तुम मेरी बात सुनोगे?"

पर वे बच्चे अब इतने बुरे लड़के भी नहीं थे। बस थोड़े शरारती थे। जैसी नरमी से उराशिमा बोल रहा था उसकी नरमी ने उनको जीत लिया था। जैसा कि जापान में कहते है "दूसरे की बात मानना" उन्होंने उराशिमा की बात मानी और वह कछुआ उसे दे दिया।

"ठीक है ओजीसन। अगर आप हमें इसके बदले में पैसे देंगे तो हम आपको यह कछुआ देते हैं।"

उराशिमा ने उनको पैसे दे दिये उन्होंने उराशिमा को कछुआ दे दिया। वे सब एक दूसरे को पुकारते हुए वहाँ से चले गये और जल्दी ही आँखों से ओझल हो गये।

"ओह बेचारे तुम। चिन्ता न करो अब तुम मेरे पास सुरक्षित हो। कहना है कि सारस तो एक हजार साल ज़िन्दा रहता है पर कछुए तो दस हजार साल ज़िन्दा रहते हैं। दुनियाँ के सारे जीवों में तुम्हारी ज़िन्दगी ही तो सबसे लम्बी है।

और इस समय तुम्हारी ज़िन्दगी उन निर्दयी लड़कों के हाथों में पड़ कर छोटी होने जा रही थी। यह तो अच्छा हुआ कि मैं पास से गुजर रहा था तो मैंने तुम्हें बचा लिया इसलिये अब यह ज़िन्दगी तुम्हारी है।

अब मैं तुम्हें तुरन्त ही तुम्हारे घर समुद्र लिये चलता हूँ। अब तुम आगे से पकड़े मत जाना क्योंकि हो सकता है अगली बार तुम्हें बचाने के लिये कोई न हो।"

इस सारे समय जब वह कछुए से बात कर रहा था तो बहुत तेज़ी से चल रहा था। रास्ते में पत्थर भी थे। उसने कछुए को पानी में रखा और कछुए को पानी में गायब होते देखा। उसके बाद वह घर चला गया। वह बहुत थक गया था और सूरज भी छिपने को आ रहा था।

अगली सुबह उराशिमा रोज की तरह अपनी नाव ले कर फिर समुद्र में गया। उस दिन मौसम बहुत अच्छा था और गरमी की धुँधली सुबह में आसमान और समुद्र का पानी दोनों ही नीले दिखायी दे रहे थे।

उराशिमा अपनी नाव में बैठा और आधे सोते हुए से नाव समुद्र में खे दी। अपना जाल उसने पानी में फेंक दिया। वह जल्दी ही दूसरी मछली पकड़ने वाली नावों को पार कर गया और उनसे इतनी दूर चला गया कि वे अब उसे दिखायी भी नहीं दे रही थीं। उसकी नाव समुद्र में आगे और आगे भटकी जा रही थी।

उसे पता नहीं क्यों पर किसी वजह से उस सुबह वह कुछ असाधारण रूप से खुश था। उसके मन में यह विचार आया कि जिस कछुए को उसने कल छुड़ाया था वह सच में हजारों साल ज़िन्दा

रहे उसकी अपनी जैसी छोटी सी ज़िन्दगी नहीं जिये। तभी उसने किसी को अपना नाम पुकारते सुना "उराशिमा उराशिमा।"

वह तो यह सुन कर दंग रह गया। वह आवाज घंटी जैसी साफ थी और गर्मी की हवा जैसी धीमी थी। वह आवाज समुद्र के ऊपर तैर गयी।

वह एकदम से खड़ा हो गया और सारे समुद्र के ऊपर चारों तरफ देखने लगा। उसको लगा कि शायद किसी दूसरी नाव उसके पास आ गयी हो और उसके नाविक ने उसे पुकारा हो। पर ऐसा तो नहीं था। उसके पास या दूर कहीं कोई नाव नहीं थी। इसका मतलब था कि वह आवाज किसी आदमी की नहीं थी।

चौंकते हुए और आश्चर्य करते हुए कि यहाँ इस सुनसान में किसने उसे पुकारा होगा उसने अपने चारों तरफ फिर से देखा तब उसने देखा कि एक कछुआ उसकी नाव के सहारे था उसी ने उसे आवाज लगायी थी।

उराशिमा ने उसे ध्यान से देखा तो यह तो वही कछुआ था जिसे उसने कल बचाया था।

उराशिमा आश्चर्य से बोला – "अरे मिस्टर कछुए तुम। क्या वह तुम थे जिसने अभी अभी मेरा नाम पुकारा?"

"हाँ वह मैं ही था। कल तुमने मेरी जान बचायी थी सो आज मैं तुम्हें उसके लिये धन्यवाद कहने आया हूँ कि तुम्हारी इस कृपा का मैं कितना ऋणी हूँ।"

उराशिमा बोला — "ठीक है। ठीक है। यह तो तुम्हारी नम्रता है। आओ तुम मेरी नाव में ऊपर आ जाओ। मैं तुम्हें एक सिगरेट पीने के लिये देता पर तुम तो कछुआ हो तुम तो सिगरेट पीते नहीं।" और मछियारा यह कह कर अपने ही मजाक पर अपने आप ही हॅस पड़ा।

कछुआ भी हॅस पड़ा — "हे हे हे हे। चावल की वाइन मेरा सबसे प्रिय पेय है पर मैं तम्बाकू नहीं पीता।"

उराशिमा बोला — "अच्छा। पर मेरे पास चावल की वाइन तो नहीं है फिर भी तुम ऊपर आ जाओ और धूप में थोड़ी देर अपनी पीठ सेक लो। कछुए तो धूप में अपनी पीठ सेकना बहुत पसन्द करते हैं।"

सो कछुआ उराशिमा की नाव में चढ़ आया। मछियारे ने उसे अपनी नाव में चढ़ने में सहायता की। कछुए ने नाव में आ जाने के बाद कहा — "उराशिमा। क्या तुमने समुद्र के ड्रैगन राजा का महल "रिन गिन"[49] देखा है?"

मछियारे ने ना में अपना सिर हिलाया और कहा — "नहीं। सालों से यह समुद्र मेरा घर रहा है। हालॉकि समुद्र के नीचे मैंने ड्रैगन राजा के महल के बारे में सुना जरूर है पर उस अदभुत जगह को मैंने कभी देखा नहीं है। अगर वह है भी तो शायद कहीं बहुत दूर होगा।"

[49] Rin-Gin – name of the palace of Dragon King of the Sea

कछुआ बोला — "क्या तुमने उसे सचमुच ही कभी नहीं देखा। तो तुमसे दुनियाँ की एक बहुत बड़ी चीज़ देखने से रह गयी। हालाँकि वह समुद्र की तली में है पर अगर मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँ तो हम बहुत जल्दी ही वहाँ पहुँच सकते हैं। अगर तुम समुद्र के राजा का देश देखना चाहो तो मैं तुम्हें वह दिखा सकता हूँ।"

उराशिमा बोला — "मैं समुद्र के देवता का देश देखना तो चाहता हूँ और तुम्हारा मैं बहुत बहुत आभारी रहूँगा अगर तुम मुझे वह दिखा दोगे तो।

पर तुमको यह भी विचार कर लेना चाहिये कि मैं दुनियाँ का एक छोटा सा गरीब प्राणी हूँ मुझे वैसा तैरना नहीं आता जैसे तुम तैरते हो।"

मछियारे की बात खत्म होने से पहले ही कछुआ बोला — "क्या? मेरे रहते हुए तुम्हें तैरने की क्या जरूरत है। तुम तो बस मेरी पीठ पर चढ़ जाना और मैं तुम्हें बिना किसी तकलीफ के वहाँ तक ले जाऊँगा।"

उराशिमा ने पूछा — "पर मैं तुम्हारी इस छोटी सी पीठ पर चढ़ूँगा कैसे।"

कछुआ बोला — "यह तुमको पहले कुछ अटपटा लग सकता है पर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम ऐसा कर सकोगे। तुम अभी कोशिश कर के देखो। बस तुम आ जाओ और मेरी पीठ पर

बैठ जाओ और देखो कि क्या यह सचमुच ही उतना असम्भव है जितना तुम सोचते हो।”

जब कछुआ यह सब कह रहा था तो उराशिमा ने कछुए के खोल की तरफ देखा तो उसने आश्चर्य से देखा कि कछुए की पीठ का आकार तो इतना बड़ा हो गया है कि एक आदमी उस पर आसानी से बैठ सकता था।

उराशिमा बोला — “अरे वाह यह तो बहुत ही अद्भुत है। सो मिस्टर कछुए। अब मैं तुम्हारी पीठ पर सवार होने के लिये आ रहा हूँ।”

कछुआ बिल्कुल शान्त स्वभाव से बोला — “ठीक है। अब हम आराम से चलेंगे।” और इतना कह कर उराशिमा को अपनी पीठ पर ले कर कछुआ नाव से समुद्र में कूद पड़ा। और फिर समुद्र के पानी में डुबकी मार गया।

काफी समय तक ये दोनों साथी समुद्र के पानी में नीचे जाते रहे। इस बीच उराशिमा न तो थका और न ही उसके कपड़े गीले हुए। आखीर में जा कर उराशिमा को एक बहुत ही भव्य दरवाजा दिखायी दिया। और उस दरवाजे के पीछे भव्य महल की ढालू छतें थीं।

उसे देख कर उराशिमा बोला — “हॉ मुझे दिखायी दिया। यह तो किसी बड़े भव्य महल का दरवाजा दिखायी दे रहा है। मिस्टर

कछुए क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यह जगह क्या है जो हम अभी देख रहे हैं।"

कछुआ बोला — "यही तो "रिन गिन" महल का दरवाजा है। इस दरवाजे के पीछे जो तुम बड़ी सी छत देख रहे हो वही तो समुद्र के राजा के महल की छत है।"

उराशिमा बोला — "सो हम आखिर समुद्र के राजा के महल तक आ ही गये।"

कछुआ बोला — "हॉ बिल्कुल। क्या तुम्हें यह नहीं लगता कि हम लोग यहॉ बहुत जल्दी ही आ गये।"

जब वे लोग ये बातें कर ही रहे थे कि कछुआ महल के दरवाजे तक पहुॅच गया था। वहॉ पहुॅच कर वह बोला — "अब तुमको यहॉ से पैदल जाना पड़ेगा।"

कह कर कछुआ वहॉ से आगे आगे चल दिया। उसने चौकीदार से कुछ बात की। उसने उससे कहा — "यह जापान के उराशिमा टारो हैं। यह मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात कि मैं उन्हें यहॉ ले कर आया। अब आप इन्हें यह सब दिखायें।"

तब चौकीदार जो एक मछली था उसे ले कर अन्दर चला गया। दूसरे समुद्री जानवर अजनबी मेहमान का स्वागत करने बाहर आये — "उराशिमा सामा उराशिमा सामा। समुद्र के राजा के महल में आपका बहुत बहुत स्वागत है। इतने दूर देश से यहॉ आने के लिये हम आपका तीन तीन बार स्वागत करते हैं।

और तुम मिस्टर कछुए हम तुम्हारी इन कठिनाइयों के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद करते हैं जो तुम्हें इनको यहाँ लाने में हुईं।

वे फिर उराशिमा की तरफ घूमे और बोले — “आप हमारे पीछे पीछे इस रास्ते से आइये।”

वहाँ से फिर सारी मछलियाँ उसकी गाइड हो गयीं।

अब उराशिमा तो एक गरीब मछलियाँ पकड़ने वाला था उसको तो यह पता ही नहीं था कि महल में किस तरह से व्यवहार किया जाता है पर यह एक बड़ी अजीब सी बात थी कि ऐसा होते हुए भी उसको कोई शरम महसूस नहीं हो रही थी। वह बड़ी शान्ति से अपने गाइड के पीछे पीछे चलता चला जा रहा था।

अब उसके गाइड उसे समुद्र के राजा के महल के अन्दर ले कर जा रहे थे। जब वह अन्दर के दरवाजे पर पहुँचा तो एक राजकुमारी अपनी कई सुन्दर दासियों के साथ दरवाजे पर उसका स्वागत करने आयी।

वह धरती की किसी भी लड़की से अधिक सुन्दर थी। उसने लाल और वैसे ही हल्के हरे रंग के लहराते हुए कपड़े पहने हुए थे जैसा कि लहरों के नीचे का रंग होता है। उसकी पोशाक में से सोने के तारों की चमक जलक रही थी।

उसके सुन्दर काले बाल उसके कन्धों पर उसी तरह लहरा रहे थे जैसे कि पुराने समय में राजा की बेटी के बाल लहराया करते थे।

वह जब बोलती थी तो लगता था जैसे समुद्र की लहरों पर संगीत बज रहा हो।

उराशिमा ने जब उसे देखा तो वह तो दंग रह गया। वह कुछ बोल ही नहीं सका। उसके बाद उसे ध्यान आया कि उसे तो उसके सामने झुकना चाहिये था।

पर इससे पहले कि वह राजकुमारी के सामने झुकता राजकुमारी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक सुन्दर बड़े कमरे में ले गयी। वहाँ ले जा कर उसने ऊपर की तरफ ले जा कर उसे एक ऊँची गद्दी पर बिठाया।

फिर उसने उससे कहा — "उराशिमा टारो। मुझे यहाँ अपने पिता के राज्य में तुम्हारा स्वागत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। कल तुमने एक कछुए को छुड़ाया इसलिये मैंने तुम्हें धन्यवाद देने के लिये यहाँ बुलाया है। कल जिस कछुए की तुमने जान बचायी वह कछुआ मैं ही थी।

अब अगर तुम्हें अच्छा लगे तो तुम यहाँ इस हमेशा जवान रहने वाले देश में हमेशा के लिये रह सकते हो। यहाँ गरमियाँ कभी नहीं जातीं और दुख भी कभी नहीं आते।

अगर तुम्हारी इच्छा होगी तो मैं तुम्हारी पत्नी बन जाऊँगी और फिर हम हमेशा के लिये खुशी खुशी रहेंगे।"

उराशिमा उसके मीठे शब्द सुनता रहा और उसके सुन्दर चेहरे की तरफ देखता रहा उसका दिल खुशी और आश्चर्य से भर उठा। उसने उससे पूछा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा था।

वह फिर बोला — "तुम्हारे इन प्यारे से शब्दों के लिये तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद। इससे ज़्यादा की तो में इच्छा भी नहीं कर सकता था कि मैं इस आश्चर्यजनक देश में तुम्हारे साथ हमेशा के लिये रहूँ जिसके बारे में अक्सर मैंने केवल सुना ही सुना था पर आज तक कभी देखा नहीं था। यह तो इतनी अद्भुत जगह है कि इसको शब्दों में कहना बहुत कठिन है।"

जब वे यह सब बातें कर रहे थे कि तभी वहॉ बहुत सारी मछलियॉ आयीं। वे सब कोई रस्मी पोशाक पहने हुए थीं। एक के बाद एक शाही ढंग से कदम रखते हुए वे कमरे में घुसीं।

उनके हाथ में मूँगे की थालियॉ थी जिनमें खाने के लिये बहुत तरीके की मछलियॉ और समुद्र में होने वाले पौधों से बने हुए स्वादिष्ट खाने थे। इतने कि कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था। अन्दर आ कर उन्होंने वे थालियॉ दुलहे और दुलहिन के आगे रख दीं।

दुलहिन बहुत सुन्दर सजी हुई थी। समुद्र के राजा के राज्य में बहुत खुशियॉ मनायी जा रही थीं। जैसे ही शादी वाले जोड़े ने शराब के प्यालों से शादी की कसम खायी, तीन गुणा तीन बार, संगीत बज उठा, गीत गाये जाने लगे चॉदी की खाल वाली और

सुनहरी पूँछ वाली मछलियाँ समुद्र की लहरों में से निकल कर वहाँ आ गयीं और नाचने लगीं।

उराशिमा तो बहुत खुश हो गया। उसने तो अपनी पूरी ज़िन्दगी में ऐसी दावत कभी नहीं खायी थी। जब दावत खत्म हो गयी तो राजकुमारी ने दुलहे से पूछा कि क्या वह महल और वहाँ जो कुछ भी देखने योग्य है वह देखना चाहेगा।

सो खुश खुश मछियारा समुद्र के राजा की बेटी अपनी दुलहिन के पीछे पीछे चलते हुए उस अद्भुत जगह को देखने चला। उसे वहाँ के सारे आश्चर्य दिखाये गये। न तो समय और न उम्र ही उन्हें छू सकी। महल मूँगे का बना हुआ था और उसमें मोती जड़े हुए थे। उसकी सुन्दरता इतनी अधिक थी कि उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

पर उराशिमा के लिये तो महल से भी अधिक अच्छा उसका बागीचा था जिसमें चारों मौसमों के पेड़ और फूल लगे हुए थे। गरमी और जाड़े वसन्त और पतझड़ सभी की सुन्दरता थी।

पहले जब उसने पूर्व की तरफ देखा तो आलूबुखारे और चैरीज़ के पेड़ फूल रहे थे। मैना चैरीज़ के फूले हुए पेड़ों पर गा रही थी और तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर बैठ रही थीं।

जब उसने दक्षिण की तरफ देखा तो गरमी के मौसम में जैसे सारे पेड़ हरे दिखायी देते हैं वैसे ही वहाँ भी दिखायी दे रहे थे और दिन और रात के जानवर बोल रहे थे।

जब उसने पश्चिम की तरफ देखा तो पतझड़ के मौसम में जैसे मैपिल का पेड़ आग लगा हुआ दिखायी देता है वैसा दिखायी दे रहा था। क्राइसैन्थैमम[50] अपने पूरे ज़ोर पर खिला हुआ था।

उत्तर की तरफ देखो तो उराशिमा ने देखा कि उधर की जमीन तो बर्फ से ढकी हुई है। बाँस और दूसरे पेड़ भी सब बर्फ से ढके हुए हैं। तालाबों में भी बर्फ जम गयी है।

उराशिमा के लिये अब हर दिन नयी खुशी थी नये नये आश्चर्य थे। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वह इतना ज़्यादा खुश था कि अपनी खुशी के पीछे अपने घर अपने माता पिता और अपने देश को भी भूल गया था।

इस बात को सोचने के लिये कि वह अपने पीछे क्या छोड़ गया था उसे तीन दिन लग गये। तीन दिन बाद उसे होश आया और उसे याद आयी कि वह असल में कौन है और वह इस समुद्र के राजा के इस आश्चर्यजनक देश का नहीं था।

---

[50] Chrysenthamum is the national flower of Japan. It comes in various colors and shapes. Two shapes and colors flower are given above.

उसने अपने मन में सोचा "अब इससे ज़्यादा मुझे और यहाँ नहीं ठहरना चाहिये क्योंकि मेरे घर में मेरे बूढ़े माता पिता हैं। जब मैं रोज की तरह घर नहीं पहुँचा होऊँगा तो इस सारे समय न जाने उनके ऊपर क्या बीती होगी। मुझे एक भी दिन की और देर किये बिना तुरन्त ही घर जाना चाहिये।"

और उसने घर वापस जाने की तैयारी करनी शुरू कर दी। वह अपनी राजकुमारी पत्नी के पास गया और उसके सामने नीचे झुकते हुए बोला —

"वास्तव में मैं तुम्हारे साथ काफी दिनों तक बहुत खुश रहा ओ ओटोहिमे सामा[51]। और तुम भी मेरे साथ बहुत अच्छी रहीं जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। अब मुझे तुमसे विदा लेनी चाहिये और अपने बूढ़े माता पिता के पास वापस जाना चाहिये।"

यह सुन कर ओटोहिमे सामा रो पड़ी और दुखी होते हुए रोते हुए बोली — "क्या तुम्हारे साथ यहाँ सब कुछ ठीक नहीं है उराशिमा कि तुम मुझे इतनी जल्दी छोड़ कर जाना चाहते हो। कम से कम एक दिन तो और रुक जाओ।"

पर अब उराशिमा को अब अपने माता पिता की याद आ चुकी थी और जापान में माता पिता की सेवा से बढ़ कर कुछ भी नहीं। यह पत्नी के प्यार से भी ऊँचा है और उसे अब इस काम से रोका नहीं जा सकता था।

---

[51] Otohime Sama was the name of the Princess

सो उसने जवाब दिया — "वास्तव में अब मुझे जाना ही चाहिये। तुम यह नहीं सोचना कि मैं तुम्हें छोड़ कर जा रहा हूँ। ऐसा नहीं है पर अब मुझे अपने माता पिता को जा कर देखना ही चाहिये। तुम मुझे एक दिन के लिये जाने दो मैं फिर वापस लौट कर आऊँगा।"

राजकुमारी दुखी हो कर बोली — "इसके लिये कुछ नहीं किया जा सकता। बजाय इसके कि मैं तुम्हें एक और दिन के लिये भी रोकूँ मैं आज ही तुम्हें तुम्हारे माता पिता के पास भेजने का इन्तजाम करती हूँ। लो यह चिन्ह मैं तुम्हें अपने प्यार के चिन्ह के रूप में देती हूँ। तुम इसे ले जाओ।"

कह कर वह एक बहुत सुन्दर लकड़ी की सन्दूकची ले कर आयी जो एक रेशमी रस्सी से बँधी हुई थी और उस रस्सी में लाल फुँदने लगे हुए थे।

उराशिमा को राजकुमारी से इतना कुछ मिल चुका था कि वह इस भेंट को लेने में हिचक रहा था। वह बोला — "यह ठीक नहीं है कि मैं तुमसे अभी भी कोई और भेंट लूँ क्योंकि तुमने तो मेरे साथ न जाने कितने अच्छे अच्छे काम किये हैं। पर तुम्हारी इच्छा के लिये मैं इसे लिये लेता हूँ। तुम मुझे यह तो बताओ कि इसमें है क्या।"

राजकुमारी बोली — "इसमें टैमैटे बाको[52] है। यह बहुत कीमती है। चाहे कुछ हो जाये तुम इस सन्दूकची को मत खोलना।

[52] Tamate Bako

अगर तुम इसे खोलोगे तो तुम्हारे साथ कुछ भयानक घटेगा। इसलिये तुम मुझसे वायदा करो कि तुम इस सन्दूकची को कभी नहीं खोलोगे।"

उराशिमा ने राजकुमारी से वायदा किया वह उस सन्दूकची को कभी नहीं खोलेगा।

तब ओटोहिमे सामा को विदा कह कर वह समुद्र के किनारे पहुँच गया। राजकुमारी और दासियाँ उसे छोड़ने के लिये उसके पीछे पीछे गयीं। वहाँ उन्हें एक बहुत बड़ा कछुआ इन्तजार करता मिल गया।

उराशिमा उसकी पीठ पर तुरन्त ही चढ़ गया और वह कछुआ उसे पूर्व की ओर चमकीले समुद्र की ओर ले गया। वह हाथ हिलाने के लिये अपने पीछे की तरफ देखता रहा जब तक राजकुमारी उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गयी। जब तक समुद्र के राजा का महल भी उसको दिखायी देना बन्द नहीं हो गया।

उसके बाद कहीं जा कर उसने पूर्व की ओर अपने घर की ओर देखना शुरू किया। वह क्षितिज पर नीली पहाड़ियों के दिखायी देने का इन्तजार करने लगा।

आखिर कछुआ उसको उसी खाड़ी में ले आया जिससे वह भली भाँति परिचित था और फिर उस किनारे पर जहाँ से वह मछली पकड़ने के लिये चला था। उसने किनारे पर कदम रखा और अपने

चारों ओर देखा और कछुआ समुद्र के राजा के राज्य को लौट गया।

लेकिन यह क्या। जैसे ही उराशिमा ने समुद्र के किनारे पर खड़े हो कर अपने चारों ओर देखा तो एक डर की सिहरन उसके सारे शरीर में दौड़ गयी। उसके आसपास जो लोग जिनको वह देख रहा था वे उसको अजीब सी निगाहों से क्यों देख रहे थे।

समुद्र का किनारा भी वही था पहाड़ियाँ भी वही थीं पर लोग जो उसके पास से आ जा रहे थे उन सबके चेहरे उन सब चेहरों से अलग थे जिनको वह बहुत अच्छी तरह से जानता था। उसको यह समझ ही नहीं आया कि यह सब क्या था।

वह तुरन्त ही अपने पुराने घर की ओर चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने क्या देखा कि उसका मकान भी वही नहीं था जो उसने तीन दिन पहले छोड़ा था।

वह चिल्लाया — "पिता जी मैं अभी अभी वापस आया हूँ।"

कह कर वह उस मकान के दरवाजे में घुसने ही वाला था कि उसमें से एक अजीब सा आदमी बाहर निकल कर आया। उराशिमा कुछ झिझकते हुए बोला — "शायद मेरे पीछे मेरे माता पिता यहाँ से कहीं और चले गये हैं।"

उराशिमा इस सबको देख कर बहुत चिन्तित हो रहा था कि उसके साथ यह हो क्या रहा था। पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बात क्या थी।

बाहर निकला आदमी अभी उसे आश्चर्य से घूर रहा था। उराशिमा फिर बोला — "क्षमा कीजिये पिछले कुछ दिन से तो मैं इस मकान में रह रहा था। मेरा नाम उराशिमा टारो है। मेरे माता पिता कहाँ गये हैं जिन्हें मैं यहाँ छोड़ गया था।"

उस आदमी के चेहरे पर एक अजीब सा भाव आ गया। वह उसके चेहरे को घूरते हुए बोला — "क्या? क्या तुम उराशिमा टारो हो?"

"हाँ मैं उराशिमा टारो हूँ।"

यह सुन कर वह आदमी ज़ोर से हँसा। तुमको ऐसा मजाक नहीं करना चाहिये। यह सच है कि एक समय में उराशिमा टारो यहाँ रहता था पर यह कहानी तो तीन सौ साल पुरानी है। यह तो सम्भव ही नहीं है कि वह अब ज़िन्दा होगा।"

जब उराशिमा ने यह सब सुना तो वह तो डर गया और बोला — "मेहरबानी कर के मेरे साथ मजाक मत कीजिये। मैं बहुत परेशान हूँ। मैं सचमुच में उराशिमा टारो ही हूँ और यह भी सच है कि मैं तीन सौ साल तक ज़िन्दा नहीं रह सकता।

चार पाँच दिन पहले तक तो मैं यहाँ रह ही रहा था। मेहरबानी कर के मुझे वह बताइये जो मैं पूछ रहा हूँ। मुझसे मजाक मत कीजिये।"

यह सुन कर उस आदमी का चेहरा और गम्भीर हो गया। वह बोला — "मैं नहीं जानता कि तुम उराशिमा टारो हो या नहीं। तुम

उराशिमा टारो हो भी सकते हो और नहीं भी हो सकते मुझे नहीं मालूम।

पर उराशिमा टारो जिसके बारे में मैंने सुना है वह तो आज से तीन सौ साल पहले रहता था। यह हो सकता है कि तुम उसकी आत्मा हो जो अपना पुराना घर देखने आयी हो।"

उराशिमा फिर बोला — "मुझसे मजाक क्यों करते हो। मैं कोई आत्मा नहीं हूँ। मैं तो जीता जागता ज़िन्दा आदमी हूँ।"

यह कह कर उसने यह दिखाने के लिये वह कोई आत्मा नहीं है अपने दोनों पैर जमीन पर ठप ठप कर के मारे क्योंकि सब जानते हैं कि जापानी भूत के पैर नहीं होते।

"पर उराशिमा तो यहाँ तीन सौ साल पहले रहता था मैं बस इतना जानता हूँ। यह गाँव के इतिहास में लिखा है।" आदमी ने जिद की क्योंकि वह मछियारा क्या कह रहा था वह यही नहीं समझ पा रहा था।

उराशिमा इस उलझन में उलझ कर रह गया। वह अपने चारों तरफ देखता ही रहा। देखने में हर चीज़ जैसी वह छोड़ कर गया था उससे उसे अलग नजर आ रही थी। बाद में उसे लगा कि शायद वह आदमी सच ही कह रहा होगा। उसका लगा कि यह सब एक आश्चर्यजनक सपना था।

ये कुछ दिन जो उसने समुद्र के राजा के महल में बिताये ये केवल दिन ही नहीं थे उसका हर दिन सौ साल के बराबर था। और

उस बीच उसके माता पिता मर गये और वे सब लोग भी जिनको वह जानता था। और गॉव में उसका नाम उसके इतिहास में लिखा गया।

अब यहॉ रुकने का कोई फायदा नहीं है। अब उसे समुद्र के राज्य में अपनी पत्नी के पास चले जाना चाहिये। सो उसने अपनी वह सन्दूकची ली जिसे राजकुमारी ने उसे दी थी और वह समुद्र के किनारे चल दिया।

लेकिन उसके पास जाने का रास्ता कौन सा था। वह अकेला तो उसे नहीं ढूंढ सकता था। अचानक उसे टैमैटे बाको सन्दूकची का ध्यान आया।

उसने सोचा "राजकुमारी ने तो कहा था कि मैं इस सन्दूकची को कभी न खोलूॅ। और इसके अन्दर कोई बहुत कीमती चीज़ रखी थी।

पर अब जब मेरा कोई घर नहीं है और जो कुछ भी मुझे बहुत प्रिय था वह मेरा सब कुछ नष्ट हो चुका है और मेरा दिल बहुत दुखी है तो ऐसे समय में मैं अगर यह सन्दूकची खोल भी लूं तो मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे कुछ तो मिल जायेगा जो मुझे तसल्ली तो दे सकेगा। हो सकता है कि यह मुझे मेरी राजकुमारी तक पहुॅचने का रास्ता ही बता दे।

अब मेरे पास और रह ही क्या गया है। केवल यह सन्दूकची ही तो है मैं इसे खोल ही लेता हूॅ।"

सो उसने अपने दिल से आज्ञा ले कर और राजकुमारी की बात न मान कर उसने यह जानते हुए भी कि ऐसे समय में वह राजकुमारी की बात न मान कर ठीक ही कर रहा है उसने वह सन्दूकची खोल दी।

धीरे धीरे उसने रेशम की रस्सी की गॉठ खोली और धीरे धीरे उसने इस आश्चर्य के साथ कि उसके अन्दर क्या हो सकता था उसने उस कीमती सन्दूकची का ढकना खोल दिया। उसमें से क्या निकला? केवल बैंगनी रंग का धुॅआ वह भी तीन बार में।

एक पल को उसने उसका चेहरा ढक दिया। उसको ऐसा लगा जैसे वह शिथिल पड़ता जा रहा है और फिर वह समुद्र पर तैर गया। उराशिमा जो तब तक बिल्कुल मजबूत और स्वस्थ था चौबीस साल का जवान था अचानक बूढ़ा हो गया।

वह बर्फ की तरह से सफेद पड़ गया था। उसके चेहरे पर झुर्रियॉ पड़ गयी थीं। वह वहीं समुद्र के किनारे पर नीचे गिर पड़ा और मर गया।

बेचारा उराशिमा। क्योंकि उसने राजकुमारी की बात नहीं मानी थी वह समुद्र के राजा के राज्य में या राजकुमारी के पास कभी नहीं लौट सका।

बच्चों कभी उनकी आज्ञा का उल्लंघन मत करो जो तुमसे अधिक ज्ञानवान हैं। क्योंकि उनकी आज्ञा का उल्लंघन ज़िन्दगी में दुख और परेशानी ही लाता है।

18 विसू लकड़हारा और एक बूढ़ा पुजारी[53]

यह बहुत पुरानी बात है कि सुरूगा के एक बंजर मैदान में एक लकड़हारा रहता था जिसका नाम था विसू। वह शरीर से बहुत बड़ा था और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक छोटे से मकान में रहता था।

एक दिन विसू के घर एक बूढ़ा पुजारी आया और उसने उससे कहा — "आदरणीय लकड़हारे जी। मुझे लगता है कि आप कभी भगवान की प्रार्थना नहीं करते।"

विसू बोला — "अगर आपके कोई पत्नी होती और एक बड़ा परिवार होता तब आपके पास प्रार्थना करने का समय ही नहीं होता।"

विसू के यह कहने से पुजारी गुस्सा हो गया। उसने विसू को डराने के लिये पुनर्जन्म का एक भयानक वर्णन किया कि आप अगले जन्म में करोड़ों सालों तक कोई मेंढक या चूहा या फिर कोई कीड़ा बन कर पैदा होंगे।

विसू को ऐसी कहानियाँ बिल्कुल पसन्द नहीं थीं सो उसने पुजारी जी से वायदा किया कि आगे से वह भगवान की प्रार्थना अवश्य करेगा।

---

[53] Visu the Woodsman and the Old Priest. Taken from the book : "Myths and Legends of Japan". By Hedland Davis. London : George G Harrap. 1912. Davis entitles this story as "Rip van Winkle of Old Japan"

पुजारी जी ने कहा — "काम भी करो और पूजा भी करो।" यह कह कर पुजारी जी चले गये।

अब हुआ यह कि विसू ने कोई काम तो किया नहीं और बस प्रार्थना ही करता रहा। वह सारा दिन प्रार्थना ही करता रहा और अपने काम पर नहीं गया सो उसकी चावल की फसल खराब हो गयी। उसकी पत्नी और बच्चों के पास अब खाने के लिये कुछ नहीं था।

विसू की पत्नी ने आज तक कभी भी विसू से कोई सख्त शब्द नहीं कहा था और न ही ऊँची आवाज में बात की थी पर अब वह विसू से बहुत गुस्सा थी।

अपने बच्चों के पतले दुबले शरीर दिखा कर वह विसू से बोली — "उठो विसू। अपनी कुल्हाड़ी उठाओ और बजाय प्रार्थना बुड़बुड़ाने के हमारी सहायता के लिये कुछ उपयोगी काम करो।"

जिस तरीके से विसू की पत्नी ने यह सब विसू से कहा था उसको देख कर उसे कुछ अच्छा नहीं लगा। असल में कुछ समय पहले ही वह इस बात का जवाब सोच रहा था।

जब उसने सोच लिया तो उसके शब्द भी अपनी बेचारी पत्नी के लिये थोड़े सख्त और गुस्से वाले निकले। उसने कहा — "सुनो। भगवान पहले आता है। आपने मुझसे ऐसा बोल कर बहुत गलत किया है। आप मुझसे बात करने लायक नहीं हैं। मेरा अब आपसे कोई लेना देना नहीं है।"

यह कह कर विसू ने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और बिना उसे विदा कहे वह जंगल की तरफ चला गया और फिर फूजीयामा[54] पर चढ़ गया जहाँ वह कोहरे में गायब हो गया।

जब विसू पहाड़ पर बैठ गया तो उसने पत्तियों की हल्की सी सरसराहट सुनी और फिर उसके बाद एक लोमड़े को देखा जो विसू के लिये एक बहुत ही शुभ संकेत था।

बस उसने अपनी पूजा छोड़ी और कूद कर लोमड़े के पीछे भाग लिया ताकि वह उस तेज़ नाक वाले जानवर को पकड़ सके।

वह उसका पीछा छोड़ना चाहता था कि वह जंगल में एक खुली जगह आ गया। वहाँ उसने एक नाले के पास दो स्त्रियों को बैठे खेलते देखा। वह उन्हें देख कर इतना मोहित सा रह गया कि वह बस वहाँ बैठ कर उनको देखने के सिवाय और कुछ भी नहीं कर सका।

उस समय वहाँ और कोई आवाज नहीं हो रही थी सिवाय उन गोटियों की ठक ठक के जिनसे वे वह खेल खेल रही थीं और नाले में पानी के बहने के।

उन स्त्रियों का ध्यान विसू की तरफ नहीं गया क्योंकि ऐसा लगता था कि वे अपने खेल में इतनी व्यस्त थीं कि लगता था कि उस खेल का कोई अन्त ही नहीं था। उधर विसू भी अपनी आँखें उन स्त्रियों से हटा नहीं पा रहा था।

---

[54] Fujiyama – name of a mountain in Japan

वह उनके लम्बे बालों और तेज़ चलने वाले हाथों को देख रहा था और उनकी लम्बी रेशमी आस्तीनों को जो खेलने से बार बार हिल रही थीं। वह वहाँ गरमी का एक तीसरा प्रहर बैठा रहा। हालाँकि उसके लिये वह केवल एक प्रहर ही था पर धरती पर वह प्रहर तीन सौ साल का था।

एक बार उसने एक स्त्री को गलत चाल चलते देखा। वह अपने आपको बीच में बोलने से रोक नहीं सका और चिल्लाया — "ओ सुन्दरी यह तो गलत चाल है।"

तुरन्त ही उन दोनों स्त्रियों ने अपने आपको लोमड़ों में बदला और वहाँ से भाग गयीं।

तुरन्त ही विसू ने उनका पीछा किया कि वह तो यह देख कर डर गया कि उसके जोड़ तो बहुत बुरे तरीके से अकड़ गये थे। उसके बाल लम्बे हो गये थे और उसकी दाढ़ी भी जमीन छूने लगी थी।

इससे भी बड़ी बात तो यह थी कि उसकी कुल्हाड़ी का हैन्डिल जो एक बहुत ही मजबूत लकड़ी बना हुआ था उसके हाथों में पिघल कर नीचे गिर कर चूर चूर हो गया और एक मिट्टी के ढेर में बदल गया।

बड़ी मुश्किल से विसू अपने पैरों पर खड़ा हो सका। इसके बाद वह वहाँ से धीरे धीरे अपने घर को चल दिया। जब वह अपने घर

पहुँचा तो यह देख कर वह बड़े आश्चर्य में पड़ गया कि उसका मकान तो वहाँ था ही नहीं।

वहाँ उसने एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री खड़ी देखी तो उसने उससे कहा — "मैडम। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि मेरा मकान यहाँ से गायब हो गया है। मैं दोपहर को यहाँ से गया था और अब शाम को यहाँ वह नहीं है।"

बुढ़िया को लगा कि वह कोई पागल है जो उससे इस तरह की बातें कर रहा है सो उसने उसका नाम पूछा। जब लकड़हारे ने उसे अपना नाम बताया तो वह बोली — "आह। तुम तो सचमुच में ही पागल हो। विसू तो यहाँ तीन सौ साल पहले रहता था। एक दिन वह यहाँ से गया तो फिर वह वापस ही नहीं आया।"

विसू मुँह ही मुँह में बड़बड़ाया "तीन सौ साल। यह नहीं हो सकता। फिर मेरी पत्नी और बच्चे कहाँ हैं।"

बुढ़िया बोली — उनको तो दफ़न कर दिया गया। और अगर तुम जो कहते हो वह सही है तो तुम्हारे बच्चों के बच्चे भी। देवताओं ने अपनी पत्नी और बच्चों की परवाह न करने की सजा में तुम्हारी यह अभागी ज़िन्दगी बढ़ा दी है।"

विसू के गालों पर बड़े बड़े ऑसू टपकने लगे। उसने भर्रायी हुई आवाज में कहा — "मेरी तो ज़िन्दगी ही बेकार हो गयी। मैं केवल पूजा ही करता रहा जबकि मेरी प्रिय पत्नी और बच्चे भूखे मरते रहे। जब उनको मेरे मजबूत हाथों की जरूरत थी।

ओ बुढ़िया मेरे ये आखिरी शब्द याद रखना – अगर तुम पूजा करो तो काम भी करो।"

हमें नहीं मालूम बेचारा विसू अपने इस कारनामे से वापस आ कर इस तरह पछताता हुआ कब तक ज़िन्दा रहा। जब चॉद बहुत ज़ोर से चमकता है तो उसकी आत्मा अभी तक फूजीयामा को डराती रहती है।

19 माटसूयामा का शीशा[55]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक शान्त जगह में एक नौजवान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक छोटी सी बेटी थी। वे दोनों उसे बहुत प्यार करते थे। वे ऐचीगो प्रान्त[56] में माटसूयामा जगह में रहते थे।

बच्ची के बचपन से बड़े होने तक के समय की यादें उनके दिमाग में अभी तक घूम रही थीं। कितने सुनहरे दिन थे वे। वह दिन जब वे उसे पहली बार मन्दिर ले कर गये थे – वह केवल तीस दिन की थी।

उस समय उसने अपनी रस्मी किमोनो पोशाक[57] पहनी हुई थी जब उसकी माँ उसे अपने परिवार के देवता के पास ले कर गयी थी। फिर उसका पहला गुड़ियों का त्यौहार जब उसके माता पिता ने उसे कुछ गुड़ियें दी थीं।

फिर उसके बाद और छोटी छोटी चीज़ें जो समय समय पर उसे दी गयी थीं। और शायद सबसे मुख्य चीज़ वह थी जो उसे उसकी तीसरे जन्म दिन पर दी गयी थी ब्रोकेड की लाल और सुनहरे रंग की एक चौड़ी पेटी जिसे वह अपनी कमर में बाँधती थी।

---

[55] The Mirror of Matsuyama. By Wei Theodora Ozaki. Taken from the Web Site : https://fairytalez.com/the-mirror-of-matsuyama/

[56] They lived at Matsuyama in the Province of Echigo.

[57] Kimono is the Japanese national traditional dress.

यह पेटी इस बात को बताती थी कि उसने अपना शिशु जीवन अब खत्म कर लिया है और वह लड़की हो गयी है।

जब वह सात साल की हो गयी तो उसने बात करना सीख लिया था। उसने अपने माता पिता की कई तरीके से सहायता करना सीख लिया था जो उसे इतना प्यार करते थे। अब माता पिता के प्यार का प्याला उसके लिये पूरी तरीके से भरा हुआ था।

उस टापू देश में अब उस परिवार से ज़्यादा खुश और कोई परिवार नहीं था।

एक दिन उस परिवार में और बहुत ज़्यादा खुशी छा गयी क्योंकि उस बच्ची के पिता को किसी काम से जापान की राजधानी एक बड़े शहर जाना पड़ा।

उन दिनों में रेल रिक्शा बस आदि किसी भी प्रकार के जल्दी यात्रा के साधन नहीं थे। यह कल्पना के बाहर था कि माटसूयामा से राजधानी क्योटो[58] तक की यात्रा कैसे की जायेगी।

सड़कें बहुत ऊँची नीची और गड्ढे वाली थीं। साधरण लोगों को तो चल कर ही जाना होता था चाहे कोई जगह सौ कदम पर हो या फिर सौ मील पर।

वास्तव में उन दिनों राजधानी जाना एक बहुत बड़ा काम था जैसे किसी जापानी के लिये समुद्र के रास्ते से यूरोप जाना।

[58] Kyoto – old capital of Japan

इसलिये पत्नी जब पति का सामान बाँध रही थी तो वह उसकी यात्रा को ले कर बहुत चिन्तित थी क्योंकि उसको मालूम था कि उसके पति के सामने यह कितना कठिन काम था।

उसका यह इच्छा करना भी बेकार था कि वह उसके साथ जा सकती थी क्योंकि माँ और बच्ची दोनों के लिये उतनी दूर चलना असम्भव था। और फिर घर की देखभाल करना तो पत्नी का ही काम था।

आखिर सब तैयारी हो गयी और पति जाने के लिये घर के बाहर अपने छोटे से परिवार के साथ तैयार खड़ा था। जाते समय पति ने अपनी पत्नी से कहा — "मेरे पीछे घर का ख्याल रखना खास कर के हमारी बेटी का।"

पत्नी ने कहा — "ठीक है। हम लोग तो ठीक ही रहेंगे पर तुम अपना ख्याल रखना और घर लौटने में एक दिन की भी देरी मत करना।" और यह कहते कहते पत्नी की आँखों से आँसू बहने लगे।

केवल अकेली छोटी बच्ची ही मुस्कुरा रही थी क्योंकि अलग होना क्या होता है यह वह अभी जानती ही नहीं थी। वह यह भी नहीं जानती थी कि राजधानी जाना बराबर के गाँव जाने से कितना अलग था क्योंकि बराबर के गाँव तो उसका पिता अक्सर जाता ही रहता था।

वह उसके पास तक दौड़ी और उसे एक पल को रोकने के लिये उसके कोट की लम्बी बॉहें पकड़ लीं और बोली — "पिता जी। जब आप बाहर होंगे तो मैं अच्छी तरह से रहूँगी। जब आप लौट कर आयें मेरे लिये वहॉ से कोई अच्छी सी चीज़ ले कर आयेगा।"

जैसे ही पति अपनी रोती हुई पत्नी और मुस्कुराती हुई बच्ची पर एक आखिरी नजर डालने के लिये मुड़ा तो उसको लगा जैसे कोई उसके बाल इतनी ज़ोर से पकड़ कर खींच रहा हो कि उसको उनको इस तरह पीछे छोड़ कर जाना बहुत मुश्किल हो गया। क्योंकि इससे पहले वे इस तरह से कभी अलग नहीं हुए थे।

पर वह जानता था कि उसे तो जाना ही है क्योंकि उसका जाना बहुत जरूरी था। बड़ी मुश्किल से उसने इस बारे में सोचना बन्द किया और अपने छोटे बागीचे से हो कर बाहर की तरफ चला गया।

उसकी पत्नी बच्ची को लिये हुए फाटक तक दौड़ी और उसे पाइन के पेड़ों के बीच से जाते हुए देखती रही जब तक वह धुँधलके में लुप्त नहीं हो गया। पहले तो उसका टोप दिखायी देता रहा फिर वह भी दिखायी देना बन्द हो गया।

मॉ बोली — "अब तुम्हारे पिता तो चले गये अब जब तक वह वापस आते हैं तब तक मुझे ही घर देखना भालना है।" कहते हुए मॉ बच्ची को ले कर घर के अन्दर चली गयी।

बच्ची ने हॉ में सिर हिलाते हुए कहा — "मैं अच्छी बच्ची बन कर रहूँगी। जब पिता जी घर आयें तो उनसे कहना कि उनके पीछे मैं कितनी अच्छी बच्ची बन कर रही। फिर हो सकता है कि वह मेरे लिये कोई अच्छी सी चीज़ ले कर आयें।"

मॉ बोली — "बेटी तुम्हारे पिता तुम्हारे लिये जरूर ही कोई अच्छी चीज़ ले कर आयेंगे। मुझे मालूम है क्योंकि मैंने उनसे तुम्हारे लिये एक गुड़िया लाने के लिये कहा है। तब तक तुम रोज अपने पिता के बारे में सोचो और उनकी सुरक्षित यात्रा की प्रार्थना करो जब तक वह लौट कर आते हैं।"

बच्ची अपनी तालियॉ बजाते हुए बोली — "जब वह लौट कर आयेंगे तब मैं कितनी खुश होऊॅगी।"

यह कहते कहते उसका चेहरा अपने पिता के आने की बात सोच कर ही खुशी से चमकने लगा। बच्ची के चमकते चेहरे की तरफ देखते देखते मॉ को लगा कि उसका प्यार बच्ची के लिये कुछ और ज़्यादा ही बढ़ गया है।

उसके बाद वह तीनों के लिये जाड़ों के कपड़े बनाने के लिये बैठ गयी। कपड़ा बनाने से पहले उसने अपना सादा सा ऊन कातने वाला चरखा रखा और ऊन कातने लगी।

बीच बीच में वह बच्ची को उसके खेलों मे सहायता करती जाती थी। उसने उसे अपने देश की पुरानी कहानियॉ भी सुनायीं।

इस तरह पति के जाने के बाद पत्नी अकेले में अपना दिल बहलाती रही। इधर पत्नी के दिन बीतते रहे उधर पति ने भी अपना काम खत्म कर दिया।

अब जो आदमी को न पहचानता हो उसके किसी के लिये भी उसे पहचानना कठिन हो सकता था क्योंकि वह लगभग एक महीने से दिन रात हर मौसम में चलता हुआ चला आ रहा था। उसका रंग बदल कर तॉबे जैसा हो गया था।

पर उसकी पत्नी और बच्ची जो उसे बहुत प्यार करते थे उसे देखते ही पहचान गये। उसके आते ही वे उसका स्वागत करने के लिये दोनों तरफ से दौड़े। दोनों ने उससे मिलने की इच्छा में उसकी दोनों आस्तीनें पकड़ लीं।

पति पत्नी दोनों बहुत खुश थे। जब तक पति ने अपनी घास के जूतों को खोला अपना छतरी जैसा टोप निकाला तब तक का समय सबको बहुत लम्बा लगा।

अब वह अपने परिवार के साथ फिर से उसी अपने जाने पहचाने कमरे में बैठा हुआ था जो उसके जाने के बाद खाली सा हो गया था।

अपनी सफेद चटाइयों पर बैठने के बाद पिता ने अपने साथ लायी एक बॉस की टोकरी खोली और उसमें से एक सुन्दर सी गुड़िया निकाली और एक केक का डिब्बा निकाला।

उन्हें बेटी को देते हुए वह बोला — "लो यह तुम्हारे लिये है। जब मैं यहाँ नहीं था तो तुमने अपनी माँ और घर की बहुत अच्छे से देखभाल की न।"

बच्ची ने जमीन तक सिर झुका कर उसे धन्यवाद दिया और फिर उन्हें लेने के लिये मैपिल के पत्ते की तरह से अपने हाथ पिता के सामने फैला दिये। दोनों ही चीज़ों जैसी सुन्दर उसने पहले कोई चीज़ नहीं देखी थी। वे दोनों राजधानी से आयी थीं न।

बच्ची उनके पा कर कितनी खुश थी इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसके चेहरे से लग रहा था जैसे खुशी से उसका चेहरा पिघल जायेगा। उसकी आँखें न तो कुछ और देख रहे थे और दिमाग न कुछ और सोच रहा था।

पति ने फिर से अपनी टोकरी में हाथ डाला और अबकी बार उसमें से एक चौकोर डिब्बा निकाला जो लाल और सफेद धागे से बँधा हुआ था। उसे अपनी पत्नी को देते हुए उसने कहा — "लो यह तुम्हारे लिये है।"

पत्नी ने उसे बहुत सावधानी से खोला तो उसमें धातु का एक छोटा सा गोल टुकड़ा था जिसमें एक हैन्डिल लगा हुआ था। एक तरफ से वह चाँदी के रंग का था और उस पर उठी हुए सारस और पाइन के पेड़ बने हुए थे। उसके दूसरी तरफ साफ क्रिस्टल जैसी सतह थी।

ऐसी चीज़ तो उसने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखी थी क्योंकि वह तो ऐचीगो के गॉव में पैदा और बड़ी हुई थी।

उसने उसकी चमकती तरफ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि टुकड़े में से तो कोई उसकी तरफ घूर रहा था। वह बोली — "यह तुमने मुझे क्या दिया है जिसमें से कोई मुझे देख रहा है।"

यह सुन कर पति हॅसा और बोला — "अरे इसमें तो तुम्हारा ही चेहरा ही तो दिखायी दे रहा है। यह जो मैं तुम्हारे लिये ले कर आया हूॅ इसे शीशा कहते हैं। जो भी इसकी चमकते हुई सतह पर देखता है उसे इसमें अपना ही चेहरा दिखायी देता है।

हालॉकि इस दूर की जगह में यह नहीं मिलता पर फिर भी राजधानी में तो इसे बहुत प्राचीन समय से इस्तेमाल किया जाता रहा है। वहॉ तो स्त्रियों के लिये इसे रखना बहुत जरूरी है।

एक बहुत ही पुरानी कहावत है "जैसे एक योद्धा के लिये तलवार जरूरी है उसी तरीके से एक स्त्री के लिये यह जरूरी है।" एक लोकप्रिय परम्परा के अनुसार एक शीशा स्त्री के हृदय का प्रतिरूप है।

अगर वह इसे साफ रखती है तो उसका हृदय भी साफ और सुन्दर है। यह महाराजा की पहचान है। इसलिये तुम इस शीशे को सावधानी से बरतो।"

पत्नी ने अपने पति की सारी बातें ध्यान से सुनीं और यह सब जान कर बहुत खुश हुई। यह सब तो उसके लिये बिल्कुल नया

था। वह इस भेंट को पा कर बहुत ख़ुश थी। यह उसके उस पति की याद दिलाती थी जो बाहर रह कर आ रहा था।

"अगर यह शीशा मेरी अपनी आत्मा है तो मैं इसे एक कीमती चीज़ समझ कर रखूँगी और इसको कभी असावधानी से इस्तेमाल नहीं करूँगी।" कह कर उसने उसे अपने सिर तक ऊँचा उठा लिया और उस भेंट का आदर करते हुए उसे फिर से डिब्बे में बन्द कर के रख दिया।

पत्नी ने देखा कि पति बहुत थका हुआ है तो वह शाम का खाना लगाने चली गयी। फिर उसने सब कुछ उसकी इच्छानुसार कर दिया ताकि उसे ज़्यादा से ज़्यादा आराम मिल सके।

परिवार को इस समय इतना अच्छा लग रहा था जैसे इससे पहले परिवार को ख़ुशी का पता ही नहीं था। शाम को पति ने पत्नी और बच्ची को अपनी यात्रा और राजधानी की बहुत सारी बातें बतायीं।

दिन निकलते जा रहे थे। माता पिता के देखते देखते ही ऊनकी प्यारी बिटिया सोलह साल की हो गयी। वह कीमती हीरा अभी भी उसके मालिक के हाथ में था। उन्होंने उसका लालन पालन इतने अधिक प्यार से किया था कि उनकी उस तकलीफ का बदला अब उन्हें दोगुना मिल रहा था।

वह अपनी माँ की अच्छी साथिन थी क्योंकि वह घर के हर काम में उसकी बहुत सहायता करती थी। उसके पिता को भी उस

पर बहुत गर्व था क्योंकि उसे देख कर पिता को उसकी माँ की याद रहती जब उसने उससे शादी की थी।

पर अफसोस। इस दुनियाँ में कोई भी चीज़ हमेशा नहीं रहती। यहाँ तक कि चाँद की शक्ल भी एक सी नहीं रहती। आखिर एक दिन इस परिवार की खुशी भी नहीं रही। भली माँ एक दिन बीमार पड़ गयी।

बीमारी के पहले कुछ दिनों में पति और बच्ची ने सोचा कि यह साधारण ठंड जुकाम है इसलिये उन्होंने उसकी अधिक चिन्ता नहीं की पर जब दिन बीतते गये और माँ ठीक नहीं हुई बल्कि उसकी तबियत और गिरती गयी।

डाक्टर भी परेशान हो गया क्योंकि अपनी पूरी कोशिशों के बाद भी वह उसे ठीक नहीं कर सका बल्कि वह दिनोंदिन कमजोर पर कमजोर होती गयी। पिता और बच्ची बहुत दुखी हो गये। बच्ची दिन रात माँ के पास ही बैठी रहती। सब कुछ करते हुए भी माँ को नहीं बचाया जा सका।

एक दिन जब लड़की माँ के पास बैठी हुई थी और अपने दुख को छिपा कर हँसने की कोशिश कर रही थी तो माँ उठ कर बैठ गयी और बेटी का हाथ अपने हाथ में ले कर प्यार से उसकी आँखों में देखने लगी।

वह बड़ी कठिनाई से साँस ले रही थी सो वह बहुत मुश्किल से बोली — "मेरी बच्ची। मुझे पूरा यकीन है कि अब मुझे कोई नहीं

बचा सकता। मुझसे वायदा कर कि जब मैं मर जाऊॅ तो तू अपने पिता की देखभाल करेगी और एक अच्छी कर्तव्य निष्ठावान स्त्री बनेगी।"

लड़की ऑखों से ऑसू गिरने लगे वह बोली — "मॉ आप ऐसी बात मत कहिये। बस आप जल्दी जल्दी ठीक हो जाइये। वही मेरे पिता और मेरे लिये सबसे ज़्यादा खुशी की बात होगी।"

मॉ बोली — "हॉ मुझे मालूम है बेटी और मुझे यह सुन कर खुशी भी है कि तुम लोग मेरी ज़िन्दगी के लिये कितने चिन्तित हो पर ऐसा होने वाला नहीं है। दुखी मत हो क्योंकि मेरे पहले जन्म में यही लिखा गया था कि मैं इस जन्म में ऐसे ही मरूॅगी।

यह बात जानते हुए मैं अपने आपको अपने भाग्य के सहारे छोड़ती हूॅ। मेरे पास कुछ है जो जब मैं मर जाऊॅ तब तुम्हारे पास मेरी याद करने के लिये रहेगा।"

इतना कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया और तकिये के बराबर से एक लकड़ी का डिब्बा निकाला जो रेशमी रस्सी और फुॅदने से बॅधा हुआ था। सावधानी से उसकी गॉठ खोलते हुए उसने डिब्बे में से शीशा निकाला जो उसके पति ने उसे सालों पहले दिया था।

उसे उसको देते हुए वह बोली — "कई साल पहले तुम्हारे पिता राजधानी गये थे और वहॉ से मेरे लिये यह कीमती चीज़ ले कर आये थे। इसे शीशा कहते हैं। मरने से पहले मैं यह तुम्हें देना चाहती हूॅ।

अगर मैं मर जाऊँ और कभी तुम मुझे देखना चाहो तो यह शीशा निकालना और इसकी चमकती सतह पर देखना तो तुम्हें मैं दिखायी दे जाऊँगी। इससे तुम मुझसे अक्सर ही मिल सकोगी।

हालाँकि मैं उस समय तुमसे बात नहीं कर सकूँगी पर उस समय तुम्हारे दिल में जो कुछ भी हो तुम मुझसे वह कह सकती हो। जो कुछ भी तुम्हारे साथ होगा मैं तुम्हें समझ लूँगी और तुम्हारे साथ सहानुभूति भी प्रगट कर सकूँगी।"

कह कर उस मरती हुई स्त्री ने वह शीशा अपनी बेटी को दे दिया। माँ का मन अब शान्त था। इसके आगे वह फिर कुछ नहीं बोली और उसी दिन वह मर गयी।

दुखी पिता और बेटी तो दुख से पागल से हो गये। उन्होंने तो जैसे अपने आपको दुख के हवाले ही कर दिया था। उस स्त्री से उनको विदा लेने में बहुत कठिनाई हो रही थी जिसने अब तक उनकी ज़िन्दगियाँ हँसी खुशी से भर रखी थीं। अब उसका शरीर मिट्टी में मिलाया जा रहा था।

समय गुजरा और यह भयानक दुख भी गुजर गया। उनका दिल थोड़ा सँभलने लगा। यह सब होते हुए भी उनकी बेटी की ज़िन्दगी बहुत अकेली हो गयी थी। बढ़ते समय के साथ बेटी का दुख उसकी मरी हुई माँ के लिये कम नहीं हुआ था।

माँ की याद उसे इतनी आती थी कि रोजमर्रा की छोटी छोटी चीज़ें जैसे पानी का बरसना हवा का चलना और वे सभी चीज़ें जो

उन्होंने साथ साथ की थीं उसे अपनी माँ की मौत की याद दिला जातीं।

एक दिन जब उसका पिता बाहर गया हुआ था और वह अकेली ही घर का सारा काम कर रही थी तो वह माँ के न होने का दुख सँभाल नहीं पायी और माँ के कमरे में जा कर रोने लगी जैसे उसका दिल बिल्कुल ही टूट गया हो।

वह बेचारी अपनी माँ की एक झलक देखने के लिये तड़प उठी। एक आवाज सुनने के लिये तरस उठी कि वह उसका घर का नाम ले कर पुकारे कि अचानक वह बैठ गयी और उसे अपनी माँ के आखिरी शब्द याद आये।

उसने सोचा "जब माँ मुझसे अलग हुई थी तब उसने मुझे शीशा देते हुए कहा था कि जब भी मैं उसमें देखूँगी तब तब मुझे उसमें उसकी शक्ल नजर आयेगी। मैं तो उसकी यह बात भूल ही गयी थी। कैसी बेवकूफ हूँ मैं। मैं अभी शीशा ले कर आती हूँ और देखती हूँ कि क्या यह सम्भव है।"

उसने तुरन्त अपने आँसू पोंछे और आलमारी की तरफ चल दी। आलमारी में से उसने वह डिब्बा निकाला जो उसे उसकी माँ ने दिया था और काँपते हाथों से उसे खोला।

धड़कते दिल से उसे इस आशा में खोला कि वह उसमें अपनी माँ की शक्ल देख पायेगी। उसने उसकी चमकदार सतह अपनी तरफ की और उसमें देखा। माँ तो सच कह रही थी।

उस गोल शीशे में उसका गोल गोल चेहरा दिखायी दे रहा था। कितना खुशी भरा आश्चर्य था। यह चेहरा उसका पीला और बीमारी से पतला सा नहीं था बल्कि एक नौजवान लड़की का सा चेहरा था। उस चेहरे को देख कर उसे अपने बचपन की याद आ गयी जब उसकी मॉ का चेहरा वैसा हुआ करता था।

उस चेहरे को देख कर उसे ऐसा लगा जैसे कि वह अभी बोल पड़ेगा। बल्कि उसे लगा जैसे उसकी मॉ उससे फिर से यह कह रही हो कि "तुम बड़ी हो कर एक अच्छी स्त्री बनना।" और शीशे वाली ऑखों ने उसकी ऑखों में झॉक कर देखा।

लड़की ने सोचा "यह शायद मेरी मॉ की ही आत्मा है। इसको पता है कि बिना उसके मैं कितनी दुखी हूॅ इसी लिये वह मुझे तसल्ली देने के लिये यहॉ आ गयी। अब जब भी मुझे उन्हें देखने की इच्छा होगी तब मैं उसे यहॉ देख पाऊॅगी। ओह मैं अपनी मॉ की कितनी ऋणी हूॅ।"

अब उसके दिल के दुख का बोझ बहुत हल्का हो गया था। अब हर सुबह सवेरे घर का सारा काम करने के लिये ताकत पाने के लिये और शाम को अपने दिल को तसल्ली देने के लिये वह लड़की शीशा निकालती और कुछ पलों तक उस परछाईं को देखती रहती जिसे अपने भोलेपन में वह समझती थी कि वह उसकी मॉ का चेहरा है।

इस तरह से रोज रोज वह अपनी मरी हुई माँ के चरित्र में ढलने लगी। वह सबके प्रति दयालु रहती और अपने पिता की आज्ञाकारी बेटी।

इस तरह से उस छोटे से घर में दुख का एक साल बीत गया। अपने सम्बन्धियों की सलाह पर आदमी ने दूसरी शादी कर ली। लड़की की अब सौतेली माँ आ गयी थी सो अब वह लड़की की देखभाल करने वाली बन गयी थी।

यह लड़की के लिये एक चुनौती थी पर उसके दिन अपनी मरी हुई माँ की याद में निकल रहे थे। वह वैसी ही बनने की कोशिश करती जैसा कि उसकी अपनी माँ ने कहा था। इससे लड़की बहुत चुप चुप रहने लगी और धैर्यवान बन गयी। वह अपनी सौतेली माँ का हर तरह से कहना मानती।

कुछ समय तक तो इस नये राज में सब कुछ ठीकठाक चलता रहा। कोई गड़बड़ नहीं हुई। पिता भी सन्तुष्ट था। पर स्त्री का खतरा तो रहता ही है खास कर के सौतेली माँओं का। यह तो जगत प्रसिद्ध है। इस माँ का दिल भी वैसा नहीं था जैसा लड़की की अपनी माँ का था।

दिन हफ्तों में बदले हफ्ते महीनों में बदल गये और सौतेली माँ ने बिन माँ की बेटी के साथ बुरा व्यवहार करना शुरू कर दिया। उसने पिता और बेटी के बीच दरार डालनी शुरू कर दी। कभी वह अपने पति से उसकी बेटी के बारे में खराब बातें कहती।

पति ने यह सोच कर कि यह तो स्वाभाविक है पहले तो ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। बजाय इसके कि उसका प्यार अपनी बेटी की तरफ कम होता जैसा कि उसकी पत्नी चाहती थी इस बात ने उसे अपनी बेटी की ज़्यादा परवाह करने पर मजबूर कर दिया।

पत्नी ने देखा कि अब तो उसका पति अपनी बेटी की और ज़्यादा अच्छी देखभाल करता है। इससे वह खुश नहीं थी। इस बात ने उसका दिमाग इस तरफ पलट दिया कि किस तरह से, कैसे भी, वह इस बच्ची को घर से बाहर निकाल दे। उस स्त्री का दिल इतना खराब हो गया।

अब उसने लड़की पर कड़ी निगाह रखनी शुरू कर दी। एक बार उसने सुबह सवेरे ही लड़की के कमरे में झॉका तो उसे लगा कि उसने लड़की का कोई बहुत ही बड़ा पाप देख लिया जिसे वह उसके पिता को बता सकती थी। बल्कि उससे उस स्त्री ने जो देखा उससे वह स्त्री खुद भी बहुत परेशान थी।

वह भागी भागी पति के पास गयी और अपने झूठे ऑसू पोंछते हुए उससे बोली — "अब मुझे यहॉ से जाने की आज्ञा दीजिये।"

आदमी को उसकी अचानक से यह मॉग सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में ही नहीं आया कि ऐसा क्या मामला हो सकता है जिससे उसकी पत्नी को घर छोड़ कर जाने की जरूरत पड़ गयी।

उसने पूछा — “तुम्हें इस घर में इतना क्या खराब लगा कि तुम अब यहाँ और नहीं रुक सकतीं?”

पत्नी बोली — “नहीं नहीं इसकी वजह तुम नहीं हो। ऐसा तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकती। मैंने कभी तुम्हारा घर छोड़ने की नहीं सोचा।

पर अगर मैं यहाँ रहती रही तो मुझे डर है कि मैं तो यहाँ मर ही जाऊँगी। इसलिये सब बातों को सोच कर अच्छा हो कि तुम मुझे यहाँ से जाने की आज्ञा दे दो।”

कह कर स्त्री ने फिर से रोना शुरू कर दिया। पति बोला — “पर तुम मुझे बताओ तो सही कि हुआ क्या है। तुम्हारी ज़िन्दगी किस तरह से खतरे में है।”

स्त्री बोली — “यह सब मैं तुम्हें इसलिये बता रही हूँ क्योंकि तुम मुझसे पूछ रहे हो। मैं कुछ समय से देख रही हूँ कि वह सुबह और शाम अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लेती है।

मैंने उसमें अन्दर देखा तो देखा कि उसने मेरी सूरत बना रखी है और उसे काले जादू की सहायता से मारने की कोशिश कर रही है।

वह मुझे रोज ही बुरी बातें कहती है। अब यहाँ रहना मेरे लिये सुरक्षित नहीं है। इस वजह से मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ। अब हम दोनों एक ही घर में नहीं रह सकते।”

पति ने यह भयानक कहानी सुनी पर वह अपनी बेटी के इस भयानक काम को करने पर विश्वास नहीं कर सका। वह इस

लोकप्रिय अन्धविश्वास को जानता था कि कोई भी आदमी दूसरे आदमी की तस्वीर बना कर और उसे रोज बुरा कह कर धीमी मौत दे सकता था पर उसकी यह समझ में नहीं आया कि इस लड़की के पास यह ताकत कहाँ से आयी। यह तो असम्भव था।

लेकिन फिर भी उसने भी देखा था कि अब उसकी बेटी अपने आपको सबसे अलग रखती थी और अपने कमरे में अपने आपको ज़्यादा देर बन्द रखती थी। खास कर के जब जब घर में कोई आता था।

इस बात को अपनी पत्नी की बात से जोड़ कर उसने सोचा कि शायद इस कहानी का कोई अजीब कारण हो।

अब वह दो झूलों में झूल रहा था। एक तो अपनी पत्नी के ऊपर अविश्वास पर और दूसरे अपनी बेटी के विश्वास पर। वह नहीं जानता था कि इस दशा में वह क्या करे। उसने पहले अपनी बेटी के पास जा कर उससे सच जानने का निश्चय किया।

पहले तो उसने अपनी पत्नी को तसल्ली दी कि उसका डर बिल्कुल आधारहीन था और फिर वह तुरन्त ही अपनी बेटी के पास चला गया।

लड़की पहले से ही दुखी थी। वह अपनी पूरी कोशिश करती थी कि वह सबका कहना माने ताकि वह अपनी नयी माँ को खुश रख सके और घर में शान्ति रहे। वह इस धारणा को भी तोड़ना

चाहती थी जो अक्सर लोगों के दिल में होती थी कि सौतेली माँ और सौतेली बेटी में नहीं पटती।

पर उसे जल्दी ही पता चल गया कि उसकी यह कोशिश बेकार है। उसकी सौतेली माँ कभी उस पर भरोसा नहीं करती थी। वह उसके हर काम में कोई न कोई कमी निकालती रहती। उसे यह भी मालूम था कि वह उसकी झूठी कहानियाँ उसके पिता से कहती।

वह हमेशा ही अपने आज के दिन एक साल से कुछ ही दिन ज़्यादा वाले उन दिनों से तुलना करती थी जब उसकी अपनी माँ ज़िन्दा थी। इतने कम समय में समय कितना बदल गया था।

सुबह शाम वह उसे याद कर कर के रोती रहती। सुबह शाम वह अपने कमरे में जाती और परदा लगा कर शीशा निकाल कर उसमें अपनी माँ की शक्ल देख देख कर रोती रहती। केवल यही एक चीज़ थी जो उसे इन बुरे दिनों में तसल्ली देती थी।

उसके पिता ने उसे इसी हालत में देखा। परदा खिसका कर उसने देखा कि वह किसी चीज़ पर झुकी हुई है और उसे बड़े ध्यान से देख रही है।

लड़की ने पीछे मुड़ कर देखा कि उसको कमरे में कौन था तो अपने पिता को वहाँ देख कर उसे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि सामान्य रूप से तो जब उसके पिता को उससे बात करनी होती थी तो वह उसे बुलवा भेजता था न कि वह उसके कमरे में आता था।

इसके अलावा वह इस बात पर भी परेशान थी कि वह शीशा देखते हुए पकड़ी गयी थी क्योंकि उसने अपनी माँ के इस आखिरी वायदे के बारे में उसने कभी किसी से नहीं कहा था। यह उसने अपने दिल में ही छिपा कर रखा था। सो पिता से बात करने से पहले उसने वह शीशा अपनी लम्बी आस्तीन में छिपा लिया था।

बेटी को परेशान देख कर और उसे कोई चीज़ छिपाते देख कर पिता ने उससे कड़ी आवाज में कहा — "बेटी। तुम यहाँ क्या कर रही हो और वह क्या है जिसे तुमने अपनी आस्तीन में छिपा लिया?"

लड़की पिता की कड़ी आवाज से डर गयी। इतनी ऊँची आवाज में तो उसने उससे पहले कभी बात नहीं की थी। उसकी परेशानी संकोच में बदल गयी। उसके चेहरे का रंग लाल से सफेद पड़ गया।

वह गूँगी सी बेशरम सी बैठी रह गयी। कोई जवाब भी नहीं दे सकी।

हालात उसके खिलाफ थे। लड़की दोषी थी। पिता ने यह सोचते हुए कि शायद उसकी पत्नी ठीक कह रही थी उससे गुस्से से कहा — "इसका मतलब यह है कि तुम अपनी सौतेली माँ को रोज ही कुछ बुरा कहती रही हो।

तुम्हें याद नहीं कि मैंने तुमसे क्या कहा था कि हालाँकि वह तुम्हारी सौतेली माँ है पर फिर भी तुम्हें उसके प्रति नम्र और आज्ञाकारी रहना चाहिये।

किस बुरी आत्मा ने तुम्हारे दिल में घर कर लिया है कि तुम इतनी नीच हो गयीं। सचमुच में तुम बहुत बदल गयी हो। मेरी बच्ची किसने तुम्हें ऐसा बना दिया कि तुम अब कहना नहीं मानतीं।"

इतना कह कर पिता की आँखों में यह सोच कर अचानक आँसू भर आये कि उसे अपनी बेटी को इस तरह डाँटना पड़ा।

उधर लड़की को यह पता ही नहीं था कि उसके पिता का इस सबसे क्या मतलब था क्योंकि उसने किसी भी ऐसे अन्धविश्वास के बारे में अब तक नहीं सुना था जिसमें किसी मूर्ति पूजा से दूसरे की मौत सम्भव हो।

पर उसने समझ लिया था कि अब उसे साफ साफ बोलना चाहिये और इस तरह अपनी सफाई दे देनी चाहिये। वह अपने पिता को बहुत प्यार करती थी और उसे गुस्सा नहीं देख सकती थी। उसने अपने हाथ उसके घुटनों पर रखे और बोली —

"पिता जी। आप ऐसी बातें मुझसे न कहें। मैं अभी भी आपकी आज्ञाकारी बेटी हूँ। मै ठीक कह रही हूँ। मैं कितनी भी बड़ी बेवकूफ क्यों न होऊँ पर मैं किसी ऐसे को शाप नहीं दे सकती

जिससे आपका सम्बन्ध जुड़ा हो। उसकी मौत के बारे में तो सोच भी नहीं सकती जिसे आप प्यार करते हों।

मुझे पूरा विश्वास कि किसी ने आपसे झूठ कहा है और आप उसके बहकावे में आ गये हैं। आपको यह भी पता नहीं चल रहा कि आप क्या कह रहे हैं। या फिर किसी बुरी आत्मा ने आपके दिल में घर कर लिया है।

जहाँ तक मेरा सवाल है मैं तो एक ओस की बूँद के बराबर भी उस बुरी बात के बारे में नहीं जानती जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं।"

पर पिता को यह भी याद था कि उसे कमरे में आया देख कर उसकी बेटी ने कुछ छिपा लिया था। उसके इस काम से भी वह सन्तुष्ट नहीं था। वह हमेशा के लिये अपने शक दूर करना चाहता था।

उसने पूछा — "तब फिर तुम आजकल अपने कमरे में अकेली क्यों बैठी रहती हो। और बताओ मुझे कि तुमने अपनी आस्तीन में क्या छिपाया था।"

तब बेटी ने शरमा कर यह स्वीकार करते हुए कि उसे अपनी माँ की कितनी याद आती है सोचा कि अब उसे पिता को साफ साफ बता ही देना चाहिये।

उसने अपनी आस्तीन में से शीशा निकाला और पिता के सामने रख दिया और कहा — "यही वह चीज़ है जिसमें आपने मुझे देखते हुए देखा था।"

"क्या।" पिता ने आश्चर्य से कहा "क्या तुम इसे देख रही थीं? यह तो शीशा है जो मैं तुम्हारी माँ के लिये बहुत साल पहले लाया था जब मैं अपने काम से राजधानी गया था। तुमने इसे इतने सालों से सँभाल कर रखा है। पर तुम इस शीशे के सामने अपना इतना सारा समय क्यों खर्च करती हो?"

तब उसने अपने पिता को अपनी माँ के आखिरी शब्द बताये कि कैसे उसने अपनी बच्ची से वायदा किया था कि जब भी वह उससे मिलना चाहे तो उस शीशे में देख ले।

पर अभी भी पिता को अपनी बेटी का सादगीपन समझ में नहीं आया कि वह यह बात अभी तक समझ ही नहीं पायी कि उस शीशे में केवल उसका अपना चेहरा ही दिखायी देता था उसकी माँ का नहीं।

उसने पूछा — "यह कहने का तुम्हारा क्या मतलब है। मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि तुम अपनी मरी हुई माँ का चेहरा इस शीशे में कैसे देख सकती हो।"

लड़की बोली — "पर पिता जी यह सच है। अगर आपको मेरा विश्वास नहीं होता तो आप खुद देख लीजिये।" कह कर उसने शीशे की चमकदार सतह अपने सामने रख ली जिसमें उसका सुन्दर

चेहरा चमक रहा था और अपनी परछाईं की तरफ इशारा कर दिया।

उसने बड़े भोलेपन से पूछा "क्या आपको अभी भी कोई सन्देह है?"

अचानक ही जैसे उसकी समझ में सब आ गया हो ऐसा सोच कर पिता ने दोनों हाथों से एक ताली बजायी और बोला — "ओह। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। अब मेरी समझ में आया। तुम्हारा चेहरा बिल्कुल तुम्हारी माँ की तरह है तरबूज के दो हिस्सों की तरह।

यह सोच कर कि तुम इस शीशे में अपनी माँ का चेहरा देख रही हो तुम सारे समय अपना ही चेहरा देखती रहीं। तुम तो सचमुच में ही एक वफादार बच्ची हो।

पहली बार में तो यह सुनने में एक बेवकूफी लगती है पर सचमुच में ऐसा नहीं है। इससे यह झलकता है कि तुम कितनी पवित्र हो और तुम दिल से कितनी भोली हो।

क्योंकि तुम बराबर अपनी मरी हुई माँ को याद करती रहीं इसलिये तुममें उसका चरित्र आ गया। वह कितनी होशियार थी जो उसने तुमसे यह कहा। मेरी बच्ची मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ और तुम्हारी इज़्ज़त करता हूँ।

मुझे यह कहते हुए बहुत शरम आती है कि एक पल के लिये तो मैंने तुम्हारी सौतेली माँ की कहानी पर विश्वास कर लिया और

तुम पर शक किया। मैं तुम्हें डॉटने के इरादे से यहॉ आया था जबकि तुम इस सारे समय अच्छी और सच्ची रहीं।

अब मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है बस अब तुम मुझे माफ कर दो।"

इतना कह कर पिता रो पड़ा। उसको लगा कि उसकी बच्ची बेचारी आपने आप को कितना अकेला महसूस कर रही होगी। और इसके ऊपर वह अपनी सौतेली मॉ का बुरा व्यवहार भी सहन कर रही थी।

उसको ऐसे वातावरण में अपनी बेटी का विश्वास और सादगी धैर्य और शान्ति रखे देख कर कमल के फूल की याद आ गयी जो तालाबों और खाइयों की कीचड़ में सुन्दरता और शान के साथ खिलता है। और एक ऐसे दिल को दर्शाता है जो दुनियॉ में से गुजरते हुए भी उससे अछूता रहता है।

उधर सौतेली मॉ इस बात को जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि पिता अपनी बेटी के कमरे में इतनी देर तक क्या कर रहा है। उसकी उत्सुकता बढ़ गयी और सरकने वाले परदे को धीरे से थोड़ा सा वहॉ तक धकेला जहॉ से वह सब कुछ देख सकती थी।

इसी समय वह अचानक ही अपनी सौतेली बेटी के कमरे में घुसी और चटाई पर झुकते हुए उसने अपनी सौतेली बेटी के सामने सिर झुका दिया।

हकलाते हुए वह बोली — “मैं बहुत शरमिन्दा हूँ। मैं बहुत शरमिन्दा हूँ। मुझे नहीं मालूम था कि तुम कितनी प्यारी बच्ची हो। हालाँकि तुम्हारा कोई दोष नहीं था पर तुम्हारी सौतेली माँ होने की वजह से मैंने ही तुम्हें हमेशा नापसन्द किया।

क्योंकि मैं तुम्हें नापसन्द करती थी सो उसी वजह से मैंने सोचा कि शायद तुम भी मुझे नापसन्द करती होगी। सो जब मैंने तुम्हें कई बार अपने कमरे में जाते देखा तो मैं तुम्हारे पीछे पीछे गयी और इस शीशे में बहुत देर तक देखते देखा तो मुझे लगा कि तुमको यह पता चल गया है कि मैं तुम्हें नापसन्द करती हूँ। इसलिये तुम बदला लेने के लिये काले जादू से मुझे मारना चाहती हो।

जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगी मैं अपनी इस गलती को कभी नहीं भूलूँगी जो मैंने तुम्हारे साथ तुम्हें गलत समझ कर की है और तुम्हारे पिता के दिल में तुम्हारे लिये शक पैदा कर के की है।

आज से मैं तुम्हारे बारे में अपना दिल बिल्कुल साफ करती हूँ और अपनी इस गलती के लिये पछताती रहूँगी। आज से मैं तुम्हें अपने बच्चे की तरह से रखूँगी जैसे मैंने ही तुम्हें जन्म दिया हो।

मैं अबसे तुम्हें दिल से प्यार करूँगी और इस तरह से मैंने तुम्हारे जीवन में जो कड़वाहट अब तक भरी है उसे मिठास में बदलने की कोशिश करूँगी। इसलिये अब तुम पुरानी बातों को भूल जाओ और मुझे भी उसी तरह से प्यार करो जिस तरह से तुम अपनी माँ को प्यार करती थीं।”

इस तरह से उस बेरहम सौतेली माँ ने अपनी सौतेली बेटी से अपनी गलती की क्षमा माँगी।

उस लड़की के विचार इतने अच्छे थे कि उसने तुरन्त ही अपनी सौतेली माँ को क्षमा कर दिया और फिर वह कभी भी उसके बारे में कोई भी बुरा विचार अपने मन में नहीं लायी।

पिता ने भी देखा कि उसकी पत्नी वास्तव में अपनी करनी पर पछता रही थी। उसे यह देख कर बड़ा सन्तोष मिला कि गलत करने वाले और जिसके साथ गलत हो रहा था उन दोनों के बीच फैसला हो गया था।

इसके बाद तीनों उतनी ही हँसी खुशी से रहने लगे जितने कि एक तालाब में मछलियाँ रहती हैं। अब उस घर पर किसी बुरी चीज़ की छाया नहीं थी।

धीरे धीरे लड़की अपनी सौतेली माँ के प्यार में अपने इस दुखी समय को भूल गयी। आखिर उसको उसके धैर्य और अच्छाई का फल मिल ही गया था।

List of Tales of "Folktales of Japan"

1. Two Frogs
2. Mega Herb
3. Plum Tree
4. The Foolish Monkey and the Crab
5. Momotaro or Little Peachling
6. Kintaro or the Wild Child
7. The Tongue-cut Sparrow
8. The Envious Neighbor
9. The Flute
10. Green Willow
11. The Magical Kettle
12. How Tanooki Got Punished
13. Slaying of Tanooki
14. Issun Boshi or One Inch Sanurai
15. The Stone Cutter
16. Visu the Woodsman and an Old Priest
17. Urashima
18. The Story of Urashima Taro, the Fisher Lad
19. The Mirror of Matsuyama

Sources of Japanese Folktales

Books

Ancient Tales and Folklore of Japan. By Richard Gordon Smith. A&C Black. 1908.
Child Life in Japan and Japanese Child-stories. By M Chaplin Ayrton.
London: Griffith and Farran. 1879. 7 Tales
Green Willow and Other Japanese Tales. By Grace James. Macmillan. 1912.
38 Tales
In Ghostly Japan. By Lafcadio Hearn. Boston: Little, Brown. 1899
Japanese Fairy Tales. By Yei Theodora Ozaki. Grossett & Dunlap. 1908. 22 Tales
Japanese Fairy World : Stories from the Wonder-Lore of Japan.
By William Elliot Griffis. Schenectady: James H. Barhyte, 1880.
Myths and Legends of Japan. By F Hadland Davis. London : George G Harrap.
1912
Old-World Japan: Legends of the Land of the Gods. Retold by Frank Rinder,
London: George Allen, 1895.
Tales of Old Japan. By AB Mitford. 2 Vols. London : Macmillan. 1871.
Tales of Old Japan. By AB Mitford. London : Macmillan. 1890. 25 Tales

Web Sites

https://www.worldoftales.com/Japanese_folktales.html#gsc.tab=0
https://sites.pitt.edu/~dash/japan.html
https://sites.pitt.edu/~dash/japantales.html
https://fairytalez.com/region/japanese/
https://www.tsunagujapan.com/10-classic-japanese-stories/
https://web-japan.org/kidsweb/folk/
https://wanderwisdom.com/travel-destinations/7-Japanese-Folklore-Stories
https://flipjapanguide.com/japanese-folktales/
(Folklores, Folktales, and fairy Tales from Japan)

Asian Folktales Under "Classic Books of Folktales Seies"
Translated in Hindi by Sushma Gupta (Available from hindifolktales@gmail.com)

INDIA
4. Folktales of Bengal/ Lal Behari Dey/ 1889/ (22 Tales)
10. Tales of the Punjab/ Steel/ 1894/ (43 Tales)
11. Folk-Tales Kashmir/ Knowles/ 1887/ (4 Vols, 64 tales)
19. Tales of the Sun/ Kingscote/ 1890/ (26 Tales)
22. Deccan Nursery Tales/ Charles Augustus Kincaid / 1914/ (20 Tales)
23. Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends/ Mary Frere/ 1868/ (24 Tales)
24. Tales of Four Dervesh/ Amir Khusro/ early 14th century/ (5 Tales)
29. Shuk Saptati/ Tr by B Hale Wortham/ 1911/ (60 Tales out of 72 Tales)
31. Romantic Tales of the Panjab/ Charles Swynnerton/ 1903/ (7 Tales)
32. Indian Nights' Entertainment/ Charles Swynnerton/ 1892/ (2 Vols, 82 Tales)
34. Indian Antiquary/ 1872
35. Short Tales of Punjab/ Charles Swynnerton/ 1884/

ORIENT
16. Folktales and Legends : Orient/ Tibbits / 1889 / (13 Tales)
17. The Oriental Story Book/ Wilhelm Hauff/ 1855/ 7 Tales
25. Adventures of Hatim Tai/ Duncan Forbes/ 1830/ 330p

RUSSIA
5. Russian Folktales/ Afanasief/ 1916/ (3 Vols, 73 Tales)
6. Folktales From the Russian/ Verra Blumenthal/ 1903/ (9 Tales)
26. Russian Garland/ Robert Steele/ 1916 (tales from 1830s)/ (17 Tales)
36. Cossack Fairy Tales (Ukraine)/ 1894/ (27 Tales)

Collected Folktales of Asian Countries/ translated by Sushma Gupta
Available from hindifolktales@gmail.com

Folktales of Arabians
Folktales of Asia. (36 Tales. 248 p)
Folktales of China (25 Tales. 196 p)
Folktales of China – Myths (2 Vols. 38 Tales)
Folktales of India. (3 Vols. 60 Tales)
Folktales of Japan (19 Tales)
Folktales of Russia. (2 Vols. 36 Tales)
Baba Yaga of Russia. (16 Tales. 202 p)
Folktales of Ukraine. (27 Tales)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022